Prabha प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

JULY 2020 I Issue 16

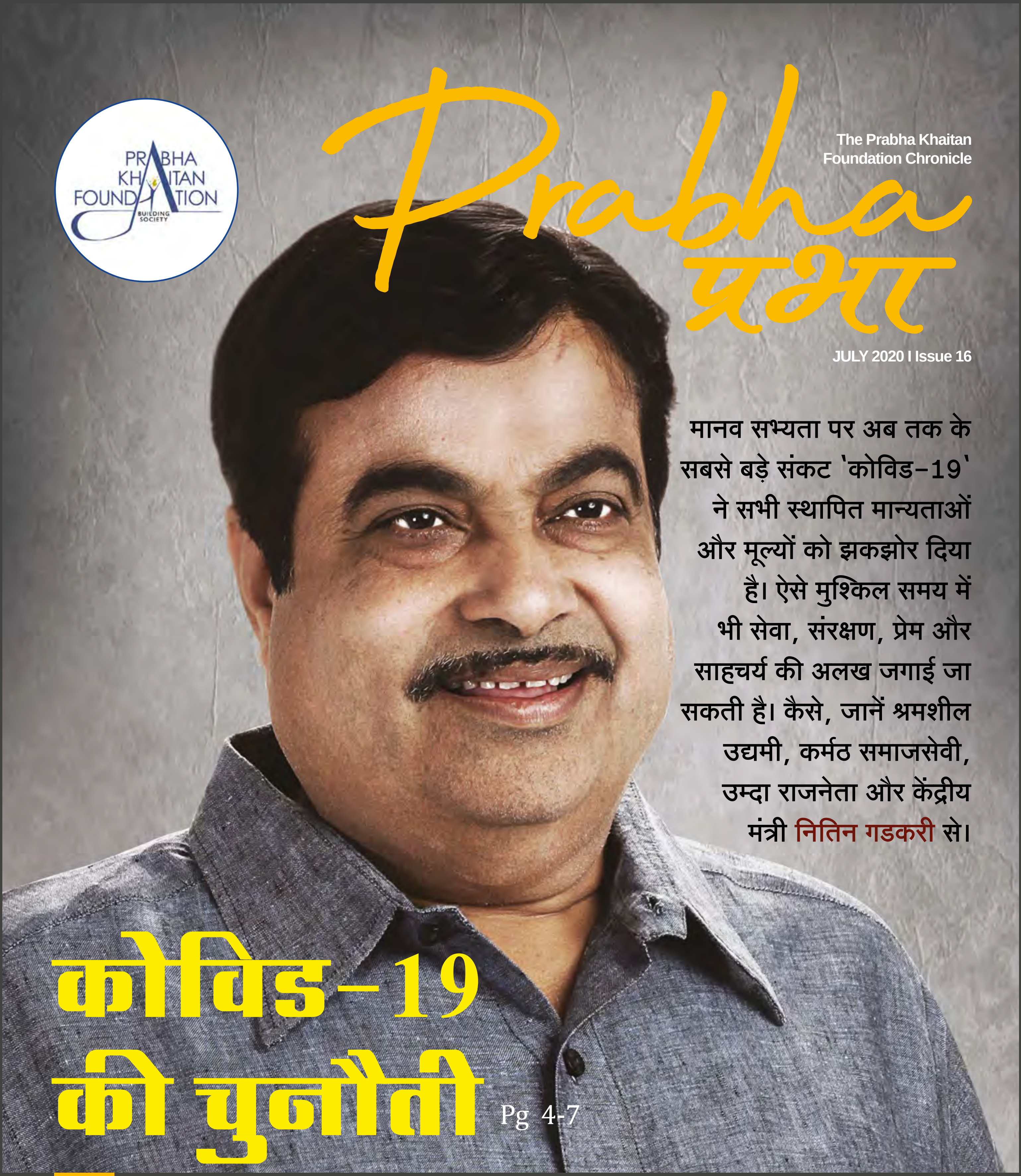

मानव सभ्यता पर अब तक के सबसे बड़े संकट 'कोविड-19' ने सभी स्थापित मान्यताओं और मूल्यों को झकझोर दिया है। ऐसे मुश्किल समय में भी सेवा, संरक्षण, प्रेम और साहचर्य की अलख जगाई जा सकती है। कैसे, जानें श्रमशील उद्यमी, कर्मठ समाजसेवी, उम्दा राजनेता और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से।

कोविड-19 की चुनौती

Pg 4-7

INSIDE

HEALTH HAVEN 10

SOUL OF SHABANA 16

THE LOVE OF DANCE 46

THE TRUTH OF MARX 48

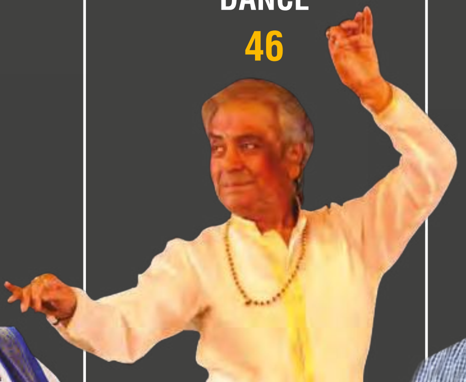

INSIDE

RAJASTHANI TETE-A-TEA 20

AMISH UNPLUGGED 22

UNDERSTANDING INDIA 26

A MAN OF MANY TALENTS 28

THE TRUTH ABOUT POLITICS 32

THE ACCIDENTAL WRITER 36

MAGICAL MUDGAL 38

WOMEN AND THE EPICS 40

MYTHICAL TALES 42

THE YOUNG AND THE MIGHTY 52

Prabha प्रभा

PRABHA KHAITAN FOUNDATION BUILDING SOCIETY

MANISHA JAIN
Communications & Branding Chief,
Prabha Khaitan Foundation

Variety of Words and Value of Wisdom

We at **Prabha Khaitan Foundation** are overwhelmed by the astounding response that is pouring in for our new digital version of the Newsletter. Once again, you can read about the sessions and also view the entire talk just with a simple click of the red 'play' button on the pages. This feature is available for the digital version that is available on our website and for the PDFs sent across.

Our initiatives involved a host of personalities from different walks of life — politicians to health gurus, legendary musicians to Bollywood celebrities, poets to activists — covering a variety of topics reflected in this edition of the Newsletter. Our cover article features a closed-door session of our **Ehsaas** Women with Honourable Minister Nitin Gadkari, who inspired and motivated us with his encouraging words.

Looming large is the terrible economic impact of COVID-19. The folk musicians, artisans and craftsmen have been among the hardest hit. **Prabha Khaitan Foundation** is trying to do its bit for them in these trying times. We have initiated a new vertical — **Lockdown Live** — a series of online events in the states of West Bengal, Punjab, Bihar, Gujarat and Rajasthan, where an artiste performs "live" and the Foundation provides an honorarium in appreciation of their talent. There have been about 250 such sessions already. This initiative and these sessions will be covered in a special edition of the Newsletter.

Meanwhile, the meaning of freedom is changing in the post-COVID-19 world. Our next edition of the Newsletter will highlight couplets, paintings, words and much more from our **Ehsaas** Women and their take on 'Freedom'.

As always, your feedback and support have been the fundamental force behind this chronicle. You may write to us at newsletter@pkfoundation.org with your thoughts and views. We hope to have your continued patronage and participation. To get more updates, you can follow us on Facebook, Instagram and Twitter. Meanwhile, stay healthy and stay safe.

Happy reading!

SNAPSHOT OF THE MONTH

Throwback to Education For All Programmes

Sharmila Tagore at the Education For All website launch

Ehsaas Woman of Kolkata Dona Ganguly and Biman Bose at a textbook distribution drive by Education For All

Happy Birthday

Prabha WISHES **EHSAAS** WOMEN BORN IN AUGUST

1st August

Kalpana Chaudhary

8th August

Huma Khalil Mirza

12th August

Anantmala Potdar

22nd August

Dona Ganguly

23rd August

Ina Puri

27th August

Aakriti Periwal

"सेवा से बढ़ कर कोई सोच नहीं, हम कोविड-19 से भी जीतेंगे": प्रभा खेतान फाउंडेशन से संबद्ध महिलाओं से चर्चा के दौरान नितिन गडकरी

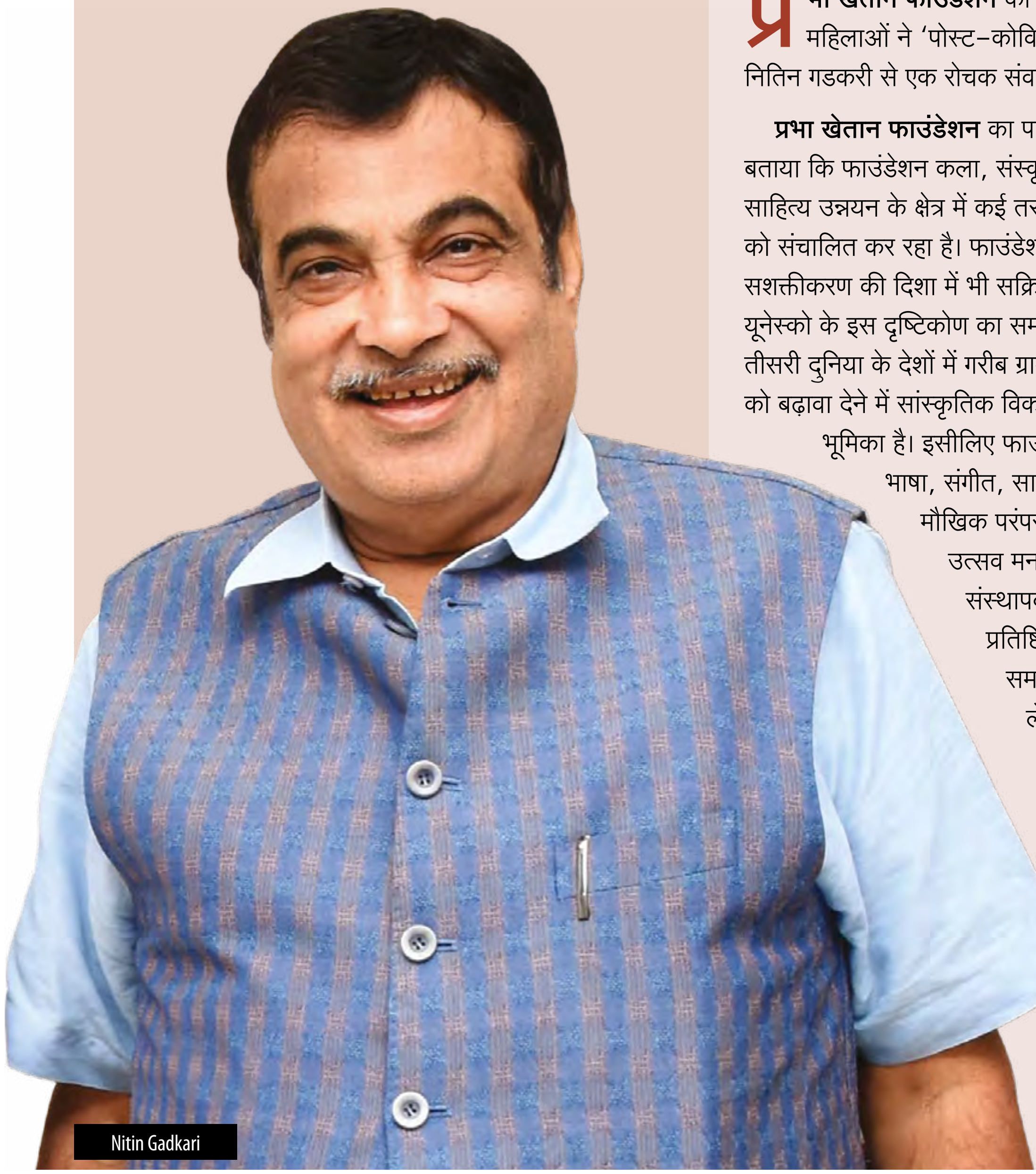

Nitin Gadkari

प्रभा खेतान फाउंडेशन की **अहसास** वूमेन से जुड़ी चुनिंदा महिलाओं ने 'पोस्ट-कोविड चैलेंजेज' विषय पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी से एक रोचक संवाद किया।

प्रभा खेतान फाउंडेशन का परिचय देते हुए अपरा कुच्छल ने बताया कि फाउंडेशन कला, संस्कृति, शिक्षा, वन्यजीव संरक्षण और साहित्य उन्नयन के क्षेत्र में कई तरह के कार्यक्रमों और गतिविधियों को संचालित कर रहा है। फाउंडेशन लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी सक्रिय है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** यूनेस्को के इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि दुनिया, विशेषकर तीसरी दुनिया के देशों में गरीब ग्रामीण समुदायों के सतत विकास को बढ़ावा देने में सांस्कृतिक विकास की एक प्रभावी वैकल्पिक भूमिका है। इसीलिए फाउंडेशन अपनी बहुविध संस्कृति, भाषा, संगीत, साहित्य, दृश्य कला, नृत्य, नाटक, मौखिक परंपराओं और पारंपरिक प्रथाओं का उत्सव मनाता है। कुच्छल ने कहा, "हमारी संस्थापक डॉक्टर प्रभा खेतान एक लब्ध प्रतिष्ठित उद्यमी, स्वप्नदर्शी, परोपकारी, समाजसेवी, नारीवादी चिंतक और लेखिका थीं। वह नारी सशक्तीकरण की दिशा में सक्रिय रूप से प्रयासरत थीं। उनका लक्ष्य सुनहरे कल का निर्माण करना था। वह 'कर्म ही जीवन है' के मूलमंत्र को मानती थीं, जो हमें आज भी प्रेरणा देता है।" उन्होंने **प्रभा खेतान**

Apra Kuchhal

फाउंडेशन द्वारा कराए जा रहे कार्यक्रमों और गतिविधियों का विस्तृत परिचय दिया।

केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का विस्तृत परिचय नागपुर **अहसास** वूमेन से जुड़ी मोनिका भगवागर ने दिया। उन्होंने संवाद के दौरान गडकरी की कई खूबियों का जिक्र किया, जिनमें उनके जीवन के विविध पहलू सामने आए। एक युवा नेता, श्रमशील उद्यमी, दूरदर्शी व्यवसायी, एक बेहतर इंसान और उच्चकोटि के समाजसेवी। गडकरी ने कानून व बिज़नेस मैनेजमेंट की पढ़ाई की है। महज 23 साल की उम्र में वह भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष बने। गडकरी 1995-99 तक महाराष्ट्र सरकार में लोक निर्माण मंत्री बने। उनकी छवि एक प्रयोगधर्मी मंत्री के तौर पर है। जल प्रबंधन, सौर उर्जा, कचरा प्रबंधन या कृषि क्षेत्र, वह हर उस क्षेत्र में नए प्रयोग के हिमायती हैं, जिससे समाज, देश और नागरिकों का भला हो।

भगवागर ने गडकरी के परिचय के साथ ही आज के दौर के सबसे ज्वलंत विषय 'वर्तमान आर्थिक हालात' पर उनके विचार जानने चाहे। गडकरी का कहना था, "पूरी दुनिया कोविड-19 के कठिनाई भरे संकट से ग्रस्त है। भारत भी इस समस्या से जूझ रहा है। चारों तरफ लोगों में एक भय, तनाव, हताशा और नकारात्मकता का वातावरण है। ऐसे में हमें लोगों के दिलोदिमाग पर सकारात्मकता कायम करने की कोशिश करनी चाहिए। सकारात्मकता के लिए हमें आत्मविश्वास की जरूरत है।"

उन्होंने 1947 से पहले और बाद के दौर की चुनौतियों और उससे बाहर निकलने के साहस का जिक्र करते हुए कहा, "हमें यह सकारात्मक भाव लाना है कि हम कोविड-19 के इस युद्ध से सौ प्रतिशत पार पा जाएंगे।" उन्होंने चेताया कि निराशा और नकारात्मकता कई तरह की समस्याओं को जन्म देती है। अगर हम मुंबई से लोगों के पटना और लखनऊ वापस लौटने को देखें तो ऐसा केवल डर के चलते हुआ, जो कि अच्छी स्थिति नहीं है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि कोविड-19 की एक और चुनौती अर्थव्यवस्था से जुड़ी है। उन्होंने कहा कि आज अधिकतम समस्या महिलाओं को झेलनी पड़ रही हैं। फाउंडेशन के सदस्यों से अपील करते हुए गडकरी ने कहा, "बतौर सामाजिक कार्यकर्ता हमारी, आप सबकी जिम्मेदारी है कि हम लोगों में आत्मविश्वास कायम करें।" सामाजिक कार्यकर्ता की परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा कि सामाजिक कार्यकर्ता वह व्यक्ति है जो समाज सेवा के लिए प्रतिबद्ध हो। समाजसेवा – सामाजिक विवेक, सामाजिक जागरूकता, सामाजिक दायित्व इन तीन महत्त्वपूर्ण सोच पर टिकी है। फाउंडेशन भी नारी उद्यमियों के माध्यम से महिला सशक्तीकरण की दिशा में जागरुकता, नवोन्मेष, नये प्रशिक्षण, नए अवसर मुहैया कराकर यही काम कर रहा है।

Monica Bhagwagar

अर्थव्यवस्था को महत्त्वपूर्ण विषय बताते हुए गडकरी ने स्वामी विवेकानंद के इस चर्चित वक्तव्य का उल्लेख किया कि कोई भी ऐसा दर्शन नहीं है, जिसे पेट के अंदर रखकर बात की जा सके। प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत की व्याख्या करते हुए गडकरी ने कहा, "आत्मनिर्भर का अर्थ है भारत गरीबी से, भूखमरी से मुक्त हो। इसके लिए हमें रोजगार क्षमता बढ़ानी होगी। बिना रोजगार क्षमता बढ़ाए, हम गरीबी को हटा नहीं

सकते। नारी सशक्तीकरण का सीधा संबंध आर्थिक मजबूती से है। इसलिए हर महिला उद्यमी, समाजसेवी को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए।"

उन्होंने कहा कि इस कठिन समय में हमें ऐसे आर्थिक अवसर मुहैया कराने होंगे, जिससे अधिक से अधिक रोजगार पैदा हो सकें। उन्होंने आश्वस्त किया कि **प्रभा खेतान फाउंडेशन** इस दिशा में जो भी काम करेगा सरकार के स्तर पर मैं इस दिशा में मदद करूंगा। उन्होंने गरीबों के लिए आश्रय स्थल बनाने का सुझाव भी दिया। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविता *कदम मिलाकर चलना होगा, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती* और *हम होंगे कामयाब एक दिन* जैसी सकारात्मक कविताओं का भी जिक्र किया। इस सवाल पर कि महिला उद्यमियों के लिए आपकी क्या नीतियां हैं? गडकरी ने ढेर सारी योजनाओं का जिक्र किया और भरोसा दिलाया कि "अगर कहीं भी समस्या है, तो हमसे संपर्क करिए। मैं उसका समाधान करूंगा।"

आत्मनिर्भर भारत में कला और संस्कृति की चर्चा पर गडकरी का कहना था, "कला एक जुनून है। कोई भी पूर्ण नहीं है और कोई भी पूर्णता का दावा नहीं कर सकता।" उन्होंने कहा, "उत्तम, अधिउत्तम और सर्वोत्तम की सोच अनंत है। कोई भी अपनी छाया को पकड़ नहीं सकता। इसलिए प्रबोधन, प्रशिक्षण, शोध और विकास के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में काम होता रहना चाहिए।" उन्होंने उजबेकिस्तान की चर्चा की। उनका सुझाव था, "योग और व्यायाम, आयुर्वेद, संगीत, वाद्य यंत्र, गायन, नृत्यकला आदि की साधना में भी हमें रोजगार के अवसर भी देखने चाहिए।" उनका कहना था कि हर व्यक्ति में कुछ न कुछ हुनर होता है। हुनर को निखारना एक कला है। गडकरी ने कहा, "सहयोग, समन्वय और संवाद, प्रबंधन के लिए बहुत जरूरी है। गांधी जी कहते थे, ज्यादा से ज्यादा लोगों के सहयोग से हमें उत्पादन करना है। हर व्यक्ति को रोटी, कपड़ा और मकान कैसे मिले, वह कैसे आत्मनिर्भर हो, अपने पैरों पर खड़ा हो इसकी भी हम कोशिश करें। साथ ही भय, भूख, आतंक और भ्रष्टाचार से मुक्त सुखी, समृद्ध, संपन्न, शक्तिशाली भारत का निर्माण हो, जहां निर्यात बढ़े, आयात कम हो, और अर्थ व्यवस्था मजबूत हो, यही आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना है।"

> **"पूरी दुनिया कोविड-19 के कठिनाई भरे संकट से ग्रस्त है। भारत भी इस समस्या से जूझ रहा है। चारों तरफ लोगों में एक भय, तनाव, हताशा और नकारात्मकता का वातावरण है। ऐसे में हमें लोगों के दिलोदिमाग पर सकारात्मकता कायम करने की कोशिश करनी चाहिए। सकारात्मकता के लिए हमें आत्मविश्वास की जरूरत है"**

युवा गडकरी ने खेती से शुरुआत की थी। फिर वह व्यवसाय की तरफ झुके। सहकारिता की तरफ भी बढ़े। उनका जीवन कई तरह के उतार-चढ़ाव से भरा हुआ है। एक सफल उद्यमी, राजनेता की यह यात्रा लोगों के लिए काफी प्रेरणादायक है। गडकरी ने छात्र राजनीति के अपने अनुभव सुनाए। गडकरी का कहना था, "मैं व्यवसायी नहीं बल्कि सामाजिक उद्यमी हूं। मेरा प्रयास निर्माण है। मैं कृषि, सड़क निर्माण के क्षेत्र में रहा। किसान आत्महत्या करने लगे, तो मैं इस क्षेत्र में आया। शिक्षा, क्रीड़ा महोत्सव, सांस्कृतिक महोत्सव, कला महोत्सव के क्षेत्र में भी मैं काम करता रहता हूं। मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ा हूं, जहां एक बात हमें हमेशा याद रहती है, 'मनसा सततम् स्मरणीयम्, वचसा सततम् वदनीयम्, लोकहितम् मम करणीयम् ', हम लोगों की सेवा करते रहें, काम करते रहें। पहले हमें अपने परिवार की जरूरत पूरी करनी चाहिए और फिर हमें समाज के शोषित, पीड़ित लोगों की मदद करनी चाहिए, जिसमें बेहद आनंद आता है।"

परिवहन मंत्री के रूप में अपने एक फैसले का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, "मैं आदमी द्वारा आदमी को खींचने की प्रथा को हटाने के उद्देश्य से ई-रिक्शा लाया।" उनका कहना था कि अगर कोई बूंद तय करे कि वह सागर में नहीं जाएगी, तो वह सागर नहीं बन सकती, पर असंख्य बूंदों से सागर बन सकता है। "हमारी यही संकल्पना है।" उन्होंने स्वीकारा, "राजनीति मेरा स्वभाव नहीं है। मेरा मानना है कि राजकारण को राष्ट्रकारण, समाज कारण और विकास कारण मानना चाहिए। राजनीति को पूर्वोत्तर नीति, लोक नीति और धर्मनीति के रूप में मानना चाहिए। समाज सेवा करना है। स्वास्थ्य, शिक्षा, समाजसेवा के क्षेत्र में इसे करना चाहिए।" उन्होंने यह माना कि राजनीति अब पॉवर पॉलिटिक्स बन गई है, पर महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस भी राजनीति में थे। उनकी राजनीति वह नहीं थी, जो आज है। राजनीति में सेवा, विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा का विकास ही सब कुछ है।

अपने निजी जीवन का जिक्र करते हुए गडकरी ने कहा, "मेरी मां भी सामाजिक कार्यकर्ता थीं। चुनाव जीतना मेरा लक्ष्य नहीं है। जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा से ऊपर उठकर लोग मेरे साथ आते रहे। समाज में अभी भी अच्छाई है।" गडकरी ने यह स्वीकार किया कि कविता, संगीत, साहित्य और संस्कृति में उनकी रुचि है। यह उनका जुनून है। उन्होंने सांस्कृतिक आस्था, इतिहास, संस्कृति

A disarming and extremely humble personality, who is grounded, motivating and a deeply committed leader. An extremely invigorating session that was worth every second. Thank you **Prabha Khaitan Foundation**.

— Neelima Dalmia Adhar

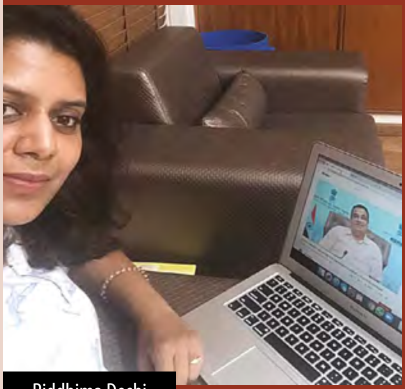

Riddhima Doshi

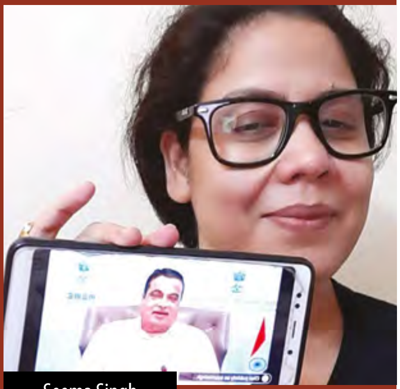

Seema Singh

It was great to understand the new initiatives the Government of India is taking under the vision of Nitin Gadkari*ji* to uplift the MSMEs and truly make India an entrepreneurial hub. Thanks to **Prabha Khaitan Foundation** for allowing us to connect with our leaders and enhance our learning during this extended stay-at-home period.

— Aakriti Periwal

और विरासत को देश की ताकत बताया। उनका कहना था कि शिक्षा पर होने वाला खर्च भविष्य निर्माण के लिए निवेश है। सरकार की अपनी मर्यादा है। हम निजी स्तर पर प्रयास कर रहे हैं। हमारा समन्वित प्रयास गुणात्मक परिवर्तन करेगा। इसकी गति बढ़ेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। सूचना और संचार तकनीकी के क्षेत्र में संभावनाओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कोविड-19 के दौर में मैं पच्चीस करोड़ लोगों तक पहुंच चुका हूं। देश के अलावा अमेरिका और यूरोप में हर तरह के समूह से मिल चुका हूं। शिक्षा में डिजिटल टेक्नॉलॉजी का उपयोग हो रहा है। इसका प्रयोग करके आत्मनिर्भर भारत की तरफ कदम बढ़ाया जा सकता है। गडकरी कहा, "ज्ञान ही शक्ति है। उसे ग्रहण करने के लिए तकनीक का बहुत उपयोग है। पर हमें यह याद रखना होगा कि हमारे व्यक्तिगत संबंध पर तकनीक का असर न हो। हमें मिलते जुलते रहना होगा। जीवन में यह जरूरी है कि कौन सी चीज किस मात्रा में रहे, इसकी मर्यादा बनी रहे।" गडकरी ने कहा कि मैं अक्सर यह बात करता हूं कि समाज में कुछ लोग ऐसे हैं जो समस्या में समाधान ढूंढ लेते हैं, तो कुछ लोग समाधान में भी समस्या पैदा कर देते हैं।

Poonam Anand

पर हमें बुराई में अच्छाई को तलाशना होगा। ओटीपीपी प्लेटफार्म पर भी अच्छाई-बुराई से हमें ऐसे ही निबटना चाहिए। संस्कृति, कला, हुनर को विकसित करना होगा। *चरैवेती, चरैवेती* के मंत्र से हमें काम करते रहना चाहिए। **अहसास** वूमेन, **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से अपरा कुच्छल ने गडकरी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

Female Sexuality: from *Kamasutra* to Modern World

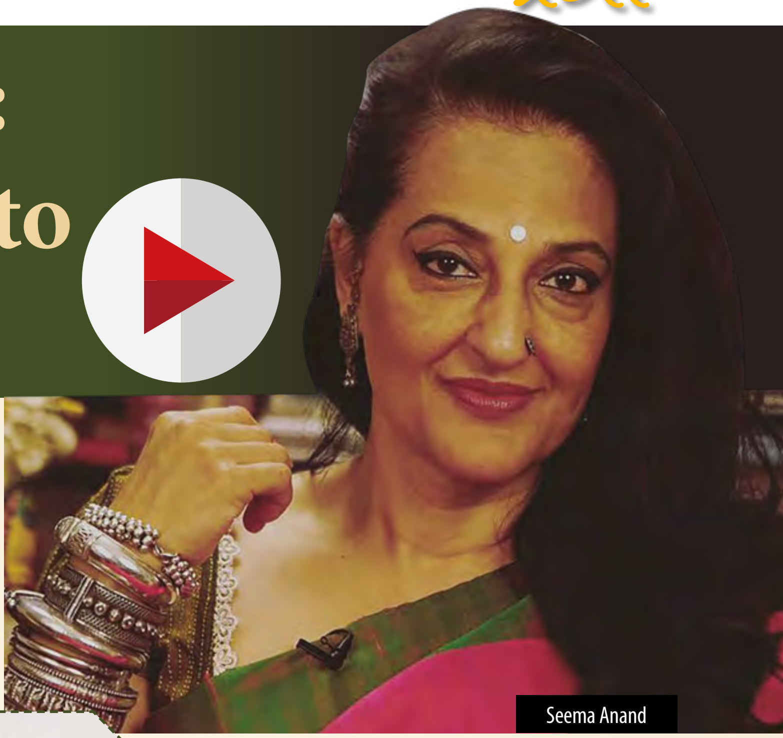

Seema Anand

Female sexuality in a patriarchal society, the ancient Indian and colonial narrative and empowerment of women through literature were the focus of a virtual conversation between mythologist-author Seema Anand and UK-based Women and LGBT Rights activist Simran Roy for **The Write Circle** Raipur.

"Ancient Indian culture, literature and poetry celebrated all aspects of love and pleasure," Anand said as she spoke about the profound understanding of empowered female sexuality in ancient India, as seen in *Kamasutra*, where all aspects of feminine sensuality and pleasure have been celebrated.

Simran Roy

The UK-based author pointed towards 2,000 years of classical Sanskrit literature or Prakrit literature where the *prabhandams* carried the essence of sexual metaphors. However, with the passage of time, the societal definition of a "good woman" has been maligned and altered to fit patriarchal narratives, further aggravated by the advent of colonialism and the onset of Christianity, which viewed promiscuity and female sexuality as sins, she said.

The Indian mentality now finds itself in a twilight zone, lamented Anand, so that classical Indian texts are missing from the country's education system, the author said.

The author spoke about Draupadi, gender fluidity, transgender relationships and her interpretation of *Kamasutra*. She stressed that sex should not be viewed as an act to demean women, but rather as an expression of equality, integrity, pleasure. Sex should be the sanctity of bonding, rather than ownership of property in the shape of a woman's body, she said.

The session ended with a thank-you note from **Ehsaas** Woman Shrishti Trivedi.

The Write Circle Raipur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Hyatt Raipur and Ehsaas Women of Raipur

Shrishti Trivedi

Kalpana Chaudhary

Nalini Mehra

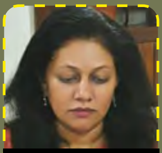

Kirti Kirdatt

Aanchal Garcha

It was a brilliant and eye-opening session of **The Write Circle** with author Seema Anand!

— Harkaran Singh, General Manager, Hyatt Raipur

It's necessary to talk about female sexuality openly and more so with the younger generation to help them understand the true meaning of love and the pleasure arising from it. I am feeling so much more powerful about myself and my body and this session has worked to increase my respect towards my body and my desires.

— Simrann Verma

Listening to Seema Anand was an absolute delight! Her knowledge of the Indian traditions is humongous and exhaustive. It's so wonderful to listen to esoteric individuals who are willing to impart their unique wisdom. I can't thank **Prabha Khaitan Foundation**, and particularly Shrishti Trivedi. Thank you for inviting me.

— Rohit Shadija

"मेरा लेखन सामंतवादी सोच के खिलाफ": कलम अमृतसर में अनु सिंह चौधरी

Anu Singh Choudhary

Jasmeet Nayyar

Reena Kundra

पंजाब के पवित्र शहर अमृतसर में इस दिन शाम के चार बजे चटकीली धूप खिली थी। मौसम गर्म था, पर शब्दों से प्यार करने वाले इससे बेपरवाह थे। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से ऑन लाइन आयोजित **कलम** अमृतसर में साहित्य प्रेमियों की गर्मजोशी उफान पर थी। आमंत्रित अतिथि थीं लेखिका अनु सिंह चौधरी। **अहसास** वूमेन ऑफ अमृतसर की जसमीत नैय्यर ने फाउंडेशन द्वारा '**अपनी भाषा, अपने लोग**' अभियान के तहत आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की चर्चा की और बताया कि चौधरी लेखिका, अनुवादक और फिल्म मेकर हैं। बीस से भी अधिक अंग्रेजी किताबों का हिंदी अनुवाद किया है। कई पुरस्कार प्राप्त डाक्यूमेंट्री और वेब सीरीज का लेखन और निर्देशन किया है। हाल ही में आयी वेब सीरीज *आर्या* की वह संयुक्त लेखिका हैं, जिसमें सुष्मिता सेन ने अभिनय किया है। आगे की वार्ता कैम्ब्रिज जूनियर स्कूल अमृतसर की प्राचार्या, नाट्यकर्मी रीना कुंद्रा ने किया।

कुंद्रा ने चौधरी से पहला सवाल उनकी लेखकीय यात्रा पर किया? चौधरी का जवाब था, "मैं खुशकिस्मत थी कि मुझे ऐसे मौके मिले, जहां मेरे काम, मेहनत व लेखन को पहचान मिली। प्रेरणा और सृजनात्मकता सिर्फ उन्हीं लोगों के पास टिकती है, जो मेहनत करता है। प्रयोगधर्मिता के बिना प्रतिभा का उपयोग नहीं हो सकता। हर कोई लिख नहीं सकता, हर कोई कलाकार नहीं हो सकता, हर कोई नाटक नहीं कर सकता। इसका सकारात्मक पहलू यही है कि आप कभी भी, और कहीं से भी अपनी यात्रा शुरू कर सकते हैं।"

मुंबई के अपने शुरुआती दिनों की चर्चा करते हुए चौधरी ने बताया, "उन दिनों मैं अपने एक दोस्त के यहां रुकी थी। फोन होते नहीं थे। इंटरनेट के लिए साइबर कैफे जाना होता था। ऐसे ही एक दिन जब मैं कैफे जा रही थी, तो बगल के दफ्तर में एक जाने-पहचाने चेहरे को जाते हुए देखा। मैंने देखा वह दीपक तिजोरी थे। मैं उनके पास गई और सीधे कहा कि सर मैं काम करना चाहती हूं। लिखना चाहती हूं। उन्होंने अपने सहयोगी से मुझे ऑफिस का पता दिलवाया और अगले ही दिन मैं वहां पहुंच गयी। मुझे काम मिल गया। इस तरह शुरुआत तो हो गई, पर ईमानदारी से कहूं तो आगे का सफर इतना आसान नहीं रहा। मेरे सहयोगी अच्छे थे।" बॉलीवुड के माहौल पर चौधरी की टिप्पणी थी, "मैं अपने अनुभवों से कह सकती हूं कि यह ठीक है कि बॉलीवुड में पुरुषों का वर्चस्व है, पर मेरे पास कोई सनसनी फैलाने वाली कहानी नहीं है।"

"मैंने अखबार, टीवी से लेकर हर मीडियम के लिए लिखा है। *आर्या* की बात करूं तो उसे सभी ने देखा है, पर यह सुष्मिता सेन के चलते हुआ। हमने जो भी लिखा वह सुष्मिता सेन के लिए लिखा। मेरी लेखकीय पहचान पर मुझे संतोष है। हम इसी तरह अपने को व्यक्त कर पाते हैं। बतौर लेखक यह एक उपलब्धि है कि आपने किसी को हौसला दिया है, किसी को मनोरंजन दिया है, किसी को खुशी दी है, किसी को आपने प्रेरणा दी है। किसी को जानकारी दी।" अपनी पुस्तक *नीला स्कार्फ़* पर चौधरी का कहना था, "मैंने कविता से जोड़ने की कोशिश की। आखिर दुपट्टा क्या है? यह वह कपड़ा नहीं है, जिसकी हमें आवश्यकता है, बल्कि यह एक एक्ससरी है। पर फिर भी इसकी हमें जरूरत है। यह एक पहचान सरीखा है। मेरा पसंदीदा रंग नीला है, इसलिए मैंने उसे प्रतीक के रूप में चुना।" चौधरी का कहना था, "बिहार से दिल्ली में आकर रहनेवाली लड़कियों पर बहुत सारी किताबें आई थीं, पर यह सभी पुरुषों के नजरिए से लिखी गई थी। मैंने दिल्ली युनिवर्सिटी में छोटे शहरों से आई लड़कियों के नजरिए से लिखा। इसमें बहुत शोध करना पड़ा। अफसोस यह है कि बीस साल पहले की स्थितियां अब भी जस की तस हैं।"

आर्या पर चौधरी का कहना था, "इसमें बहुत मेहनत लगी। यह बहुत मुश्किल था। पर हमारी टीम बहुत अनुभवी और अच्छे लोगों की थी। मेरे को-राइटर बहुत अनुभवी लेखक हैं। मेरे निर्देशक भी बहुत अच्छे थे। यह एक उम्दा अनुभव था। एक फ्रेम में, टाइम में बंधकर लिखने का क्राफ्ट मैंने सीखा।" *नीला स्कार्फ़* की सबसे अच्छी कहानी कौन सी है? पर उनका कहना था, "मेरी सारी कहानियां बहुत अच्छी हैं। पर *मुक्ति* और *नीला स्कार्फ़* काफी अच्छी कहानियां हैं। अलगाव और संबंधों की कहानियां लिखना इतना आसान नहीं है। रिश्ते का अबोलापन बहुत खतरनाक है।" *बिसेसर बो की प्रेमिका* कहानी की चर्चा करते हुए चौधरी ने यह माना कि मेरी बेचैनी पितृसत्तात्मक सत्ता के खिलाफ है। जमींदार परिवार, सामंती व्यवस्था किस तरह औरतों के खिलाफ है, इसे ऐसे समझिए कि औरत या तो सजावट की चीज है या फिर फंक्शनल चीज है। एक सवाल के जवाब में चौधरी ने यह माना कि रचनात्मक लेखन और व्यावसायिक लेखन में बहुत अंतर है। रचनात्मक लेखन तन्हाइयों में होता है, उसकी कोई समय सीमा नहीं है, जबकि स्क्रीन राइटिंग काफी टेक्निकल काम है। एक क्राफ्ट है।

इस सवाल पर कि नई पीढ़ी को अगर इस क्षेत्र में आना है तो वह क्या करे? चौधरी का जवाब था कि उसे केवल पढ़ना होगा। सीखना होगा। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता भी है, पर अवसर भी बहुत है। पर यह आपके अंदर से आना चाहिए। यह केवल पेशा नहीं है। निर्भया जैसे केस पर चौधरी का कहना था, "मैंने अपने बच्चों को एक पत्र लिखा था। वे उस समय बहुत छोटे थे। पर मेरी कोशिश थी कि वे एक औरत की मनःस्थिति को समझ सकें। जहां तक पटकथा लेखन की बात है, अगर आपके पास योग्यता है तो मौके हैं। पर इसके लिए आपके पास टिकने की क्षमता है।" अंत में चौधरी ने शेयर्ड नरेटिव यानी 'संवाद की साझीदारी' पर बल दिया और कहा कि लगातार ऐसे संवाद होते रहने चाहिए।

सवाल जवाब के सत्र में वेदुला रमालक्ष्मी, डॉ शेली जग्गी, मालविंदर कौर, इंदु अरोड़ा, किरण खन्ना आदि ने शिरकत की। जसमीत नैय्यर ने आभार प्रकट किया। **कलम** अमृतसर के प्रायोजक थे श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर ताज स्वर्ण अमृतसर और मीडिया पार्टनर *दैनिक जागरण* थे। **अहसास** वूमेन अमृतसर से जुड़ी जसमीत नैय्यर, प्रणीत बब्बर, प्रीति गिल, रमनजीत ग्रोवर, शीतल खन्ना और सोनाक्षी कुंद्रा ने सक्रिय भागीदारी निभायी।

Kalam Amritsar is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Taj Swarna and Ehsaas Women of Amritsar*

The Health Code: Eat, Pray, Love

Luke Coutinho

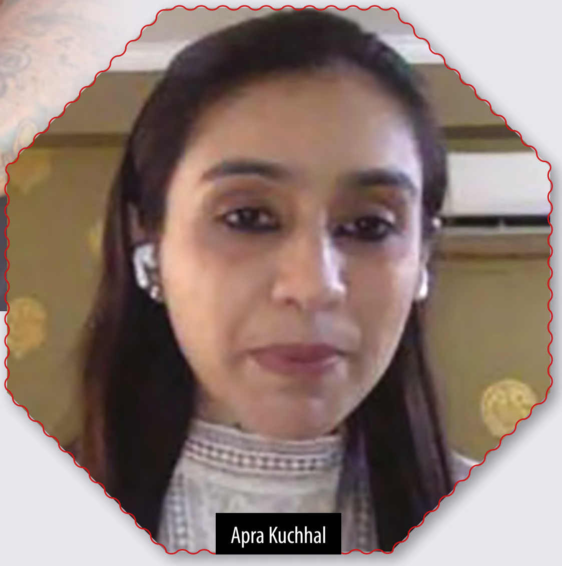

Apra Kuchhal

Immunity has been the buzzword ever since the COVID-19 pandemic broke out and what better time than this to pick up some advice from a health guru on how lifestyle changes can keep you fit and fine.

Health coach Luke Coutinho launched his digital book, *The Magic Immunity Pill: Lifestyle,* at **Kitaab** in a multi-city virtual event presented by **Prabha Khaitan Foundation**. The e-book is available free of cost.

Coutinho spoke about the harmful effects of stress and how a healthy lifestyle is key to achieving a healthy immune system during a chat with Apra Kuchhal, honorary convener, Rajasthan and central India affairs of the Foundation.

The health coach began by stating how immunity has always been fundamental to human life but that the concept of immunity needed a change.

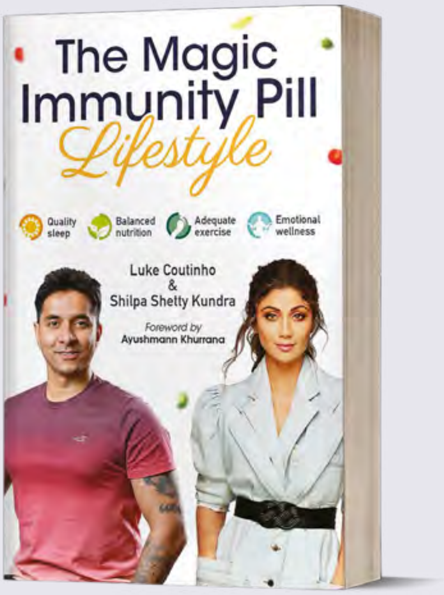

It was such an inspiring session. Health is the harmony of body, mind, and spirit. I learned that to be healthy, we don't need any external motivation. Motivation has to come from within. I am happy how the session focused on stress and mental wellbeing as it is the need of the hour.

— **Sonakshi Kundra**

It was a pleasure to hear Luke talk about immunity and lifestyle. His message of keeping life simple resonated with me.

— **Vinit Uppal**

Nidhi Samra

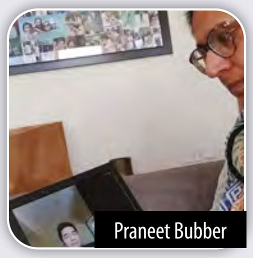
Praneet Bubber

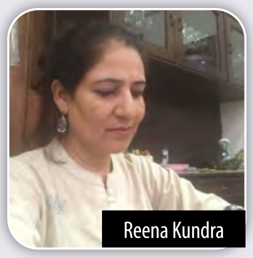
Reena Kundra

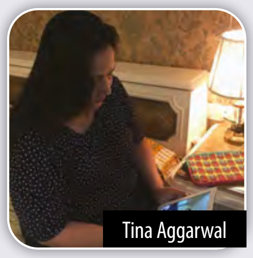
Tina Aggarwal

Amritsar

Sheetal Khanna

Deepta Puar

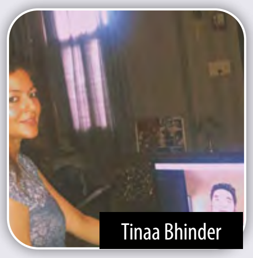
Tinaa Bhinder

Jasmeet Nayyar

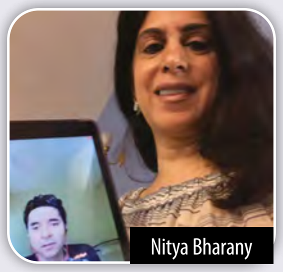
Nitya Bharany

Archana Dalmia

Delhi

One of the most impactful wellness gurus shared his pearls of wisdom with us under the banner of **Prabha Khaitan Foundation**. His simplicity and simple and doable bio-hacks are priceless.

— **Neelima Dalmia Adhar**

Thank you for the wonderful session with Luke Coutinho! I learned so many things today.

— **Mrinali Luthra**

The Magic Immunity Pill: Lifestyle, co-authored by actress and fitness enthusiast Shilpa Shetty, enlightens readers about immunity in the present context.

Coutinho's advice — a balanced diet, adequate exercise, quality sleep and emotional detox tailored to individual body types can work wonders for health, coupled with sufficient and invigorating food. Over-exercise, however, is as harmful as lack of physical activity. Unsupervised fitness regimes can cause irreversible harm to the body. Ample sleep and mental equilibrium are essential, too.

Coutinho went on to emphasise that self-medication may prove disastrous.

He underlined the body's need for Vitamin D and said that instead of waiting for a virus to teach us caution, it is vital to take vitamin supplements to avoid or correct deficit.

Dealing with stress is a personal choice. Channelling stress and fear to one's advantage to make the most of situations is of essence.

Wonderful session! Thank you **Kalam, Kitaab** and **Prabha Khaitan Foundation**!

— **Vinita Jain**

Ajmer

Poonam Pandey

Kolkata

Thank you, I really enjoyed the talk. And I have downloaded the book as well!

— **Sujata John B. Khan**

Thank you for the health guidance. It was a lovely session.

— **Anjana Jalan**

Thanks for a great session. You are a pro now, Apra!

— **Sangeeta Datta**

This was a good event. Enjoyed it very much!

— **Nayantara Pal Chaudhury**

Jaipur

Awesome and frank session. Apra was very good as always... crisp and to the point.

— **Neeru Saluja**

His information on healing the gut and its connection to a healthy life was amazing.

— **Jayshree Periwal**

Minul Roy

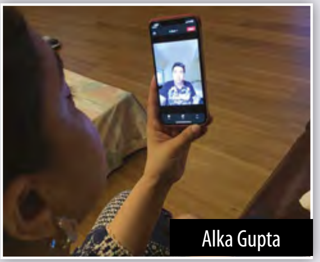
Alka Gupta

Priyanka Kothari

Monica Bhagwagar

Parveen Tuli

Jyoti Kapoor

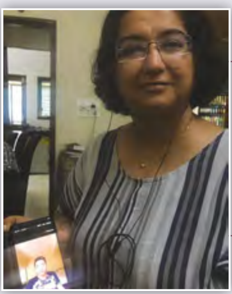

It was a really meaningful session!

— **Hetal Sampat**

Important to be grounded within — this was the biggest lifestyle takeaway for today.

— **Shruti Sharma**

Mumbai

Thank you for organising such an amazing session. Thank you **PKF** for organising and bringing together people from all walks of life. Kudos.

— **Karishma Mehta**

Nagpur

I find Luke to be the most simple, realistic, practical and intelligent dietitian, with a scientific explanation for all that he advises.

— **Sonia Khurana**

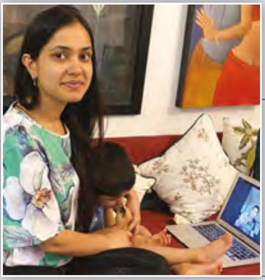

Ahmedabad

Pooja Agarwal

Jodhpur

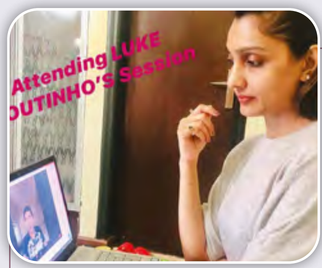

A healthy mind dwells in a healthy body. All of us have heard this multiple times but not many have rightly understood its importance. The session with Luke Coutinho was a treat for people who believe in a healthy lifestyle and an eye-opener for people who feel a healthy lifestyle is only for celebrities. Luke emphasised that it is all about leading a simple life to be healthy and happy. My heartfelt thanks to **Ehsaas** and **Prabha Khaitan Foundation**.

— Prerna Maheshwari

It was a pleasure to be part of this session as I have been following Luke Coutinho for seven years now. His talk on the combination of immunity and prayer was special. Congratulations **Prabha Khaitan Foundation** for the refreshing session.

— Vidhi Shah

Preeti Mehta

Shelja Singh

Bhubaneswar

Being a big fan and follower of Luke Coutinho, the session and the e-book were great gifts during the pandemic. His knowledge and wisdom are immense and the session was very informative.

— Vasudha Garg

For senior citizens and kids, it is most important to understand how to build immunity. I will read his book and try out the recipes. Thank you for hosting such an amazing session.

— Rakesh Garg

Informative session with great tips. Emotions definitely affect our body.

— Pallab Das

Vedula Ramalakshmi

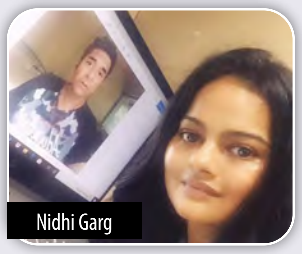
Nidhi Garg

Coutinho advised a positive outlook and meditation. Coutinho suggested that people must start working on themselves and seek help, when needed, to be a happier person.

Coutinho stressed that our inward gaze can free us from the lure of things that are outside of ourselves, along with its materialistic worldview. The media, too, should play a more responsible and positive role, and help spread awareness about better upkeep of health.

Parents should remain positive as they tend to unknowingly pass on stress, anxiety and depression to children through words, gestures and actions. Children, in turn, learn from their parents and pick up traits. It is essential for them to learn to be comfortable in a family unit, and to handle the stress that comes their way in real life.

Children also pick up dietary habits from elders. The diet of both adults and children is the same in many ways, only the portions differ. Limiting choices helps inculcate suitable eating habits and promotes a balanced diet.

The lifestyle coach and author of the hugely successful *The Great Indian Diet*, his first collaboration with Shetty, said stress and sleep deprivation lead to an unhealthy system and create havoc on a person's being.

Agra

What a fabulous session! I follow Luke very religiously but hearing him in person made by day!

— Shweta Bansal

I truly enjoyed Luke's talk about forgiveness. Stress and an unforgiving nature can only lead to destruction.

— Vinti Kathuria

Super amazing to hear him talk about the inner connection, building immunity with exercise, sleep and also about managing kids and emotions during these times!

— Divya Bansal

He is so good with his theories and holistic approach towards life! I was thrilled to be a part of the session that made me look at life in a totally different and more healthy way. Can't wait to read his new book.

— Mitali Goel

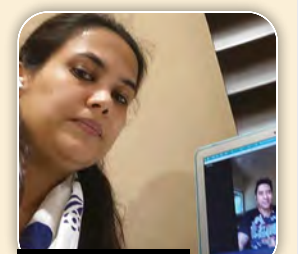

Divya Jain Bansal

Udaipur

It was an eye-opener to have India's Numero Uno health professional making us introspect and retrospect.

— Riddhima Doshi

Raipur

It was a really great session. Coutinho focused on the " Be Grounded" message. Don't be artificial and keep your life and eating habits simple. Thanks a lot **Ehsaas** and **PKF** for this lovely session.

— Shraddha Daga

Great session indeed. In a very simple way, we have been directed towards what constitutes true happiness. A healthy life means a proper balance between four verticals. Everything was so simply explained. I really enjoyed the session. Looking forward to reading the book, thanks a lot!

— Jamila Vanak

A nice session indeed. Exercising definitely has to be a part of our daily routine. And it's so true that a diet that works for one person will not necessarily work for others too. Thus individual diet plans require to be customised.

— Richie Agarwal

Thank you for inviting me. Enjoyed the session although I watched it on the go. What he said was so amazing.

— Sanket Maggu

This is the time to connect to our inner selves. Thank you for the wonderful session.

— Anjali Daga

Aanchal Garcha

Shrishti Trivedi

Kirti Kirdatt

Aaliya Agarwal

Anshu Mehra

Anusha Agarwal

I really appreciate the thoughts shared by Luke Coutinho. His thought that the lockdown has taught us to be satisfied with limited means resonates with me.

— **Aaliya Sarfaraz**

Thank you **Prabha Khaitan Foundation** for this opportunity. I just want you to know that I consider myself really lucky. You make even the most tedious job a lovely learning process. Thank you Luke Coutinho for reaffirming my faith in the basics.

— **Shubhangi Agarwal**

Thank you **Prabha Khaitan Foundation** for this opportunity to hear from the best.

— **Dr Meetu Nehra**

Meerut

Lucknow

Kanak Rekha Chauhan

One must be able to forgive others for one's own good. We must pray with faith, have the belief and surrender.

— **Nupur Singh**

The outside world should not control us, this can only happen when you are connected inside, you know how to control and deal with the outside world.

— **Alka Shukla**

It was a beautiful and invigorating session. The family should always eat together, and children should learn and imbibe the eating habits of their elders. The basics of health should be ingrained like values in us.

— **Poonam Motwani**

Coutinho said suppressed emotions and stress may lead to weight gain or loss, while the modern fast-paced lifestyle needs to be recalibrated to accommodate and address problems such as late nights, excessive smoking, abnormal eating habits and lack of sleep, all of which add up to an unhealthy body and mind.

Coutinho reminded his online audience that prayers are meant to bring peace and solace. A lack of faith and belief in real life increases distress and aggravates anxiety, he said, adding that forgiveness, anger and disease are deeply related.

Health, for Coutinho, is non-negotiable. Depending on motivation or inspiration is not enough, the philosophy of good health should be ingrained in one's nature. But, at the same time, obsessing over a health regime is also not normal and may lead to suppressed mental strain.

"Life works on the fundamentals of simplicity. How good you feel is what matters the most," signed off Coutinho.

Shabana Azmi

The Woman Behind the Actress

Actress, social activist, women's rights champion — Shabana Azmi plays her multiple roles with perfection.

Relaxing in Sukoon, her farmhouse in Khandala, Azmi shared with **Ehsaas** Woman and filmmaker Sangeeta Datta how the lockdown had given her the opportunity to spend time with her family. The actress was in Warsaw for a shoot when the lockdown was declared and the unit had to pack up and return to India.

Azmi admitted that in her 36 years of marriage with poet-lyricist Javed Akhtar, the two had seldom spent time with each other. She pondered over how the confinement had prompted her to re-evaluate her life and made her realise that she could do with much less and give much more.

The actress said creativity flourishes in isolation and the lockdown was a great way to learn new things.

The virtual chat, in collaboration with Baithak UK, spanned Azmi's childhood to her

Sangeeta Datta

Praneet Bubber

Lucknow

Thank you for an invigorating session. It was a mood-lifter. Shabana Azmi remains one of the most intellectual and sensitive personalities in the Hindi film industry. The session yet again asserted her belief in equality for all. My most significant takeaway from the session: We need to live a need-based, not WANT-based, life.

— **Kanak Rekha Chauhan**

Delhi

Anantmala Potdar

Amritsar

Really lovely, enjoyed every minute

— **Preeti Gill**

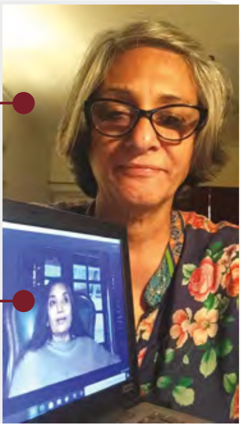

Jodhpur

Sushma Sethia

Udaipur

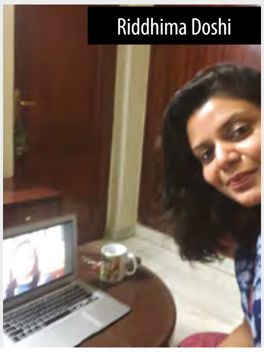

Riddhima Doshi

Nagpur

Monica Bhagwagar

Priyanka Kothari

Ranchi

Poonam Anand

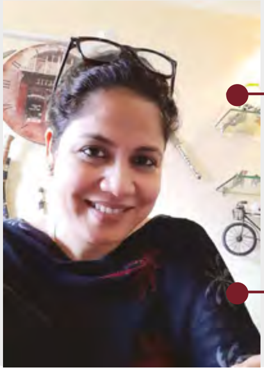

Great session with Shabana Azmi.

— **Seema Singh**

favourite films and the ever-widening gap between haves and have-nots. **Ehsaas** Woman Praneet Bubber welcomed Azmi to the session as Datta joined in from the UK.

The closed-door session began with a brief visual on Azmi's life and works. Talking about her films, Azmi said Mahesh Bhatt's *Arth* and Goutam Ghose's *Paar* were the closest to her heart.

Both the movies not only touched the right chord with the audience but also left a mark on her life. *Arth,* the story of a woman who walks out of her marriage after her husband cheats on her, had created a kind of sisterhood and women began

looking up to Azmi for solutions. *Paar,* on the other hand, reinforced her concern for the working class, who are often exploited.

Azmi spoke about the disparity between classes, especially in India and South East Asia and how the plight of migrant workers during the pandemic was a reflection of society's attitude towards the poor.

Recalling her childhood, Azmi said she grew up in the presence of some extraordinary luminaries from the literary and creative fraternity, who often visited the family home. During the day, Azmi would follow her mother Shaukat Azmi to theatre rehearsals or accompany her father and poet Kaifi Azmi to his party meetings. Many a time, Azmi and her brother would dose off on the bolsters placed on the stage during her father's performances. But the *mushairas*, discussion, smell of tobacco and clinking of glasses created a magical ambience in the house. Azmi's parents considered children to be instruments of change and allowed the siblings to be a part of all occasions.

The concept of family, too, had changed during the lockdown, felt Azmi, as she said her nuclear family had gone back to being a joint family with friends and family living close by.

Azmi's inherent interest in people nurtures her craft and she feels that it's important for an artist to remain connected to one's roots.

The social activist spoke about her work in Mijwan, a village in Uttar Pradesh where Kaifi Azmi was born, trying to improve the lives of women and girls. Kaifi Azmi Theatre in Lucknow is another project close to her heart.

But of her many roles, acting is what she loves the most. "*Sabse zyada khushi deti hain* (It makes me the happiest)," she said. Her advice to aspiring actors — be prepared for the heartbreaks that come with rejection.

Speaking about her experience of working in an international project on Tabish Khair's works, Azmi said it had been novel, but taxing. As she had to record her own renditions, she realised the amount of hard work that the technical team puts in to enhance an actor's strengths and camouflage the shortcomings.

Among her forthcoming films is *Sheer Qorma*, a same-sex love story. The five-time National Award winner was immediately taken in by the script when actress Divya Dutta approached her. She was all praise for chef Vikas Khanna with whom she has been shooting. The actress was overwhelmed by his dedication towards feeding the underprivileged and migrants during the lockdown.

Forever game for a challenge, Azmi had agreed to sing a Bengali song in Aparna Sen's film, *Sonata*, at the director's behest. The actress was left flattered by the appreciation she had received.

Every time I listen to Shabana Azmi, it is with a sense of awe, not just at the magnitude of her personality or talent, but at her infinite wisdom that she expresses with such ease. This time I was struck by stories of her childhood, of growing up in a commune with a collective of eight families united by a sense of shared purpose and political agency. She took me back to the pre-millennium India that I grew up in, proud yet almost unconscious of its pluralism. This conversation was further enhanced by the sparkling intellectual chemistry between Sangeeta Datta and Shabana Azmi.

— **Jonakee Chandra**

Excellent session, thoroughly enjoyed.

— **Rona Bhattacharya**

हमारे लोकगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी संस्कारों के वाहकः आखर में सरोज देवल बीठू

Saroj Bithu

Pramod Sharma

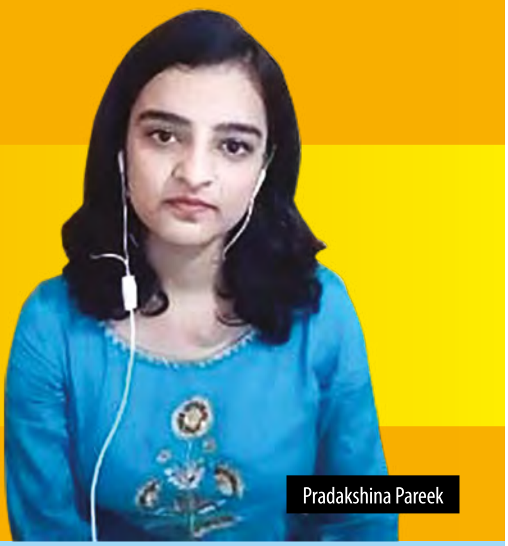
Pradakshina Pareek

राजस्थान की रेतीली माटी में हमारे लोक जीवन और सांस्कृतिक परंपरा के इतने रंग खिले हैं, जिन्हें गिनना सहज नहीं, पर *केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देश* जैसे लोकगीतों में वह राग सहज ही सुनाई दे देता है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** अपनी गतिविधियों से संस्कृति, भाषा, संगीत, साहित्य, दृश्य कला, नृत्य, नाटक, मौखिक परंपराओं और पारंपरिक प्रथाओं का उत्सव मनाता है। **कलम**, **द राइट सर्कल**, **लफ़्ज**, **किताब** और **आखर** उसकी बहुविध गतिविधियों का एक हिस्सा भर हैं। ऐसे दौर में जब कोरोना के चलते इंसानी जिंदगी तमाम उतार-चढ़ाव वाले दौर से गुजर रही है, तब अपने कार्यक्रमों को वर्चुअल कर फाउंडेशन की कोशिश है कि साहित्य, कला व संस्कृति प्रेमी घर बैठे ही सुरक्षा और स्वास्थ्य मानदंडो का पालन करते हुए इन सत्रों का आनंद उठाएं।

इसी क्रम में फाउंडेशन ने **आखर** श्रृंखला के तहत राजस्थानी भाषा की साहित्यकार सरोज देवल बीठू से प्रदक्षिणा पारीक ने चर्चा की। हिंदी और संस्कृत साहित्य से स्नातकोत्तर बीठू हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में लिखती हैं। इस संवाद में बीठू ने राजस्थानी साहित्य, कला व संस्कृति के साथ अपने साहित्यिक सफरनामे पर भी चर्चा की। कार्यक्रम की शुरुआत ही लोकगीत के इतिहास से हुई। बीठू ने कहा, "लोकगीत का प्रचलन वैदिक काल से पूर्व का है। उदाहरण के लिए मनुष्य जब जन्म लेता है तो रूदन उसका संगीत है। इसी तरह भाषा जब नहीं थी, तब के गीत, जो लोक में प्रचलित थे, उनका औपचारिक रूप से प्रादुर्भाव ऋग्वेद में अपना विशिष्ट ग्रहण करता है। लोकगीतों में अनुभवों का निचोड़ है। इनका प्रचार-प्रसार मात्र आनंद पक्ष तक ही सीमित न रहकर जिंदगी के हर पहलू से प्रभावित है, और उन्हें प्रभावित भी करता है।"

बीठू ने कहा, "राजस्थान का आम जनजीवन और लोकगीत आपस में एक-दूसरे के पर्याय हैं। रेगिस्तान में लम्बी यात्राओं पर निकले लोग गीतों के सहारे आराम से सफर तय कर लेते हैं। चड़स से पानी निकालते समय बैलों के पैर रिद्म से चलते और थमते थे। ये लोकगीत ही परिश्रम को सरस बनाते थे। हमारे लोकगीत संस्कार की तरह जन्म से लेकर मृत्यु तक हमसे जुड़े रहते हैं। यहां तक कि बच्चे को पालने में झूला झूलाने के लिए भी गीत बने हैं। विवाह संस्कार में लोकगीतों के माध्यम से मनोवैज्ञानिक बातें भी समझायी जाती हैं। लोकगीत रिश्तों को भी सहेजते हैं।" कई तरह के उदाहरण के साथ बीठू ने बताया कि किस प्रकार लोकगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी संस्कारों के वाहक रहे हैं। घर में बड़े-बजुर्गो, रिश्तेदारों से बच्चे भी सीखते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान बीठू ने *चिठूडी-मिठूडी री गौरी गाय, नवल बना ए डोरडा नी छूटै, म्हारी आंगणिये पीपल री बेल* जैसे गीत भी गाये।

श्री सीमेंट के सौजन्य और ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित यह कार्यक्रम **आखर** राजस्थान के फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारित भी किया गया। याद रहे कि **आखर** श्रृंखला में अब तक डॉ. आईदान सिंह भाटी, डॉ. अरविंद सिंह आशिया, रामस्वरूप किसान, अंबिका दत्त, कमला कमलेश और भंवर सिंह सामौर, डॉ. ज्योतिपुंज, डॉ. शारदा कृष्ण, डॉ. ज़ेबा रशीद, देवकिशन राजपुरोहित, मोहन आलोक, मधु आचार्य, जितेन्द्र निर्मोही, डॉ मंगत बादल, दिनेश पंचाल, मनोहर सिंह राठौड़, पं. लोकनारायण शर्मा, बुलाकी शर्मा, कुंदन माली, बसंती पंवार, आनंद कौर व्यास, किशन लाल वर्मा, तेजसिंह जोधा, डॉ. गजादान चारण जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों साथ चर्चा हो चुकी है।

Aakhar Jaipur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Grassroot Media Foundation and ITC Rajputana

Celebration *of* Rajasthani Literature

Bina Kak

Nand Bhardwaj

A virtual book-reading session and discussion took the audience on a journey through Rajasthani literature.

Bina Kak, former minister and actress, was in conversation with Sahitya Akademi Award-winning Rajasthani and Hindi author Nand Bhardwaj for **Prabha Khaitan Foundation**'s new series **Tete-a-Tea**, which celebrates local, regional literature and personal narratives, co-hosted by Siyahi. Kak read out from the works of Rajasthani writer Vijaydan Detha, alias Bijji, and spoke about her association with the late author.

"It's very different when you are telling a story and writing a story. The writer is invisible while he is writing, but Bijji captured the essence of the lives of women, men and animals, having touched every aspect of the social system in his stories so vividly. Bijji has paid tribute to the lives of women through his stories," Kak said.

> "Bijji captured the essence of the lives of women, men and animals, having touched every aspect of the social system in his stories so vividly. Bijji has paid tribute to the lives of women through his stories"

Mita Kapur

When Kak was in school in Udaipur, her cousin — a teacher at a rural institute — would often read out Detha's stories to her. It was at her swearing-in ceremony as minister that Kak met Detha.

Kak confessed that she was not much of a

Vaidehi Singh

Abhimanyu Singh

Durga Prasad Agarwal

नंद भारद्वाज की विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियों और बीना काक के अत्यंत प्रभावशाली वाचन ने बिज्जी के कथा साहित्य के साथ पूरा न्याय किया. आज का यह कार्यक्रम अविस्मरणीय था. आयोजकों को बधाई!

— Dr Durga Prasad Agarwal

It was a great session. When I was in Jodhpur long ago, I would run into Bijji. I saw him on the street riding his bicycle here and there.

— Subodh Sharma

What a story! She made me cry. The innocence of children touched my heart. What an amazing session!

— Deepak Kalra

बीना जी सू कहजो के थे तोह हस्ता हस्ता ही रूवान दिया। घणो पूट्रो लाग्यो सेशन । टाइम रो ठा ही कोनी पड्यो। तोह मीता जी और बीना जी सू अनुरोध है के ओज्यूँ आज्यो और बेगा आज्यो। सगळा ने घणो घणो प्रेम और शुभकामना।

— Manu Rathod

It was a nice programme with great presentation.

— Amla Batra

Rajasthan Forum Feedback

It was an emotional experience, listening to Bijji's stories. Bijji was a family friend. Bina*ji*'s narration was wonderful, too. I enjoyed the session.

— Ila Arun

What a remarkable session! Both the anchor and the speaker were simply the best! Nand*ji* was excellent.

— Manesha Agarwal

Bina*ji* impressed the audience and proved to be an excellent orator. Many thanks and good wishes to **Prabha Khaitan Foundation**. And congratulations to Nand Bhardwaj*ji* for a remarkably interesting programme.

— Ikram Rajasthani

It was a heart-warming session by Bina*ji* and Nand*ji*. I wish we can attend more such sessions.

— Shakir Ali

It was a pleasantly engaging session. Congratulations, Bina Ma'am!

— Sartaj Mathur

Vinnie Kakkar

reader as a child and it was only later that she became interested in books. But even then politics and household chores kept her busy. The lockdown, however, had given her the opportunity to spend time reading. She even started reading Urdu poetry and also discovered the rich treasure trove of Rajasthani literature.

Talking about her deep love for Rajasthan, Kak shared how she had picked up Rajasthani to be able to speak in the local language in the assembly.

Kak said she has always fallen back on Bijji's stories.

Amish Tripathi

History Revisited, Faith Rediscovered

Writing, for bestselling author Amish Tripathi, is a spiritual experience.

Growing up in a deeply religious family, Amish — like many young adults — had embarked on a journey of atheistic beliefs to build an identity for himself. He was still in college when the author found himself drawn to the invisible entity known as faith.

It was while writing his debut novel, *The Immortals of Meluha*, that Amish's faith was restored. As the words began to flow, he found his muse in his protagonist, Lord Shiva. The transformation led him to believe that every individual engaged in the creative sphere is "channelling a belief".

Amish shared his spiritual journey in a virtual session of **The Write Circle** with **Ehsaas** Woman Neelima Dalmia Adhar.

Neelima Dalmia Adhar

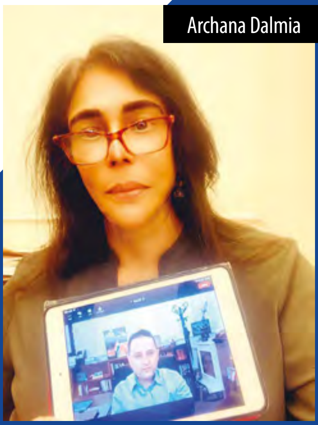
Archana Dalmia

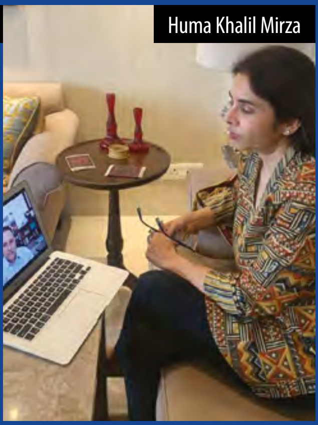
Huma Khalil Mirza

Reema Singh

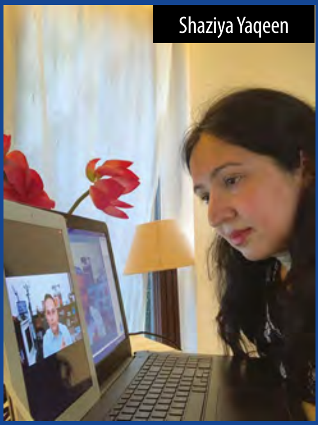
Shaziya Yaqeen

Shazia Ilmi

> The session with **Prabha Khaitan Foundation** was, as expected, very well-organised. I truly enjoyed the interaction with the moderator, Neelima. The questions were incisive and deep, but also polite and warm; a rare combination. I hope to do many more such events in future.
>
> **— Amish Tripathi**

When writing becomes a practice of faith, the author is inclined towards preaching a core philosophy, Amish said while talking about his latest release, *Legend of Suheldev: The King Who Saved India*.

Offering his virtual audience a quick lesson on how history itself should be taught, Amish said he strongly felt that the way historical knowledge is imparted today poisons society and creates dissonance. While it is true that India has had a bloody history, the manner in which it has been categorised is often wrong. For instance, Amish explained, by dubbing the Turkish rule in India as Islamic rule, Indian Muslims are portrayed as carrying out horrific crimes.

Ina Puri

But the Turks were not Indians, they came from Central Asia. Beginning from roughly the 10th century, Turks went around the world, plundering and killing. They arrived on the borders of present-day India with the same expectations, but failed to wreak havoc because of the valiant efforts of King Suhel. The Turks lost to the king's army and yet this saviour's name and this inspiring tale of unity remains hidden in obscurity.

Rediscovering past heroes can often help uplift entire groups of people. Speaking of the one female character in his novel, Amish stressed that the people need to be reminded that supporting champions of women's rights is not surrendering to western ideals but is returning to our truly Indian roots.

The session ended with a few words from **Ehsaas** Woman Ina Puri.

The Write Circle Delhi is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Dineshnandini Ramkrishna Dalmia Foundation and Ehsaas Women of Delhi*

The Write Circle Gurugram is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran *and Ehsaas Women of Gurugram*

Tea, Twitter and *Mahabharat*

Amish Tripathi

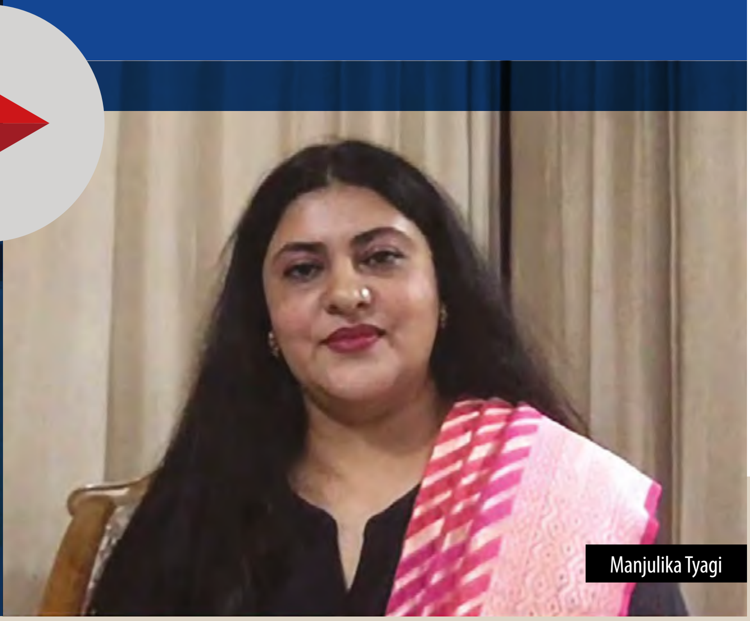

Manjulika Tyagi

Favourite pastime: Scrolling on Twitter. Most prized follower: Prime Minister Narendra Modi. Favourite TV serial: B.R. Chopra's *Mahabharat.* Favourite character: Vidur.

The latest edition of **The Write Circle** saw author Amish Tripathi sharing these nuggets about himself as he engaged in a virtual chat with Manjulika Tyagi, **Ehsaas** Woman of Meerut.

The session began with Shweta Aggarwal, **Ehsaas** Woman of Faridabad, reminding the viewers about the need for virtual meetings during the pandemic. Agarwal went on to introduce the author, who intriguingly writes about Indian culture in English.

Amish was still in a full-time banking job when he wrote the first two books of the *Shiva Trilogy — The Immortals of Meluha* and *The Secret of the Nagas.*

Coming from a middle-class family, Amish had learnt to make choices that would support his family's economic stability. It was only when the royalties from his books crossed his salary that he quit his job and took on full-time writing.

A rapid-fire round revealed the man behind the author — he prefers tea to coffee, enjoys a walk at dawn rather than a stroll in the evening, happily reads books instead of watching web series and picks non-fiction titles more often than fiction.

Amish said he loved browsing through Twitter and if there was one follower he would never want to lose, it would be Prime Minister Narendra Modi. The author confessed that he enjoyed watching B.R. Chopra's television adaption of the *Mahabharat*, and that his favourite character was Vidur.

But, the most surprising revelation of the night was that Tripathi enjoys singing. Tyagi's quick poser: what would be the theme song to your life? After pondering for a few minutes, Tripathi replied, "*Yeh duniya mil bhi jaaye toh kya hain*".

Asked where he would like to spend his life, Amish said, "In India, anywhere in India". And who would he like to pay a visit to in the past, apart from Lord Shiva, of

It takes talent to be successful for sure, but most importantly, it requires virtue. Amish Tripathi has a special place in our hearts.

— Sukriti Kashyap

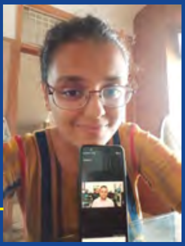

Listening to Amish Tripathi is beyond the ordinary. He begins by deconstructing metaphors and almost simultaneously reconstructs them. He is as interesting in his manner of connecting with the audience as he is with his writing.

— Dr Seema Sharma

It's time that the history curriculum should be rewritten by Amish Tripathi, so that young children can be steered in the right direction.

— Shilpa Aggarwal

Had a great time listening to an author I admire a lot. Loved the way he explained how he sees things and how he explains his creativity in his books. Looking forward to more such sessions!!

— Neelam Jain

Amish Tripathi seems to be a scion among the current Indian fiction writers. His easy language and storytelling are very appealing to the millennials too. Through him they are discovering their roots. The skewed history of our great nation has been demystified by him.

— Dr Shobhit Agarwal

It was an enlightening session and seeing him live was exhilarating. He's such a simple, honest and humble person. Enjoyed every minute of it.

— Manish Jain

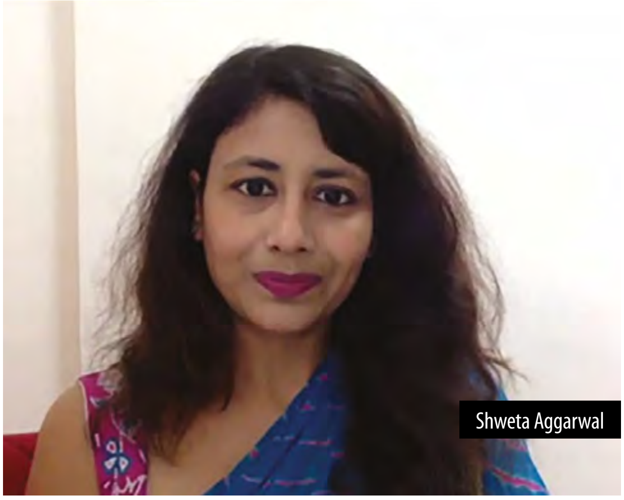

Shweta Aggarwal

Anshu Mehra

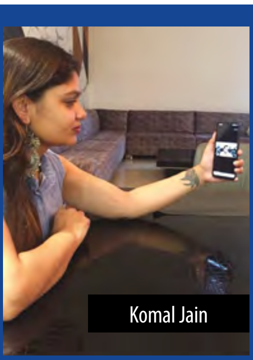

Komal Jain

course? Amish shared that he would be keen on meeting his former wife's father Dr Manoj Vyas, as well as his sister's husband, Himanshu Roy.

Talking about his books, Tripathi said his latest novel, *Legend of Suheldev: The King Who Saved India*, was closely connected to the times we live in. The novel carries a message: Indians cannot be defeated. Whenever we have lost, we have lost to ourselves, Amish said, as he cautioned people against dividing the country.

The event was possible owing to the support of Garima Mittal. The vote of thanks was presented by Anshu Mehra.

The Write Circle Faridabad is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Books Enbeyond and Ehsaas Women of Faridabad*

The Write Circle Meerut is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Crystal Palace and Ehsaas Women of Meerut*

भारत के महान अतीत और विज्ञान में कोई द्वंद्व नहीं: कलम कोलकाता में पवन के. वर्मा

Pavan K. Varma

कलम कोलकाता यानी **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के मुख्यालय पर आयोजित शब्दों का उत्सव। पश्चिम बंगाल की शस्य श्यामला भूमि पर संध्या के समय जब पश्चिम में सूरज अस्त हो रहा था, तब बौद्धिकजनों और भद्र लोगों के बीच **कलम** के आयोजन में विचारों का सूर्य उदित हो रहा था। अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे आईएफएस अधिकारी रहे लेखक पवन के. वर्मा। उनसे बातचीत के लिए मौजूद थे, बिशंभर नेवर। स्वागत निलिशा अग्रवाल ने किया। अग्रवाल ने **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की इस पहल का परिचय देते हुए कहा कि 'अपनी भाषा अपने लोग' वह संचालक मंत्र है, जिससे **कलम** की अवधारणा को आकार मिला। फाउंडेशन अपने साहित्यिक प्रयासों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में अथक प्रयास कर रहा है। इसके बाद उन्होंने आमंत्रित अतिथि लेखक वर्मा का संक्षिप्त परिचय दिया। कई देशों में कूटनीतिज्ञ और विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रहे वर्मा अंग्रेजी में लिखते हैं, पर हिंदी सहित दूसरी भारतीय भाषाओं में भी अनूदित होकर उनकी किताबें उपलब्ध हैं। ऐसी पुस्तकों में *द ग्रेट इंडियन मिडल क्लास, गालिब: द मैन, द टाइम्स, कृष्णा: द प्लेफुल डिवाइन, बीइंग इंडियन, बिकमिंग इंडियन, द न्यू इंडियन मिडल क्लास, व्हेन लॉस इज गेन, श्रीकृष्णा अवतार, आदि शंकराचार्य* और *द ग्रेटेस्ट ऑड टू लॉर्ड रामा* जैसी पुस्तकें शामिल हैं।

Bishambhar Newar

Nilisha Agarwal

नेवर ने वर्मा के इंद्रधनुषी लेखन की वजह जाननी चाही,जिस पर उन्होंने कहा, "मैं भारत की सांस्कृतिक जड़ों को जानने-पहचानने के साथ ही आज क्या हो रहा है, इस पर भी नज़र जमाए रहा। कृष्ण, चाणक्य, राम, गालिब पर लिखने का आशय एक विषय से दूसरे विषय को समझना था। सांस्कृतिक विरासत को खंगालने के दौरान पुस्तकें बनीं।" सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े सवाल पर वर्मा का उत्तर था, "उपनिवेश के बाद वाला जो समाज है, अभिजात्य और भद्र लोक, वह अपनी संस्कृति से शिफ्ट कर जाता है। यह वर्ग अपनी सांस्कृतिक विरासत को नहीं समझता है।" आदि शंकराचार्य और ग़ालिब पर पुस्तक लेखन के दौरान के अनुभवों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, "लोगों ने शेक्सपीयर को तो पढ़ा है, कालिदास को नहीं पढ़ा। हिंदू दर्शन में कितनी बुनियादी पुस्तकें हैं, कितने मत हैं, इन की जानकारी न भी हो तो जिज्ञासा तो होनी चाहिए। कभी-कभी व्यक्ति अंग्रेजी तो बोल लेता है, पर अपनी भाषा अपनी संस्कृति से अलग हो जाता है, जो कि नहीं होना चाहिए। यह बहुत दुखद बात है।"

कृषि और धर्म प्रधान देश में भूख, गरीबी जैसे मूल प्रश्न से अलग धर्म के नाम पर समस्याओं को दरकिनार करने की प्रवृत्ति पर वर्मा का कहना था, "हिंदू संस्कृति में धर्म और मजहब में अंतर है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में धर्म मजहब नहीं है। धर्म है सही आचरण। हिंदू धर्म और दर्शन में कोई टेन कमांड नहीं है।" उन्होंने कहा, "अधिकांश हिंदू अपने धर्म और उसके दार्शनिक बोध को नहीं समझ पाता। इसीलिए लोग इसका गलत इस्तेमाल करने में लगे हैं। जय श्री राम का नारा लगाने वाले क्या श्री राम के आदर्श को जानते हैं?" उन्होंने तुलसीदास जी रचित *परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई* का जिक्र करते हुए कहा, "भगवान राम मर्यादा के प्रतीक हैं। उन्होंने अन्याय के खिलाफ युद्ध भी किया, आक्रोश भी किया, पर अकारण नहीं। श्री राम का आचरण इतना श्रेष्ठ था कि कैकेयी से भी वनगमन जाने से पहले श्री राम मिलने गए तो कहा, *'सुनु जननी सोई सुत बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।'* यह मर्यादा पुरुषोत्तम राम की परिभाषा है। "

वर्मा ने *'एकम सत विप्रा बहुधा वदन्ति'* का उल्लेख करते हुए कहा कि *'वसुधैव कुटुंबकम'* से लेकर *'निष्काम कर्म'* जैसे गौरवान्वित अतीत से हम बेखबर होते जा रहे हैं। "मैं किसी को इसके लिए दोष नहीं देता, पर इस पर हमें सोचने की जरूरत है।" धार्मिक कट्टरता पर वर्मा की प्रतिक्रिया थी कि अगर हिंदू फंडामेंटलिज्म गलत है तो मुस्लिम तुष्टीकरण भी गलत है। पंथ निरपेक्ष का मतलब यह तो नहीं कि हम अपना धर्म छोड़ दें। शाहबानो का मसला हो या कश्मीरी पंडितों का, हमने तुष्टीकरण की नीति अपनाई, जो कि गलत है। युवाओं में अतीत और भविष्य के बीच की दुविधा पर वर्मा की प्रतिक्रिया थी, "इतिहास में जाना कट्टरपंथी बनना नहीं है। एक कंप्युटर इंजीनियर भी अपनी अंगुली में तीन अंगुठियां पहन सकता है। हमारा युवा दोनों को साध सकता है। विज्ञान की तरफ जाना संस्कृति से विमुख होना नहीं है। पाइथागोरस, आर्यभट्ट, पाणिनी से लेकर बहुत कुछ ऐसा है, जो प्रमाणित हैं, इतिहास जिसका साक्षी है, उनके बारे में हमें जानना चाहिए।" वर्मा की पुस्तक में भारत के विशाल मध्यवर्ग के उपभोक्तावाद के प्रति आकर्षण से जुड़े सवाल पर उनका उत्तर था, "उपभोक्तावाद मध्यवर्ग का केवल एक लक्षण है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, हमारे जीवन का एक हिस्सा है। वात्सायन की पुस्तक में यह चार पुरुषार्थ शामिल हैं। अगर शुरू के तीनों पुरुषार्थ साध लिए जाएं, तो मोक्ष मिल जाएगा। भारतीय अपनी आध्यात्मिकता के साथ बहुत अच्छे ढंग से यथार्थवादी और भौतिकतावादी हैं। मेरी आलोचना यह थी कि मध्यवर्ग अपनी खुशहाली से इतना अभिभूत और सीमित हो गया कि उसे वंचित वर्ग का दुख दिखता ही नहीं। हम अघाये समुदाय, अपार्टमेंट में सिमट गए हैं।"

मध्यवर्ग से इस विकार को दूर करने के उपाय पर वर्मा का कहना था, "मध्यवर्ग बहुत प्रभावशाली है, पर उसकी सोच बहुत सीमित है। वह हमेशा जादुई छड़ी की तलाश में रहती है। वह बच्चों की उच्च शिक्षा, अपनी तनख्वाह, सस्ता पर्यटन, बचत, खरीद आदि से ही घिरा रहता है। मध्यवर्ग को अपनी शक्ति को पहचानकर उसका उपयोग देशहित में करना होगा।" श्रोताओं में से भवानीपुर कॉलेज में हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ वसुंधरा मिश्रा के अंग्रेजी वर्चस्व से जुड़े सवाल पर वर्मा का उत्तर था, "शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन अनिवार्य है। पश्चिमी पाठ्यक्रम कई दशकों से लागू है। शिक्षा और संस्कृति सबसे पीछे हैं।" महाभारत, निष्काम कर्म और वेदांत का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा, "ज्ञान का जाति और धर्म से कोई मतलब नहीं। अगर आप सुकरात, प्लेटो, अरस्तू को हमारी शिक्षा पाठ्यक्रम का हिस्सा बना सकते हैं, रोमन साम्राज्य ने ग्रीक को पराजित किया यह पढ़ाया जा सकता है, तो चाणक्य क्यों नहीं?"

कलम कोलकाता के मीडिया पार्टनर थे ताज़ा टीवी। **अहसास** वूमेन कोलकाता की ओर से डोना गांगुली, इशा दत्ता, गौरी बसु, मलिका वर्मा और निलिशा अग्रवाल ने सक्रिय भूमिका निभायी।

Kalam Kolkata is presented by Shree Cement Ltd, in association with Taaza TV and Ehsaas Women of Kolkata

आत्मा और ब्रह्म से जुड़े हमारे धार्मिक सिद्धांत पूर्ण वैज्ञानिकः कलम पुणे में पवन के. वर्मा

कोरोना वायरस के चलते भले ही पुणे शहर लॉकडाउन व भय के बीच फंसा था, पर **प्रभा खेतान फाउंडेशन** ने साहित्य, संस्कृति, समाज व संवाद की अपनी जिम्मेदारी नहीं छोड़ी और महिला सशक्तिकरण से जुड़े कार्यक्रमों के साथ-साथ फाउंडेशन की सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियां जारी हैं। 'अपनी भाषा अपने लोग' वह बुनियादी विचार है, जिसके लिए फाउंडेशन **कलम** नामक आयोजन करता है, जिसके तहत पाठक, श्रोता अपने पसंदीदा लेखक से संवाद करते हैं। इसी क्रम में **कलम** पुणे का ऑनलाइन आयोजन हुआ, चुनिंदा साहित्य प्रेमी अपने घरों के सुरक्षित और पसंदीदा माहौल में अपने पसंदीदा, प्रिय लेखक से मिल सकें। इस बार **कलम** पुणे के अतिथि वक्ता के रूप में पूर्व कूटनीतिज्ञ और लेखक पवन के. वर्मा ने शिरकत की। **अहसास** वूमेन की सुजाता सब्निस ने उनका स्वागत किया। भारतीय विदेश सेवा के पूर्व अधिकारी वर्मा कई क्षेत्रों में समान रूप से दखल रखते हैं। एक कवि, साहित्यकार और लेखक के रूप में भी खासे चर्चित हैं। अब तक उनकी 24 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कलिंग अंतर्राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार से सम्मानित इस लेखक से नलिनी मेहरा ने संवाद किया।

मेहरा ने पहला सवाल ही मैथोलॉजी के अर्थ और व्याख्या पौराणिक और मिथ्या पर पूछा। वर्मा का जवाब था, "मैं मैथोलॉजी से प्रेरित नहीं हूं। हर बड़े धर्म में ऐसी गाथाएं और कहानियां होती हैं, जो लोगों को अपने धर्म से जोड़ती हैं, और उन्हें उनकी कई मान्यताओं को समझाने में मदद करती हैं। पर यह कहना कि जितनी भी मान्यताएं थीं, या हमारे जितने भी विश्वास थे, या जितने भी मूलभूत आध्यात्मिक सत्य थे, वे सब मिथ्या हैं, या पौराणिक हैं, या मैथोलॉजी हैं, यह गलत होगा। इसलिए इस शब्द का प्रयोग सावधानी से करने की जरूरत है। उदाहरण के लिए हमारे दो महान ग्रंथ, *रामायण* और *महाभारत* हैं उसकी जो कहानियां हैं, जो पहलू हैं, उनमें कितना आस्था है और कितना मिथ्या है, इसे ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित करना मुश्किल है। किसे आप मिथ्या करार देंगे और किसके लिए आप तथ्य ढूंढेंगे यह मुश्किल है। यह दुनिया के सभी धर्मों में है। अगर मैं ईसाइयत की बात करूं तो वहां जीसस का दोबारा जिंदा हो जाना, मिथ्या है या आस्था है? तथ्य और प्रमाण की मांग गलत होगी, इसलिए हमें ऐसी बातों से बचना चाहिए।"

K. Mohanchandran

वर्मा ने '*राम से रामचरित मानस*' की अपनी मंशा को स्पष्ट करते हुए बताया, "*वाल्मिकी रामायण* सबसे पहले लिखा गया था। ईसा से पूर्व कम से कम पांच सौ-छः साल पहले लिखा गया था। गाथा कब हुई थी, इस पर भी कई मत हैं। कुछ लोग ईसा के बारह हजार साल पहले की घटना बताते हैं। *वाल्मिकी रामायण* एक आधार है। ए. के. रामानुजन ने कहा था कि हमारे पास तीन सौ से अधिक रामायण है। उनके कहने का अर्थ था कि हिंदू धर्म की यह खासियत है कि एक केंद्रीय आधार पर कई रचनाएं हो सकती हैं। वह स्थानीय रूप पर आधारित हो सकते हैं। वे कहानी किस्से के रूप में ढलते हैं। कहीं राम सीता के रिश्ते अलग हैं। लक्ष्मण जी की भूमिका अलग है। पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में राम की गाथा है। गोस्वामी तुलसीदास जी के पास यह विकल्प था कि वह संस्कृत में इसे आगे बढ़ाएं। पर यह उनका अपना फैसला था कि वह राम जी के बारे में अपनी गाथा आम लोगों की भाषा में लिखेंगे, इसलिए उन्होंने *रामचरित मानस* अवधी में लिखा है। अयोध्या में लिखना शुरू कर वाराणसी में खत्म किया। विल्सन स्मिथ ने कहा, 'इसने तुलसीदास को उतना ही बड़ा सार्वजनिक लीडर बना दिया जितना उस जमाने में अकबर थे।' महात्मा गांधी ने कहा 'तुलसीदास की *रामचरित मानस* महानतम आस्था ग्रंथ है।' मैंने भी इसीलिए *रामचरित मानस* चुनी।" इसके बाद वर्मा ने अपनी पुस्तक को *रामचरित मानस* का आधार बनाने के कारणों की विस्तार से चर्चा की। यही नहीं उन्होंने मानस के कई दोहों पर भी अपने विचार रखे जिन पर विवाद होता है।

Nalini Mehra

हिंदू और सनातन धर्म में ब्रह्म की चर्चा करते हुए वर्मा ने कहा, "आप कल्पना करिए कि आज से हजारों साल पहले कुछ ऋषि महात्माओं ने यह बताया कि आत्मा और ब्रह्म एक हैं। इस पूरे ब्रह्मांड में एक चेतना है। जो अदृश्य है, अचिंत है, पूर्ण है, सर्वज्ञ है, निर्गुण है, यही सबमें है। यह जो दुनिया है व अस्थायी और अस्थिर है। सत्य अनादि और अनश्वर है। आज विज्ञान भी इसे मान रहा है। क्वांटम फिजिक्स में भी जो दिखता है वह नहीं है। *आदि शंकराचार्य* पुस्तक के एक अध्याय में मैंने इस चिंतन का भी जिक्र किया है। हमारे ऋषि और योगियों ने ध्यान के एक क्षण में जो सत्य देखा, उसे वैज्ञानिक भी मानते हैं।" *बीइंग इंडियन* व *बिकमिंग इंडियन* जैसी अपनी पुस्तकों का जिक्र करते हुए वर्मा ने कहा कि मेरी इन पुस्तकों का सार इस बात पर जोर देना है कि कैसे हम धीरे-धीरे अपनी विराट सभ्यता और संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। उन्होंने यह दावा किया कि वैश्विक स्तर पर हम अपनी भूमिका तभी निभा सकते हैं जब हम अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहें, अन्यथा हम दूसरों की कॉपी हो जाएंगे। बतौर अनुवादक उन्होंने अटल बिहारी वाजपेयी, कैफी आज़मी और गुलज़ार साहब की पुस्तकों, रचनाओं की विस्तृत चर्चा के साथ ग़ालिब से शंकराचार्य तक की अपनी लेखकीय यात्रा के अनुभव तो बांटे ही, *रामायण* और *महाभारत* जैसे ग्रंथों, राम और कृष्ण जैसे भगवद अवतार और अयोध्या की श्री राम जन्मभूमि मंदिर और इस्तांबुल के हागिया सोफिया जैसे धार्मिक स्थलों पर भी अपने विचार रखे। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा, "*महाभारत* एक चिंतन नहीं है। उसमें कई तरह की कथाएं हैं। धर्म उसका मूल है। हिंदू धर्म में दस नियम नहीं है। यह अपने मतावलंबियों को बच्चों की तरह नहीं देखता। यहां धर्म मजहब भी नहीं है। जिन परिस्थितियों में आप हैं उसमें क्या सही और गलत है, यह नहीं, बल्कि क्या होना चाहिए, यह धर्म प्रज्ञा के हिसाब से आप को निर्णय की स्वतंत्रता देता है। *रामायण* की केंद्रित सोच ऐसे पुरुष को परिभाषित करना था जो स्वयं मर्यादा था जबकि कृष्ण में लीला थी। राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे तो श्री कृष्ण लीला पुरुष, यह अंतर आपको सीता और राधा में भी दिखता है।" अध्यात्म, विद्वता, ज्ञान व चिंतन के भावों से भरी यह चर्चा और लंबी खिंचती पर समयाभाव ने इसे रोक दिया।

कलम पुणे के हॉस्पिटैलिटी पार्टनर द होटल ओ और मीडिया पार्टनर *लोकमत* था। **अहसास** वूमेन पुणे की ओर से अमिता मुनोत, नीलम सिओलकर और सुजाता सब्निस ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

Kalam Pune is presented in association with The O Hotel, Lokmat, and Ehsaas Women of Pune

दिल्ली मेरी गर्लफ्रेंड, एक्टिंग मेरा जुनून, पर अध्यात्म ने तटस्थ बना दिया: कलम राजस्थान में पीयूष मिश्रा

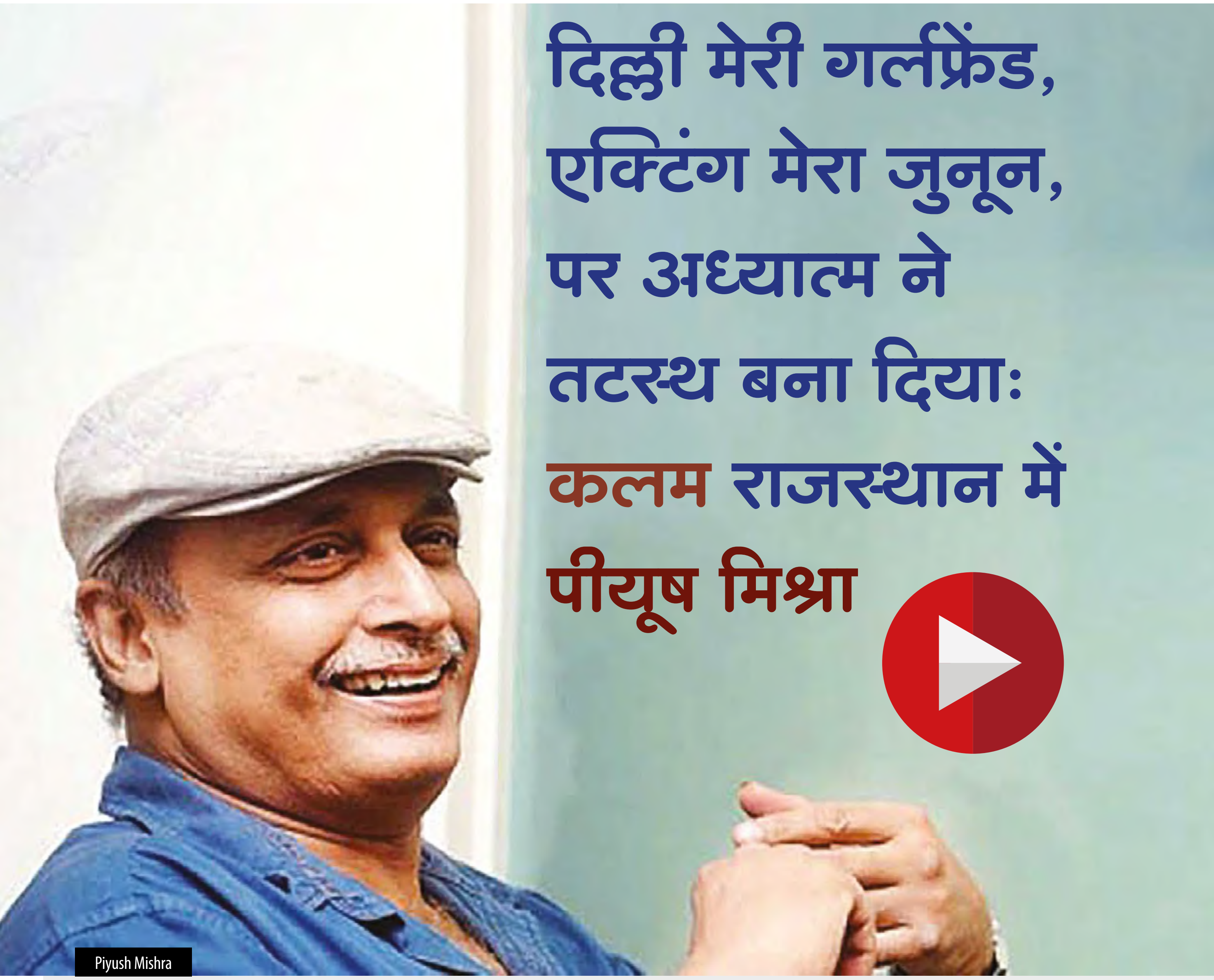

Piyush Mishra

सावन की इस सुहानी शाम में राजस्थान की रंगरंगीली धरती में *गुलाल* की रंगत मिल गई थी। अवसर था **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से ऑनलाइन आयोजित **कलम** राजस्थान का और अतिथि वक्ता थे फनकार, कवि, कलाकार और निर्देशक पीयूष मिश्रा। उनसे बातचीत की हिंदी के कवि, कहानीकार, फिल्म और कला समीक्षक विनोद भारद्वाज ने। कार्यक्रम का लुत्फ उठाने के लिए जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, जयपुर के श्रोता **कलम** राजस्थान के वर्चुअल मंच पर मौजूद थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी पीयूष मिश्रा साहित्य और कला जगत का जाना पहचाना नाम हैं। *नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा* से पास आउट होने के बाद उन्होंने दिल्ली में थियेटर में काम किया। 1998 में फिल्म *दिल से* हिंदी सिनेमा में कदम रखा। डायलॉग लिखे, एक्टिंग भी की। पर उन्हें खास पहचान विशाल भारद्वाज की फिल्म *मकबूल* से मिली। उनके चाहनेवाले उनके इस किरदार को भूले नहीं हैं, यही वजह है कि **कलम**

Vinod Bharadwaj

राजस्थान में उनसे संवाद के दौरान उनकी कविताओं, जीवन, संघर्ष पर चचा के बीच उनकी इस फिल्म में निभाए किरदार की बात बार-बार उठी। हालांकि मिश्रा *दिल से*, *मकबूल* के अलावा भी *गुलाल*, *गैंग ऑफ़ वासेपुर*, *एक दिन 24 घंटे*, *दीवार*, *झूम बराबर झूम*, *तेरे बिन लादेन*, *लफंगे परिंदे*, *लाहौर*, *भिन्डी बाजार*, *रॉकस्टार*, *तमाशा*, *द लेजेंड ऑफ भगत सिंह*, *हैप्पी भाग जाएगी*, *हैप्पी फिर भाग जाएगी*, *पिंक*, *संजू* जैसी फिल्मों से जुड़कर लगातार सक्रिय हैं। हाल ही में *इलीगल* वेब सीरीज में भी उनके काम को काफी सराहा गया।

फाउंडेशन व **अहसास** वूमेन की ओर से अपरा कुच्छल ने **कलम** राजस्थान में अतिथि वक्ता मिश्रा और संवादकर्ता भारद्वाज का स्वागत किया और संक्षिप्त परिचय दिया। आगे की बातचीत का जिम्मा भारद्वाज ने उठाया। उन्होंने मिश्रा के जीवन पर ग्वालियर, दिल्ली और मुंबई के प्रभाव पर उनकी प्रतिक्रिया पूछी। मिश्रा का जवाब था, "दिल्ली मेरी गर्ल फ्रेंड है। ग्वालियर में मैं इंट्रोवर्ट बच्चा था, पर जब मैं कुछ करता तो लोग प्रभावित होते। मुझे लगा कि मेरे कहने से लोग हंस रहे थे, रो रहे थे। थिएटर मैं कर रहा था, इसलिए मैं मानता हूं कि थिएटर ने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला। जब मैं *नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा* में गया तो मुझे ग्वालियर छोड़ कर जाने की खुशी थी, क्योंकि मैं वहां कुछ कर नहीं पा रहा था। मुझे पता था, रुकना नहीं है, लगातार चलते जाना है, इसलिए कन्फ्यूजन कभी खत्म नहीं हुआ। हां जब से मैंने प्राणायाम के बारे में जाना, तब मुझे यह जरूर लगा कि यह मेरे जीवन में पहले क्यों नहीं आया।"

Apra Kuchhal

भारद्वाज ने ज़िंदगी के तजुर्बे के बारे में पूछा और मिश्रा की एक खास कुर्सी पर बैठकर लिखने की आदत की चर्चा की, तो मिश्रा ने उसे अफवाह करार दिया। भारद्वाज ने गायन, लेखन, पेंटिंग आदि के क्षेत्र में समान रूप से काम करने के बावजूद किस विधा से मिश्रा का लगाव है? पूछा तो मिश्रा ने कहा, "मुझे थिएटर ही करना था, इसलिए संघर्ष चला। मेरे साथ के लोग बहुत पहले मुंबई आ चुके थे। मेरे दोस्त मुझे मुंबई बुला भी रहे थे, पर जब भूखों मरने की नौबत आ गई, तब मुंबई पहुंचा। छियालिस साल की उम्र में *गुलाल* में काम मिला। *गुलाल* के एक गीत *ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है* के साहिर लुधियानवी से प्रेरित होने के सवाल पर मिश्रा का जवाब था, "यह अनुराग कश्यप का आइडिया था। यह पूरी फिल्म साहिर साहब की इस पंक्ति *ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है* को समर्पित थी। इसीलिए मैंने उसे लिखा भी, कंपोज भी किया और गाया भी। खुशी की बात है कि इसे लोगों ने पसंद किया।"

मिर्ज़ा ग़ालिब की चर्चा पर मिश्रा ने कहा, "सच तो यही है कि ग़ालिब मुझे समझ नहीं आए। ये बहुत भारी भरकम लोग हैं। इसी तरह निराला की *राम की शक्ति पूजा* पढ़ने पर भी मेरे पल्ले नहीं पड़ी। पर दिल्ली में मैं लंबे समय तक रहा। उस की याद आती रहती है। ग़ालिब को याद रखने का इससे अच्छा तरीका क्या हो सकता है, इसलिए बैंड का नाम *बल्लीमारान* रखा। इस बैंड में सारे गाने मेरे थिएटर के गाने हैं। हमने इसे एक्सक्लूसिव रखने की कोशिश की है। जहां तक भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव पर काम करने की बात है, तो इन पर काम करने की वजह यह थी कि इन्होंने बहुत कम उम्र में बड़ा काम किया। नेहरूजी, गांधीजी, चेग्वारा आदि सभी ने भी बड़ा काम किया पर एक उम्र पर पहुंच कर। पर जब मैंने भगत सिंह को पढ़ा, एक कलाकार के रूप में उनके किरदार को समझा, तो उनके जीवन की घटनाओं को महसूस किया। अपने इमेजिनेशन में देखा। घटनाओं को घटते हुए महसूस किया। लोगों को लगा कि यह बहुत कुछ जानता है। लोगों ने उनके सोशलिस्ट होने पर काम किया पर चौबीस घंटे तो आदमी सोशलिस्ट नहीं हो सकता, इसलिए मैंने उनकी ख़्वाहिश पर, रसगुल्ला पर, प्रेम पर, उनके खाने पीने, नास्तिकता पर, *गीता* और विवेकानंद से प्रेम पर सब पर काम किया, पर अभी भी पूरी तरह समझ नहीं पाया।" थिएटर के किन लोगों का उन पर प्रभाव पड़ा? मिश्रा का कहना था कि "मैं बड़े लोगों से प्रभावित होकर उनके नजदीक गया और पाया कि ये जो बड़े नाम हैं वे भी सामान्य लोग हैं।"

मिश्रा से हो रही इस बौद्धिक चर्चा को भारद्वाज ने कविता की ओर मोड़ दिया और अनुरोध किया कि वह अपनी कविता, *मेरी सारी प्रेमिकाओं के नाम* सुनाएं। फिर मिश्रा ने इस शर्त पर कविता सुनाई कि पूरी कविता सुननी होगी। कविता की कुछ पंक्तियां यों थीं। '*जितना बचपन सच उतना ही प्रेम निवेदन भी सच है/और प्रेम निवेदन सच है, तभी ये चंचल यौवन भी सच है/और यौवन जो गर सच है तो फिर प्रौढ़ वर्ष भी सच होंगे/और प्रौढ़ वर्ष जब सच होंगे तो सच होगा उनके संग में/ कुछ गिरे दांत और पोंपल मुंह*'। इस कविता पाठ के तुरंत बाद बातचीत बहुविध विधाओं से मिश्रा के लगाव पर जा पहुंची और उनसे पूछा गया कि इतने सारे कामों के बीच कौन सी विधा मिश्रा को सबसे प्रिय है? उनका जवाब था —"सबसे आसान है गीत लिखना, पर मेरी प्रिय विधा है एक्टिंग। इसमें बहुत मेहनत होती है। मैं किसी भी भूमिका के पहले पागल हो जाता हूं। यही मेरा उद्गम है। अगर मैं एक्टिंग छोड़ दूं, तो कुछ भी नहीं कर सकूंगा। पर यह मेथड एक्टिंग नहीं है। हर व्यक्ति की अपनी

Aarambh hai prachand! Well begun is half the battle won! Inspiring lines from the **Kalam** session with Piyush Mishra. A very interesting and insightful session!

— Sushma Sethia

मैं **प्रभा खेतान फाउंडेशन** का हार्दिक धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने पीयूष मिश्रा जी को कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया। अपनी कई खूबियों के धनी मिश्रा जी ज़मीन से जुड़े व्यक्ति हैं। उनकी यह बात 'कोई बड़ा स्टार नहीं है ।आप ख़ुद को पहचाने ।आप से बड़ा और कोई ख़ास व्यक्तित्व किसी और का नहीं है' बहुत अलग थी। उनका कविता पाठ भी बहुत अच्छा रहा । मिश्रा जी का सेशन प्रेरणादायक रहा। धन्यवाद।

— Dr Veena Chundawat

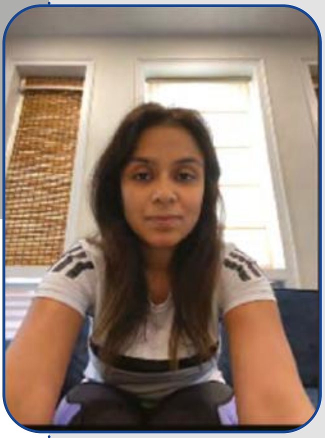

Another invigorating session by **Prabha Khaitan Foundation** with the revolutionary Piyush*ji* who did not mince his words and spoke from his heart. These sessions have been a ray of light in the dull gloomy world of the pandemic.

— Swati Agarwal

It is great to have the **Kalam** sessions in the comfort of our homes. They enliven us and keep the spirits high. This session was particularly interesting and gave an insight into the world of films.

— Namrata Chowksi

अपनी एक्टिंग हैं।" एक सवाल के जवाब में मिश्रा ने कहा कि बच्चे बड़े हो जाते हैं तो आप उनके दोस्त हो जाते हैं। उनसे भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

सवाल-जवाब की बारी आई तो सपना महेश ने पूछा, *मकबूल* के अपने रोल के लिए आपने अपने को कैसे तैयार किया? जवाब में मिश्रा ने कहा, "इसमें एनएसडी के बहुत सारे साथी काम कर रहे थे, तो इसमें तो मुझे बेहतर करना ही था। किसी भी कैरेक्टर को करने के लिए आपको शब्दों से अलग उनके साथ जीना होगा। हिलना, डुलना होगा, समझना होगा। यह स्क्रिप्ट से अलग होता है।" जोधपुर से अयोध्या प्रसाद का सवाल था कि ज़िंदगी की सबसे बड़ी चोट क्या थी, कैसे उबरे आप? पर पलट कर मिश्रा ने जवाब दिया, "क्या आप शराब की बात कर रहे हैं? जब तक मेरी ज़िंदगी में अध्यात्म नहीं आया था, मैं शराब का गुलाम हो गया था। दर्द *का हद से आगे बढ़ जाना दवा बन जाता है*। योग अध्यात्म ने सब कुछ बदल दिया। मानवता का भाव आने के बाद सब कुछ बदल गया।"

उदयपुर से स्वाति अग्रवाल के शिक्षा, विज्ञान और अकादमिक शिक्षा से जुड़े सवाल पर मिश्रा कहना था, "विज्ञान पढ़ने के पीछे का कारण मुझे पढ़ाई के दौरान नहीं समझ में आता था कि इनकी जरूरत क्या है? पर *अल्बर्ट आइंस्टाइन* करने के दौरान मुझे यह समझ आया। '*ज़िंदगी हर तरफ एक नई जंग है*' से मैं ज़िंदगी से हरदम सीखता रहा। जीने की ललक से मैं बहुत कुछ सीखता रहा। मैं कोई लूज़र नहीं हूं। मैंने घाट-घाट का पानी पिया। कई बार गिरा, पर एक जिजीविषा, जीने की ललक थी। जिससे मैं आगे बढ़ा। एकेडमिक्स का मतलब केवल स्कूली शिक्षा नहीं। बच्चों को छोड़ दीजिए। इसलिए बच्चों को अकादमिक शिक्षा से अलग भी जो करना चाहें करने दें...." विवेक शर्मा का सवाल था कि फिल्मों का असर समाज पर क्या होता है? विकास दुबे ने *अर्जुन पंडित* फिल्म सौ बार देखी आपका कहना क्या है? मिश्रा का जवाब था, "यह सब बेकार की बातें हैं। हमारे बहुत नजदीक मत आइए, दूर रहकर हमारी इज़्ज़त करिए। हर एक्टर भी एक आर्डिनरी आदमी हैं।" स्वामी विवेकानंद का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा कि एक बार किया गया कर्म लौटता

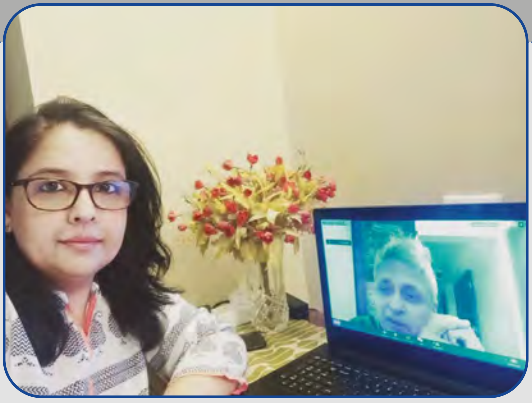

Piyush Mishra is talent that goes way beyond theatre and films. His life story exemplifies how he turned his demons into art, his failures into teachers and his weaknesses into reasons to keep fighting.

A wonderful session with a brutally honest and grounded man who wore his scars like his wings to struggle and persevere against not only the outside world but his own demons as well. The biggest takeaway was the indomitable spirit to keep one's dreams above the mundane realities of life. An inspiring story!

— **Shelja Singh**

Kalam with Piyush Mishra
Who dons so many hats:
Composer, Lyricist, Painter,
Scriptwriter and Singer.

Multitalented, multitasking,
In all genres of the Arts,
But biggest is his dramatic passion:
Film and Theatre Action!

Inspiring meaningful lines,
Of his beautiful poems:
Recited by him did profess,
His lucidity and poetic prowess.

Lyrics of his song *Aarambh*
Displayed shades of Motivation;
Versatility, Creativity, Humility,
All aspects of his personality!

— **Preeti Mehta**

जरूर है।

तृप्ति पांडेय के इस सवाल पर कि थिएटर में आप क्या कर रहे हैं? मिश्रा का जवाब था, "काफी कुछ कर रहा। पिछले साल थिएटर के लिहाज से काफी अच्छा था, पर अब कोरोना ने सब रोक दिया है। लॉक डाउन ने धुंध बढ़ा दिया। हमें इसके साथ जीना सीखना होगा।" वीना चंदावत के एक सवाल पर उन्होंने कहा, "अब अगर मेरा वश चले तो मैं आंखें बंद करके अध्यात्म करना चाहता हूं। ध्यान करना चाहता हूं। इसके अलावा मैं जो कुछ भी कर रहा वह जीवन जीने के लिए कर रहा। जब तक कलम चल रही यात्रा जारी है।" आपकी बहुधंधी गतिविधियों से कहीं आपकी मूल प्रतिभा खत्म तो नहीं हो जाती? के जवाब में मिश्रा ने चर्चित मराठी लेखक शिवाजी सावंत के उपन्यास *मृत्युंजय* का जिक्र करते हुए कर्ण के जीवन का जिक्र किया और यह माना कि मेरी बहुमुखी प्रतिभा भी शुरुआती दौर में मेरे लिए प्रताड़ना थी। पर 'ध्यान' से मेरे अंदर इतना अंतर आ गया, कि मैं तटस्थ होकर समझ सकता हूं। पर इसका मतलब यह नहीं कि मैं आरएसएस और भाजपा का हो गया।

सुजाता भंडारी के विपश्यना से जुड़े सवाल पर मिश्रा ने 'ध्यान' को राज योग करार दिया। उन्होंने कहा विपश्यना से साक्ष्य भाव से चीजों को देखना सीख लिया है। यह यात्रा खत्म नहीं होगी।

मिश्रा से जब उनके सबसे पसंदीदा, दिल के करीब गाने की फरमाइश हुई तो उन्होंने *आरम्भ है प्रचंड* कविता सुनाई। इस कविता की चंद पंक्तियां यों थीं, '*आरम्भ है प्रचंड, बोले मस्तकों के झुण्ड, आज जंग की घड़ी की तुम गुहार दो। आन, बान, शान या की जान का हो दान, आज एक धनुष के बाण पे उतार दो। मन करे सो प्राण दे जो, मन करे सो प्राण ले जो, वही तो एक सर्व शक्तिमान है। ईश की पुकार है, ये भागवत का सार है कि युद्ध ही तो वीर का प्रमाण है*' सुनाया। दुर्गा प्रसाद के इस सवाल पर कि मौका और छूट हो तो वे किस विषय पर फिल्म बनाएंगे? मिश्रा का सीधा सा जवाब था, "मैं अल्कोहलिज्म पर फिल्म बनाना चाहता हूं, जो सीख के रूप में नहीं बल्कि मजाकिया रूप में हो, और लोगों को इसके असर के बारे में बताए" अतिथि मिश्रा और संवादकर्ता भारद्वाज ने **प्रभा खेतान फाउंडेशन** का इस भव्य आयोजन में बुलाने के लिए आभार ज्ञापित किया।

प्रासंगिकता और उपयोगिता में फंसी राजनीतिः कलम बिलासपुर और रायपुर में विजय त्रिवेदी

Vijay Trivedi

यह **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से 'अपनी भाषा, अपने लोग' अभियान के तहत आयोजित **कलम** बिलासपुर & रायपुर का अनोखा संवाद कार्यक्रम था। अतिथि वक्ता के रूप में पत्रकार, लेखक विजय त्रिवेदी उपस्थित थे। गौरव गिरिजा शुक्ला ने त्रिवेदी का स्वागत करते हुए **कलम** के कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने बताया कि **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के सौजन्य से यह कार्यक्रम लेखक और पाठक के बीच सेतु की भूमिका निभाता है। देश-विदेश के तीस शहरों में ऐसे आयोजन होते हैं। फाउंडेशन कला, संस्कृति, शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रहा है। लॉकडाउन के चलते इस कार्यक्रम के वर्चुअल होने की जानकारी देते हुए शुक्ला ने अतिथि लेखक त्रिवेदी का विस्तृत परिचय दिया। त्रिवेदी न्यूज टेलीविजन के परिचित पत्रकार रहे हैं। अनेक प्रतिष्ठित मीडिया घरानों में काम किया है। राजनीतिक घटनाओं पर पकड़ रखने वाले त्रिवेदी को संसदीय राजनीति की गहरी समझ है। भारतीय जनता पार्टी को वह कवर करते रहे हैं और उसके राजनेताओं को करीब से देखा है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी पर लिखी *हार नहीं मानूंगा*, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ पर *यदा यदा ही योगी* और *बीजेपीः कल, आज और कल* नामक उनकी पुस्तकें काफी चर्चित रही हैं। परिचय के बाद उन्होंने बातचीत की कमान अभिकल्प फाउंडेशन व **अहसास** वुमेन से जुड़ी डॉ गरिमा तिवारी को सौंप दी।

तिवारी ने पहला सवाल त्रिवेदी की पारिवारिक पृष्ठभूमि और उनके अब तक के पत्रकारिता के सफर पर पूछा। जवाब में त्रिवेदी ने राजस्थान की माटी और जयपुर से अपने लगाव की बात बताई और कहा कि हम अपने अनुभवों से ही सीखते हैं। प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया की अपनी अब तक की यात्रा का जिक्र करते हुए उन्होंने बलराज साहनी के जीवन की एक घटना का जिक्र किया और कहा, "आजादी के 75 साल बाद भी क्या हमारी गुलामी की मानसिकता बदली है? क्या हममें सवाल पूछने की हिम्मत है?" आखिर

Gaurav Girija Shukla

इसका विकल्प क्या है? पूछे जाने पर त्रिवेदी का कहना था, "आज का समय पत्रकारिता के लिए बहुत कठिन है। निष्पक्षता और सत्यता की कसौटी पर खरा उतरना मीडिया संस्थानों के लिए बेहद आवश्यक है। हाल के दिनों में इनकी साख कमजोर हुई है। हालांकि छोटे शहरों, कस्बों और गांवों में आज भी निष्पक्ष और ईमानदार पत्रकारिता जीवित है, जो कि सबसे बड़ी उम्मीद है।" सरकारी नौकरी छोड़ कर अपने खुद के मीडिया में आने का जिक्र करते हुए त्रिवेदी ने बताया कि कैसे भारतीय जनता पार्टी को कवर करने के दौरान उनसे उनकी पहली किताब लिखवाई गई, और फिर अटल जी पर लिखी पुस्तक का सिलसिला, योगी आदित्यनाथ और भाजपा पर लिखी पुस्तक तक पहुंचा। त्रिवेदी ने यह दावा किया कि राजनीतिक व्यक्तियों और दलों पर लिखने के बावजूद उनकी किताब किसी का प्रचार नहीं करती है।

खुद की लिखी पुस्तकों में उन्हें सबसे प्रिय कौन सी है? के सवाल पर उन्होंने छूटते ही अटल बिहारी वाजपेयी पर लिखी पुस्तक *हार नहीं मानूंगा* का नाम लिया। त्रिवेदी ने इसकी वजह भी बताई। उनका कहना था, "अटलजी पर लिखी किताब भारत के पचास सालों का राजनीतिक इतिहास भी है। नेहरू, संघ, चीन, कांग्रेस, आपातकाल, जनता पार्टी, भाजपा, राम मंदिर, पाकिस्तान, भारत सहित इसमें वह सभी वाकिआ शामिल है, जिसका असर देश पर हुआ। मेरी किताब उस समूचे दौर और बदलावों को बताती है।" पुरानी भाजपा और नई भाजपा के अंतर को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा, "दोनों में बहुत अंतर है। मेरी किताब पढ़ने से यह पता चलेगा कि 'गांधीवादी समाजवाद' से चली भाजपा 'पंचतारा संस्कृति' में कैसे बदल गई। एक जमाने में कार्यकर्ताओं के दरी बिछाने पर चर्चा होती थी, और अब इस बात पर चर्चा होती है कि कौन सा नेता किस चार्टर्ड प्लेन से जाएगा, किस फाइव स्टार होटल में रुकेगा। हालांकि इस दौरान पूरी दुनिया में ही बदलाव हुए हैं। पर इन सबके बावजूद भाजपा अब भी अपनी विचारधारा पर टिकी हुई है।" क्या मोदी जी पर वे कोई किताब लिखेंगे? के सवाल पर उन्होंने बताया कि ऐसी कोई योजना नहीं है।

कांग्रेस के भविष्य पर उनका कहना था, "लोकतंत्र में जनता ही राजा है। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की संख्या अब भी दस करोड़ है। पर वह अपने सबसे बुरे वक्त में है।" त्रिवेदी ने कहा, "भले ही राजनेताओं को या दलों को ये भ्रम हो जाए कि वे सबसे ताकतवर हैं, लेकिन सच्चाई यही है कि लोकतंत्र में जनता ही किंग मेकर की भूमिका निभाती है और वह शांत रहती है। उसे जब भी सत्ता को बदलना होता है वह बदल देती है। उसकी जब जो इच्छा होती है वह वही करती है।" आपके पास इतनी राजनीतिक समझ है, क्या आप भी राजनीति में आएंगे? के जवाब में त्रिवेदी का कहना था, "नहीं। पत्रकार को अपना इस्तेमाल होने देने से बचना चाहिए।"

मीडिया की भूमिका पर उनकी राय क्या है? क्या मीडिया देश का माइंडसेट तय कर रहा है? जैसे सवालों के जवाब में विजय त्रिवेदी ने कहा, "ऐसा सिर्फ मीडिया को लगता है कि वह देश का मूड या माइंडसेट तय कर रहा है। जबकि सच्चाई इससे अलग है।" आपातकाल पर लालकृष्ण आडवाणी के चर्चित वाक्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि *'मोर लायल देन किंग'* की स्थिति गलत है। उन्होंने कहा कि जनता को इतना महत्त्व मीडिया को नहीं देना चाहिए कि उसे यह गलतफहमी हो जाए कि देश और सरकार वही चलाते हैं। मीडिया की अपनी जिम्मेदारी है निष्पक्ष, ईमानदार और निर्भीक पत्रकारिता करने की। उसे अपने दायित्वों को पूरा करना चाहिए। उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे शहरों में पत्रकारिता बची है, जिंदा है। दिल्ली उन्हीं की खबरों को उठाती है। मीडिया के दिल्ली केंद्रित होने की वजह उन्होंने बाजार को बताया। उनका कहना था कि अब पत्रकार जमीन पर नहीं जाना चाहते। दिल्ली में बैठे राष्ट्रीय चैनल वहां की खबरों को इतना दिखाते हैं कि लगता है पूरे देश में सब कुछ दिल्ली में ही हो रहा है। लेकिन, ऐसा नहीं है।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व संबंधी सवाल पर त्रिवेदी ने कहा कि अटल जी सबको लेकर चलने वाले प्रधानमंत्री थे। उन्होंने कहा था कि मैं उस सरकार को चिमटे से भी नहीं छुऊंगा, जो भ्रष्टाचार में लिप्त हो। राजनीतिक क्षेत्र में मनभेद और मतभेद के सवाल पर त्रिवेदी ने पुराने जमाने की राजनीति और वर्तमान में आए बदलाव का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यह दुखद है। अटल बिहारी वाजपेयी और पंडित नेहरू के संबंधों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि नेहरू के प्रधानमंत्री रहने के दौरान अटल बिहारी वाजपेयी युवा नेता थे, लेकिन दोनों सदैव एक-दूसरे का सम्मान करते थे। त्रिवेदी ने राजस्थान में भैरोंसिंह शेखावत के कार्यकाल में विधानसभा में सबसे अच्छे वक्ता की ओर से लड्डू बांटने की मजेदार परंपरा का भी उल्लेख किया। निष्पक्ष पत्रकारिता की बात आने पर विजय त्रिवेदी ने कहा कि पत्रकारिता के लिए सबसे बुनियादी आवश्यकता है कि आप सवाल पूछने की हिम्मत रखते हैं। मीडिया को हमेशा विपक्ष में खड़ा रहना चाहिए। पत्रकारिता में रिश्तेदारी से बचना चाहिए।

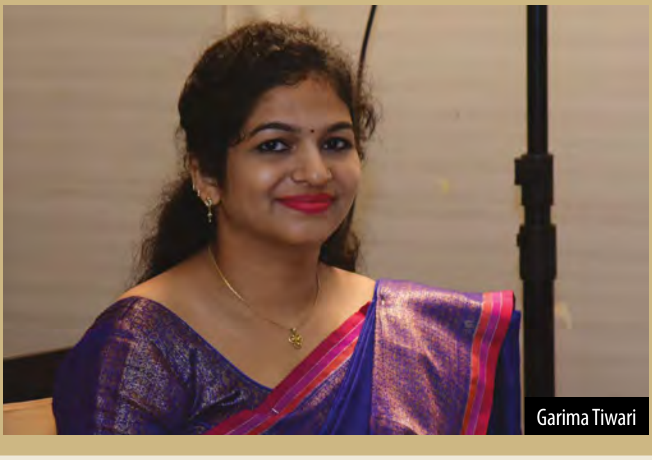
Garima Tiwari

पत्रकारिता पर लगने वाले तमाम आरोपों में से उन्होंने कहा कि काफी बातें अब सच हैं। एंकर ही अभी प्रवक्ता हैं। लेकिन यह बदलाव आएगा। गांधी जी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि गांधी के दौर में भी ऐसा था। पर गांधी की अहिंसा को तब स्वीकारा नहीं गया। गांधी की प्रासंगिकता हिम्मत से होगी। सत्य को स्वीकार करने का हममें साहस नहीं है। हम अब अपने आपसे सच नहीं बोल सकते। सबसे ज्यादा उपयोग में होने वाली करेंसी पर भी गांधी हैं। एक सवाल के जवाब में त्रिवेदी ने कहा, "प्रासंगिकता और उपयोगिता में अब अंतर आ गया है। आज यूज एंड थ्रो का जमाना है। उपयोगिता को समझने में कोई बुराई नहीं है।" उनका दावा था विचारधारा और संगठन में आडवाणी जी के कद का कोई व्यक्ति नहीं।

कलम बिलासपुर और रायपुर के इस सत्र में सवाल-जवाब के दौरान काफी रचनात्मक बातचीत हुई। त्रिवेदी और तिवारी की इस मनोरंजक बातचीत के बीच दर्शकों के उत्साह पर शुक्ला यह कहे बिना नहीं रह सके कि **कलम** अपने अराजनीतिक स्वरूप के लिए जाना जाता है और यह पहला अवसर है, जब राजनीति पर इतनी सारी बातें हुईं। सवालों के सत्र में आराधना शर्मा, विभाष कुमार झा, प्रवीण तिवारी, डॉ प्रसन्न कुमार, पूर्णिमा तिवारी, संजीव, कल्पना मिश्रा, शोभित वाजपेयी, अतुल आदि ने शिरकत की। शुक्ला ने सभी का आभार प्रकट किया।

कलम बिलासपुर और रायपुर के प्रायोजक थे श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हयात रायपुर और मीडिया पार्टनर *दैनिक जागरण* की ओर से *नई दुनिया* थे। अभिकल्प फाउंडेशन का सहयोग मिला और **अहसास** वूमेन की ओर से गरिमा तिवारी ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

Kalam Raipur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Hyatt Raipur and Abhikalp Foundation

Kalam Bilaspur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Nayi Duniya, *Abhikalp Foundation and Ehsaas Women of Bilaspur*

To My Homeland, Always...

Amandeep Sandhu

Janvi Sonaiya

Love for the homeland was at the heart of a virtual session with author Amandeep Sandhu.

The author of *Panjab: Journeys Through Fault Lines* was in conversation with Janvi Sonaiya at **The Write Circle** Ahmedabad, hosted by **Prabha Khaitan Foundation**.

The Odisha-born author, now living in Bangalore, declared his undying love for Punjab and shared why he always returned to his homeland through his works. Sandhu said he was eager to understand the culture and its people. Indeed, his oeuvre has been centred around his journey to find the missing piece of Punjab. While researching for his first book, *Panjab: Journeys Through Fault Lines*, Sandhu had a tough time gathering information.

In his most recent work *Sepia Leaves*, Sandhu writes about schizophrenia, a mental disease that runs in his family. The novel is Sandhu's effort to shed light on the socio-cultural stigma and misconceptions regarding mental health, and how it acutely affects an entire family, not just the patient alone.

The geo-cultural presence of Punjab in Sandhu's writings has been his way of finding his individual identity, and that of his state as well. Sandhu hoped that the world will some day recognise the deep-set socio-political conflicts that jeopardise the state and work to solve such bitterness.

Sandhu's works include the semi-autobiographical *Roll of Honour*, which was nominated for the Hindu Literary Prize for Best Fiction in 2013, and *Sepia Leaves*, set in the golden heart of Punjab.

An alumnus of University of Hyderabad with a master's degree in English, he holds a diploma in journalism from the Asian School of Journalism. In 2013, he joined Akademie Schloss Solitude in Stuttgart, Germany, for a two-year fellowship programme.

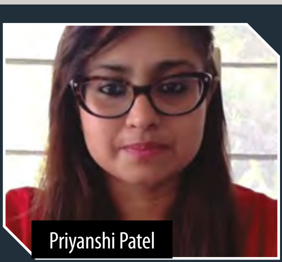
Priyanshi Patel

Shaneel Parekh

The Write Circle Ahmedabad is presented in association with Karma Foundation, The House of MG-Mangalabag, Divya Bhaskar *and Ehsaas Women of Ahmedabad*

Sharda Jha

The Craft of Poetry with Sharda Jha

The craft of writing and the rich world of Maithili literature came under the spotlight at the first virtual session of **Aakhar**.

Sharda Jha, who has her roots in Madhubani and is now a professor of English in Hyderabad, revealed that she started writing while in college. Asked what inspired her to write poetry and whether she wrote for her own satisfaction or the society's, she replied that humans are social beings.

"Even as every piece of writing is inspired by our own ideas, the ideas themselves are embedded in our surroundings and, being a part of the society, our lives are deeply impacted by them So, whatever we write belongs to the society at the end of the day," Jha explained.

Jha's latest collection of poetry includes her earliest poems. Maithili litterateur Hare Krishna Jha had written in the preface to his collection of poems that he had included all his poems because he did not wish to deceive critics.

Speaking about women, Jha said they must have the support of their family as well as the society because it is only then that women can express their creativity wholeheartedly.

Jha introduced the audience to some of her favourites from Maithili literature — poets Narayan*ji*, Ajit Azad and Hare Krishna Jha. She also expressed an interest in young poets like Vikas Vasantnabh and Balmukund.

As the session drew to an end, Jha read out two of her own poems.

Aradhana Pradhan, the founder and present Director of Masi Inc, presented the vote of thanks.

Gunjan Shree

Aradhana Pradhan

Aakhar Patna is presented by Shree Cement Ltd, in association with Masi Inc

@aakhar_east @aakharbihar

Close Encounters of a Biographical Kind

Vikram Sampath

An accidental writer, the catalyst for Vikram Sampath's foray into biographies was a popular television serial.

The historian-writer talked about his books and his craft in a virtual chat with Shweta Bansal at **Prabha Khaitan Foundation's The Write Circle**.

It all began when Sampath was 13. Watching a few episodes of *The Sword of Tipu Sultan* made him curious about the ruler. The serial had been rather critical of the Mysore royal family and the young Sampath yearned to know more. The boy's family joined in his quest and would often set off on vacations to Mysore. Sampath's grandmother helped him translate several books so that he could learn more about the royal family and assess their deeds. The research carried on for a decade, until one day it hit him that others must also be made aware of everything he had discovered. There was a glaring absence of south Indian history and he felt it was his duty to publish a book that would fill in at least some of the gaps. Thus was born his first book — *Splendours of Royal Mysore: The Untold Story of the Wodeyars*.

> While many would shy away from writing about such a controversial personality, Sampath confessed that he felt drawn towards people who have been forgotten or maligned and, in his view, Savarkar has been grossly misinterpreted

Sampath's fascination with the Mysore royal family had led him to meet their descendants. He was enchanted by the family and tried to find out everything he could about them. While this attraction must persist through the course of a project, lest the author lose interest and abandon the book entirely, Sampath also warned against letting the relationship turn into an obsessive one. "There is a very thin line between a biography and hagiography," he said, and if one crosses that line, the biography will not be an honest one.

But it was Sampath's second book, *My Name is Gauhar Jaan!: The Life and Times of a Musician,* about the Kolkata-born singer and dancer, that brought him fame. In the writer's own words, the book "changed his life" because it gave him the confidence to quit his corporate job. Apart from winning him a string of awards, the book attracted the attention of the film and theatre artist, Lillete Dubey, who approached him seeking permission to adapt the book into a play. Since Gauhar Jaan was the first commercially recorded Indian music artist, Sampath was also inspired to set up India's first digital archive for gramophone records.

Sampath's latest venture is about V. R. Savarkar. While many would shy away from writing about such a controversial personality, Sampath confessed that he felt drawn towards people who have been forgotten or maligned and, in his view, Savarkar has been grossly misinterpreted. He explained that the man who coined the term "Hindutva" had never intended it to be reduced to idol worship; instead it had been meant to convey the virtues of Hinduism. For Savarkar, being a Hindu did not mean demanding rights based on one's Hindu identity, rather it was about love for one's land because it was the land of one's ancestors. In fact, it is this love that drove Savarkar to play a significant role in the battle against the domination of the English language. Apart from the present relevance of the Hindutva ideology, the book has also created a lot of buzz because Sampath has talked about Savarkar as a homosexual.

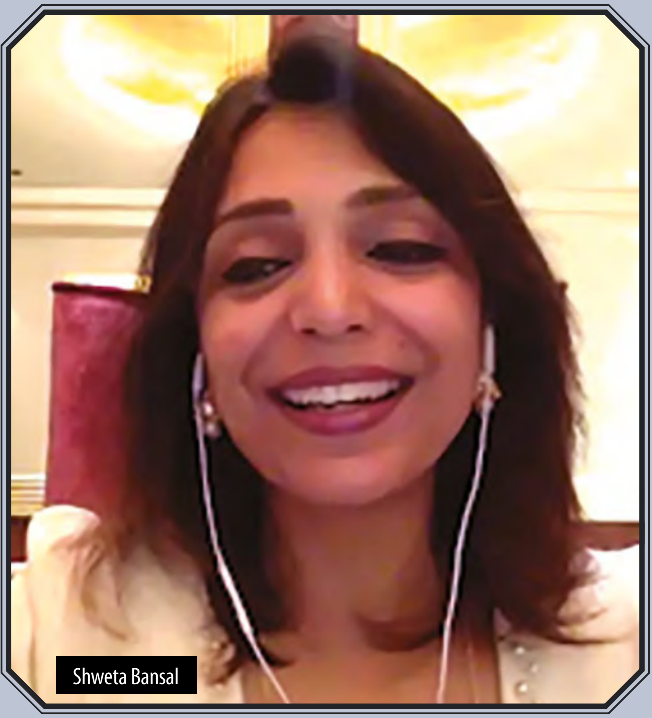
Shweta Bansal

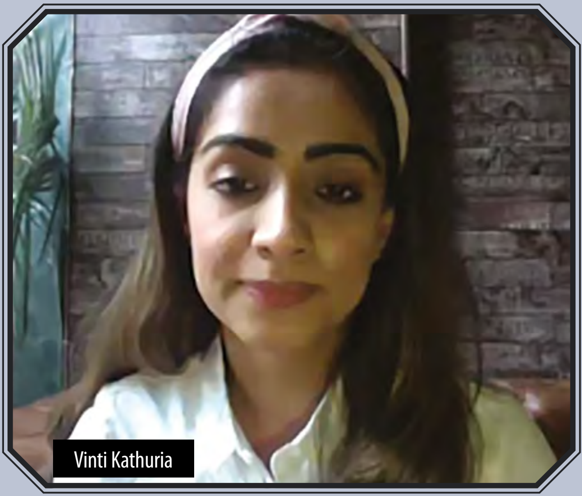
Vinti Kathuria

As the session drew to a close, Sampath chose to leave his audience with the thought that they must think for themselves. His aim of writing biographies is stating the facts based on intensive research, not acting as a spokesperson. The readers, he urged, must exercise their own judgement.

The Write Circle Agra is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *ITC Mughal and Ehsaas Women of Agra*

@write_circle @WriteCircle

Music of the Soul

Photo : **Yeashu Yuvraj**

Shubha Mudgal

She made us fall in love with the rhythm of the rain and the magic of the monsoon. Shubha Mudgal has redefined classical music, effortlessly blending it with contemporary sounds.

Mudgal's infectious spirit in *Ab ke saawan* charmed the young and old alike. Her full-throated renditions of pop was as full of life as her *thumris*, *khayals* and *dadra*.

Mudgal was in conversation with Hindustani classical vocalist Kaushiki Chakraborty for **Sur Aur Saaz**, Kolkata. Chakraborty, who has been producing digital jam sessions between young musicians and anchoring an interview show with eminent classical artists, couldn't contain her excitement at the opportunity to interview a singer she has always idolised. The online session saw the two singers exchanging notes on all things music.

Mudgal talked about her family and how she had always been encouraged to follow her calling with respect and dedication. She spoke about her deep reverence for art and how her mother had discovered her talent and guided her to follow her passion.

Guru-shishya parampara is an integral part of

the tradition of classical music, explained Mudgal. "A guru is not just a teacher," she said. The guru tailors his or her teaching to the disciple's competence and skill. She compared the guru to the potter who moulds soft clay to its desired shape. She spoke fondly of her own teachers, Ramashreya Jha, Vinay Chandra Maudgalya, Jitendra Abhisheki, Naina Devi and Kumar Gandharva. Mudgal believes that though there has been a shift in teaching, the ethos has remained the same and digital media has definitely made a positive difference to the learning process. One had less time in hand and new ways of knowledge-sharing had been adopted, Mudgal said, but tradition is dynamic and ever-changing. If it were set in stone, it would become a museum piece.

Talking about *gharana* in classical music, Mudgal said it was very important for a student of music. She believes that the *gharana* tradition has really helped to foster iconic styles of music. The tradition permits musicians to be themselves and at the same time retain some amount of familiarity. She cited examples of contemporary musicians who have retained the foundation of their *gharanas* and yet created new forms.

Kaushiki Chakraborty

Talking about nepotism in the field of music, Mudgal said that just backing, without talent, would not help someone in the long run. Merit and talent must go hand in hand, she said, adding that the audience had the power to hoot out a performer or ask for an encore. She pointed out that in the music industry one had a limited number of chances to perform well and could not survive if they did not make good use of these opportunities. According to her, nepotism is a human failing.

Just backing, without talent, would not help someone in the long run. Merit and talent must go hand in hand, she said, adding that the audience had the power to hoot out a performer or ask for an encore

On being asked about the many hats that she dons, as a blogger, musician, music crusader, composer and author (*Looking for Miss Sargam*), she humbly replied that she was not doing anything extraordinary and that there had been many before her.

The singer joked about how her rich baritone was a misfit in mainstream cinema and was considered mostly for tragic *alaaps* or folk renditions.

The singer rued the current scenario of the music fraternity, referring to it as "lonely times for the musicians". The new normal has introduced new formats, but not all musicians are technologically sound, hence there is inhibition, Mudgal said. She believes that musicians need reassurance from their audience and that people's participation in paid concerts give artists the confidence and energy they need.

Vandana

Sur Aur Saaz is presented by Shree Cement Ltd, in association with SWAR, EZCC, Ministry of Culture, Hyatt Regency Kolkata and Ehsaas Women of Kolkata

Breaking Myths About Women in Mythology

Kavita Kane

Urmila (Sita's sister and Lakshman's wife), Menaka the *apsara,* Surpanakha (Ravan's sister) and Satyavati (the grand matriarch) — oft-forgotten characters from epics — are the central players in Kavita Kane's works.

Swati Gautam

Kane caught up with social worker, e-columnist and literary enthusiast, Swati Gautam, about her books and how they portrayed womanhood at a virtual session of An Author's Afternoon.

"The various versions of our epics show the dynamism of these women characters and how they have survived for thousands of years. While these women have mostly taken a backseat throughout our mythology, one cannot deny their significance in taking the story forward. These characters were ahead of their times and are the ones that resonate the most with women even today. However, to know our mythology in the best possible way, one must go back to the originals," Kane said.

The author shared how she had felt discouraged and demoralised when she started writing *Sita's Sister,* as there was not enough information on her central character. This made her turn to *Karna's Wife*. The

Esha Dutta

success of the book gave her the courage to return to *Sita's Sister*. Kane described Urmila as a woman of immense maturity, strength and fortitude. Her book unveils the silent exile that Urmila embraced, alongside Sita. The book also explores the forgotten sacrifices made by the smaller female characters in the *Ramayana*. Kane revealed that she has plans for a sequel.

Uruvi, in *Karna's Wife*, is a fictitious character created by Kane as she didn't want to tamper with the image of Rushali, Karna's first wife. Kane conceded that it was a huge risk for her debut book. "Uruvi personified Karna's conscience," she said. The darker shades of Karna are revealed through Uruvi. Kane said Uruvi was an extension of herself as she sought answers from the great epic.

With *Menaka's Choice*, Kane focussed on the tragic tales of *apsaras*. She believes that the interpretation of them as seductresses is a myopic translation that hides the real story. Kane reiterated that people tend to stereotype women as *devi* or devil and that she had been sceptical about writing this book as it would peel through the darker layers of the societal representation of love and lust in the mythological space and portray Menaka as real. She feared a backlash for her choice to unveil the beauty behind the art of seduction.

Lanka's Princess tells a simple story while exploring and unfolding the futility of revenge and antagonism. Surpanakha was an exhausting character to portray as Kane tried to give her the girl-next-door image with normal insecurities, emotions and complexities.

In *The Fisher Queen's Dynasty*, Kane explored Satyavati's cynicism that stemmed from her past experiences with men. However, the character never lets these insecurities cloud her thinking. According to Kane, Satyavati is the most politically motivated female character in the epic.

Her most recent book, *Ahalya's Awakening*, decodes how society judges a woman. Kane described how Valmiki's *Ramayana* was all about betrayal and relationships. She pointed out that what was right and wrong was nuanced and often got distorted by patriarchy.

As the protagonists in her books are not mainstream characters and not much information was available on them, Kane had to build them from their presence in the lives of the main protagonists in the epics. She said that she drew a lot from folklore in order to humanise the characters. The author felt that fictional translations of mythology tempted one to visit the originals.

"Kavita's works have always embraced womanhood and are an absolute inspiration to everyone. They have helped us appreciate our mythology better," Gautam concluded.

> It was wonderful! The team was efficient and the talk with Swati was truly engaging. Thank you.
>
> — **Kavita Kane**

An Author's Afternoon is presented by Shree Cement Ltd in association with Taj Bengal, Kolkata

Rediscovery of Ravan and Strength of Sita

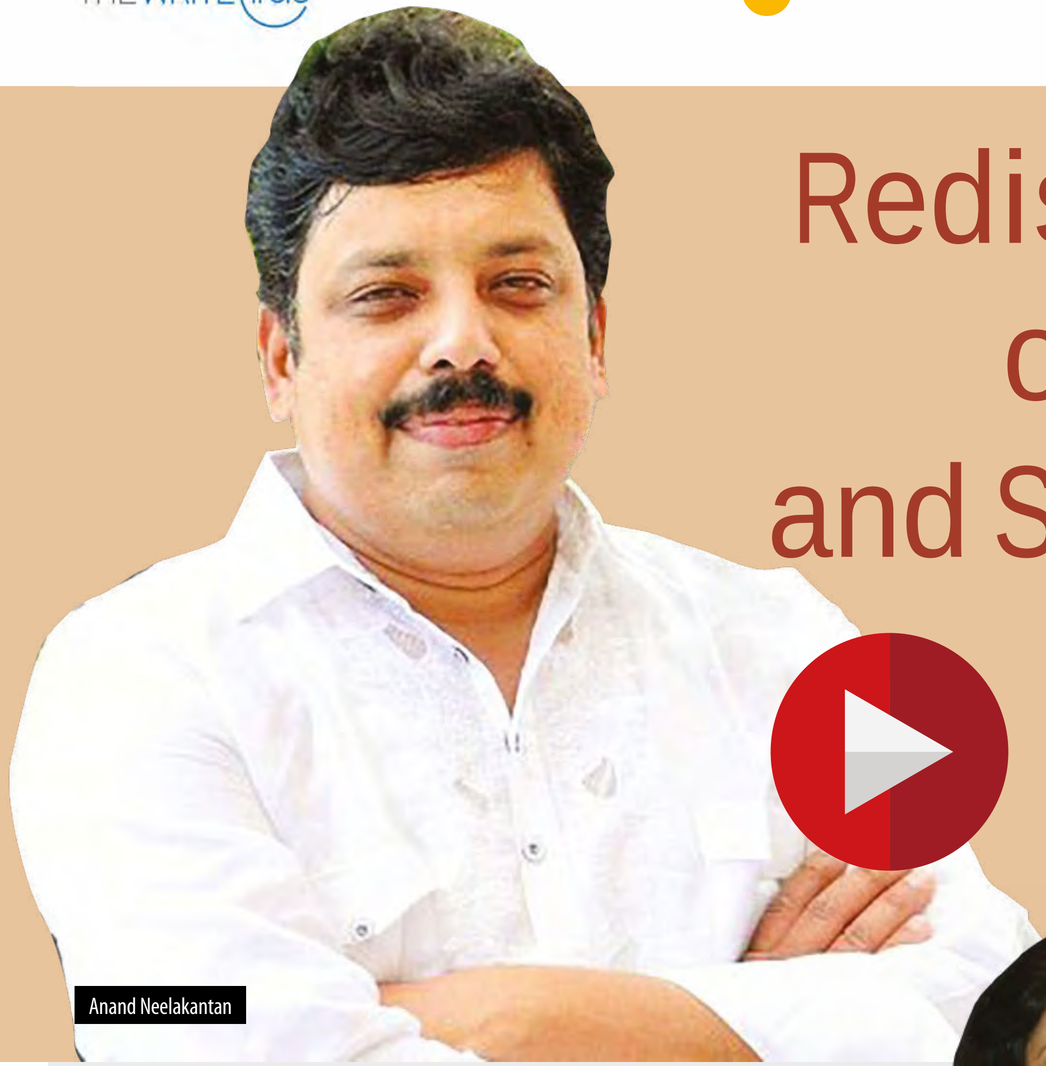

Anand Neelakantan

Anvita Pradhan

Sita was a stronger woman than Draupadi and Ravan was more enigmatic than Ram. So believes Anand Neelakantan, the author of the *Sivagami* series and *Bahubali* prequels.

The bestselling author was addressing a virtual audience of 70 from Patna and Ranchi for **The Write Circle** with **Ehsaas** Woman of Patna, Anvita Pradhan.

Neelakantan's choice of Ravan as the protagonist of his first novel had been deliberate, he revealed. Ravan may be a much-hated figure in north India, but he is seen as a hero down south. Tulsidas's *Ramayan* was written during the Mughal era and he depicted Ravan as a villain because of political reasons, Neelakantan explained. Ravan is an enigmatic character and in places where there was no Islamic rule, he was celebrated as a Shiv *bhakt* and seen as an antagonist rather than a villain.

> It was a very engaging session and I enjoyed it.
>
> **—Anand Neelakantan**

Ramayan, the author said, is a tale of *karma* and not a story based on the Western concept of good and evil. "There is no absolute morality and what religion has done is hijacked morality," Neelakantan said. Religion,

Neelakantan showed a preference for speaking about lesser-discussed strands of the epics. This was perhaps what made the talk captivating. His energy and passion were so evident in his answers and Anvita made the conversation even more thought-provoking by asking the questions that most of us deliberate and few of us are able to put into words. What a wonderful experience it was.

— Smita Choudhary

Great programme!

— Dr Santosh Mishra

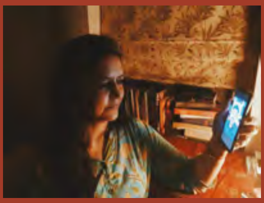

It was a pleasure to meet Anand Neelakantan. The author's progressive approach towards the diversity of mythological narratives was impressive. The comparison of Sita and Draupadi was interesting. I certainly look forward to his characterisation of female mythological protagonists. Deep gratitude to **Prabha Khaitan Foundation** for making this dialogue possible.

— Nishi Singh

It was an impressive talk. Got some fresh insight into our mythology. Neelakantan's views are very distinct and contradictory to the general interpretation of the great epics. This session truly proved to be fruitful for me.

— Praveen Budhia

It was an insightful and enriching session with Anand Neelakantan. His perspective and views are unconventional. The way he finds Sita to be more powerful, more resilient and more opinionated than Draupadi was really an eye-opener. I thoroughly enjoyed the session and am deeply intrigued by his writings.

— Anushka Budhia

It was a well-timed session with interesting and properly researched questions. Anand Neelakantan's views on religion and morality were quite intriguing.

— Aarohi Soren

It was an interesting session. I got to know about the significance of the shades of grey in a character. The transparency in the characters of Ravan, Ram and Sita was explained in detail.

— Vandana Kumari

according to him, is not morality, but morality should be religion and religion appropriates morality.

Drawing examples from Indian mythology, Neelakantan said that without religion, the acts of some gods would be considered immoral, but the moment religion is added to the story, it is considered to be *leela*. He said that Krishna and Shiva were enigmatic gods and beyond the concept of *maryada*.

Sita, for Neelakantan, is a stronger woman than Draupadi. The author finds the character of Draupadi fascinating but doesn't understand why she became an icon of the feminist movement. Draupadi's wrath only achieved war, tears and blood, whereas Sita's determination and rebellion were very positive, he said. Sita was a woman of choice, whereas the only choice that Draupadi made was to not tie her hair — an act Neelakantan considers more theatrics than choice.

Neelakantan revealed that reams and reams of literature have been lost in time. There were epics far bigger and longer than the *Mahabharata*. Speaking about Sanskrit, believed to be the oldest language, the author pointed out that the word 'sanskrit' itself means 'refined'.

When asked how he managed to switch between narratives, Neelakantan said though writing a screenplay was largely technical, it was ultimately storytelling.

The Write Circle Patna is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Hotel Chanakya and Navras School of Performing Arts*

The Write Circle Ranchi is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Navras School of Performing Arts and Ehsaas Women of Ranchi*

A Voice for Villains and Women

Every place in India has a myth and a different set of beliefs, and author Anand Neelakantan enjoys exploring these through his books.

The author of *Asura* shared his literary journey in a virtual session of **The Write Circle** with **Ehsaas** woman of Bhubaneswar, Nidhi Garg, organised by **Prabha Khaitan Foundation**.

When Neelakantan started writing stories based on mythology and *Puranas*, it wasn't a very popular space in India. He pointed out that many great writers and poets had written about Lord Ram but he chose to write about Ravan because nobody had written about him.

Neelakantan revealed that every village in India had some legend related to the characters of the *Ramayan* and *Mahabharat* even though they may not have ever visited the place. Every place in India has a localised myth and a different set of beliefs, too. This creates a huge corpus of literature.

A desire to write about people without a voice led Neelakantan from "villains" to women. The women characters In *Ramayan* and *Mahabharat* are mostly stereotypical and that tradition continues in TV shows based on the epic, the author said. He believes there is a need to look at things from another perspective.

The author shared that he writes around 1,500-2,000 words a day and can come up with the first draft of a novel of 1,00,000 words in 70-80 days.

All Neelakantan's characters are inspired by real people and have a message to convey.

Talking about his book *The Rise of Sivagami* — a prequel to the film, *Bahubali: The Beginning* — and its title character, Neelakantan said he had modelled her after many different historical characters. He is fascinated by the lives of women who rise in a man's world. The author said he felt that society is still largely patriarchal and when a woman comes up, her struggles are huge.

The Write Circle Bhubaneswar is presented by Shree Cement Ltd, in association with Mayfair Hotels & Resorts and Ehsaas Women of Bhubaneswar

बदलाव ही जीवन का हिस्साः कलम नागपुर में दीप्ति मिश्रा

Parveen Tuli

Dipti Misra

प्रभा **खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** नागपुर में कवयित्री, शायरा दीप्ति मिश्रा ने की शिरकत। फाउंडेशन का परिचय देते हुए परवीन तुली ने उनसे बातचीत की। लखीमपुर में मिश्रा का जन्म हुआ। उन्होंने आकाशवाणी व दूरदर्शन के लिए काम किया। कई टीवी धारावाहिकों में नजर आईं और गीत भी लिखे। शायर के रूप में उर्दू जगत ने भी उन्हें सराहा। तुली ने मिश्रा की लेखकीय यात्रा के बारे में जानना चाहा। मिश्रा ने बताया कि जब मैं नर्सरी में थी, पढ़ना नहीं आता था, तब कॉमिक्स की किताबों में चित्र देखती थी। जब कॉमिक्स के एक-एक अक्षर जोड़ कर पहली बार पढ़ा, तो उस खुशी का बयान करना मुश्किल है। लिखने से पहले पढ़ना होता है। हर किसी के पास अपने को व्यक्त करने के लिए शब्द होते है। सभी के पास अपनी भाषा होती है, पर उसे कोई रूप देना, किसी व्याकरण के साथ बांधकर किसी धारा के साथ बांध देना, यह पढ़ने के साथ ही आता है। पहले हम सीखते हैं, फिर लिखते हैं।

मिश्रा ने कहा, "मुझे पता नहीं था कि लेखक बनूंगी। मैं कोटेशन नोट कर लेती थी। मुझ पर किसी का इन्फ़्लुएंस नहीं था। मैं अपने को व्यक्त करना चाहती थी। डायरी लिखने से समझ में आया कि जो बात हमें किसी से नहीं कहनी वह डायरी में दर्ज कर सकते हैं। क़ाफ़िए बिठाना, तुकबंदी करना मुझे आ गया था। मुझे बात कहनी थी, तो मैंने समझा कविता में कहेंगे तो मैं कह भी लूंगी और लोग समझ भी नहीं पाएंगे। पर यह पहले की बात है। साहित्य में रुचि थी। मेरी मां और पिता से यह मुझ तक आया। साहित्य की पढ़ाई से यह तो होना है। ज़िंदगी के अलग-अलग रंग हैं। मुझे नहीं पता कि मैं लेखक और कवि हूं भी कि नहीं। मैं अब भी मानती हूं कि मैं बस अपने को अभिव्यक्त करती हूं।" मिश्रा ने दीप्ति पाण्डेय से दीप्ति मिश्रा की यात्रा में अपने बचपन और बनारस को याद किया। उन्होंने कहा, "मुझ पर कभी पाबंदी नहीं लगाई गई। प्रयोगवादी हम बचपन से ही थे। हमें वह माहौल मिला जिससे मैं बनी।" शादी के बाद के अपने जीवन अनुभव को व्यक्त करते हुए मिश्रा ने कहा, "शादी के दस साल बाद तक मैंने अपनी गृहस्थी की तरफ ध्यान दिया। फिर एक टर्निंग प्वाइंट आया कि अगर यह सपोर्ट सिस्टम खत्म हो जाए तो क्या होगा? उसके बाद समझ में आया कि कुछ करना है। जब मैं खुद को तलाश करना शुरू किया तो जीरो से शुरू किया। अपने को टटोला तो समझ आया कि मैं केवल एक्टिंग कर सकती हूं, या लिख सकती हूं।"

गुलाम अली द्वारा उनकी ग़ज़ल व गीतों को आवाज देने पर उनकी प्रतिक्रिया थी, "कोई कुछ लेता है तभी जब उसमें कुछ होता है। यहां कोई किसी की मदद नहीं करता। यह डिमांड एंड सप्लाई का मामला है। मैंने ग़ज़ल और लेखन को लेकर बहुत मेहनत की है, बहुत साधना की है।" उन्होंने बताया, "अशोक मिश्रा हमारी ग़ज़ल पर अलबम बनाना चाहते थे। फिर गुलाम अली ने उसमें गाया। बाद में तो कविता कृष्णमूर्ति और हरिहरन ने भी गाया।" मिश्रा ने यह स्वीकारा कि उन्हें फिल्मों में लिखने की कोई रुचि नहीं है। मिश्रा ने यह माना कि *बर्फ में पलती हुई आग* मेरी पहली किताब है। इसमें बहुत कच्चापन है। *है तो है*, थोड़ी परिपक्व है और *यहां वहां कहां* अलग है। मिश्रा ने यह कहा कि मैं सोच के लिख नहीं सकती। एक्टिंग और लेखन की अभिव्यक्ति में क्या फर्क है? के सवाल पर मिश्रा ने कहा, "एक्सप्रेशन ही मेरी ताकत है। फिल्म और लेखन में बहुत फर्क है। एक्टिंग में हम किसी करेक्टर में जाते हैं, जबकि लेखन प्योरेस्ट फार्म है। एक्टिंग तकनीक है कि एक्टिंग करो और एक्टिंग न लगे।" दर्शकों के अनुरोध पर उन्होंने अपनी बेहद चर्चित ग़ज़ल, *'वो नहीं मेरा मगर उससे मुहब्बत है तो है, ये अगर रस्मों, रिवाज़ों से बगावत है तो है...'* सुनाया।

रैपिड फायर राउंड के सवालों के जवाब में मिश्रा ने बताया कि अभी लिखना हो तो लॉकडाउन दिमाग में चल रहा है। सबसे पसंदीदा लेखक? पर उनका उत्तर था, "कोई संपूर्ण नहीं है। किसी में कुछ अच्छा है तो किसी में कुछ। शायरों में निदा फाजली। कहानी में शिवानी। मुनीर निज़ामी, जॉन एलिया, दिनकर अच्छे लगते हैं। महादेवी वर्मा अच्छी नहीं लगती। रोते गाते लोग अच्छे नहीं लगते। निराला का ओज पसंद हैं। पंत, प्रसाद कम पसंद हैं।" आपके लेखन का पहला पाठक? पर उत्तर था, "फेसबुक।" किसी व्यक्ति या बात से परेशानी? पर उत्तर था, "लेखन ही मुझे परेशान व बेचैन करता है।" आपका लेखक मित्र या आलोचक? पर जवाब था, "वाहवाही करने वाले मित्र नहीं हो सकते। मित्र वह, जो चूक को निकाले।" आपके लेखन ने आपके व्यक्तित्व को कैसे बनाया है? का जवाब था, "मुझमें और लेखन में कोई फर्क नहीं है।" श्रोताओं के कई सवालों के उत्तर में मिश्रा ने कहा, "कोरोना काल में ऑनलाइन माध्यम है। हम जैसे हैं वैसे हैं यह करना सबसे कठिन है। चाहे लेखन हो, व्यवहार हो, मैं जैसी हूं, वैसी दिखती हूं।" लेखन पर किसी तरह के दबाव के सवाल पर मिश्रा ने यह माना कि बहुत सारे क्षण आए कि यह करना चाहिए या नहीं। पर मैं हर तरह के परिणाम के लिए तैयार थी। सही या गलत कौन तय करेगा। जीवन की इस यात्रा में ऐसे बहुत सारे मोड़ आए। पर चलने का हौसला होना चाहिए। रुकावट ही ताकत बनती है। *सारा का सारा खारापन हमने तुमसे ही पाया है* शेर से जुड़े सवाल पर मिश्रा का जवाब था, "जब नदी समुद्र में मिलती है तो वह क्या है? बदलाव जीवन का हिस्सा है। यह कामयाबी, नाकामयाबी से जुड़ा नहीं है। बचपन में हम कितने निश्च्छल थे। आज क्या हैं?" इसी तरह एक दूसरे सवाल पर उनका उत्तर था, "नारी विमर्श शब्द मुझे समझ नहीं आता। पुरुष विमर्श क्यों नहीं, मनुष्य विमर्श क्यों नहीं। नारी की समस्या के लिए पुरुष विमर्श हो जाए तो नारी की समस्यायें खत्म हो जाएंगी।"

Priyanka Kothari

Monica Bhagwagar

Jyoti Kapoor

कलम के इस सत्र में सत्येंद्र प्रसाद सिंह, बेदुला रमालक्ष्मी, सीमा सिंह, नीलिमा, पूनम मिश्रा आदि श्रोताओं ने सवाल पूछे। प्रियंका कोठारी ने धन्यवाद दिया। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** नागपुर के प्रायोजक श्री सीमेंट थे। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर रेडिशन ब्लू और मीडिया पार्टनर *लोकमत टाइम्स* था। **अहसास** वूमेन नागपुर की ओर से ज्योति कपूर और मोनिका भगवागर ने सक्रिय भूमिका निभाई।

Kalam Nagpur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Lokmat, *Radisson Blu Nagpur and Ehsaas Women of Nagpur*

Rhythm of Life

Pt. Birju Maharaj

One describes him as a perfectionist, the other calls him open and warm-hearted. A favourite disciple and a granddaughter caught up with Kathak maestro Pandit Birju Maharaj for a chat on dance, life and more.

"Dance is beyond gender and age," the danseuse said at a virtual session of **Ek Mulakat Vishesh**, presented by **Prabha Khaitan Foundation** as he took the audience on an enthralling journey through his life, art and work.

Not only Kathak, Birju Maharaj is also renowned as an accomplished vocalist, percussionist, musician, poet, composer, choreographer and painter. He has received several awards — a National Film Award, the Kalidas Samman Yash Bharati and Andhra Ratna to name a few. He was also the youngest recipient of the Padma Vibhushan for dance in 1986.

Shinjini Kulkarni

Vidushi Saswati Sen

Pandit*ji*'s father, Acchan Maharaj, was a Kathak exponent and the young boy started performing with his father at an

early age. Birju Maharaj lost his father when he was nine but continued to train under his uncles and well-known dance masters, Shambhu Maharaj and Lacchu Maharaj. Birju Maharaj himself started teaching at 13 and received the coveted Sangeet Natak Akademi Award when he was just 28.

The other speaker at the session was one of Birju Maharaj's most gifted students, Vidushi Saswati Sen. Sen stands out among her contemporaries for her versatility and the way she has embellished Kathak by integrating the sacredness of tradition with the creativity of a contemporary approach. Today, she is regarded as one of the best exponents of the famed Lucknow *gharana*.

Pandit Birju Maharaj and Sen were in conversation with Shinjini Kulkarni, granddaughter and disciple of Birju Maharaj. Kulkarni is a talented dancer who has performed in several prestigious festivals across India. She is also an **Ehsaas** Woman of Noida.

Birju Maharaj reminisced about events and episodes that have left a mark on his mind. He spoke of his lifelong love affair with Kathak. From *thumris* to *tihaai* to *bol* — the maestro held the audience in thrall with his anecdotes about his choreographies and performances. Sen, too, recounted stories about her guru and their 50-year-old association. Kulkarni shared fond memories of her grandfather from her childhood.

Speaking on his connection with Lucknow, where he was born, Birju Maharaj said, "I still pray that I get to go to Lucknow and work with the people there. Everything about Lucknow is engraved in my brain like an image."

The maestro believes in discussing his ideas with his closest confidantes because the exchange of ideas is important. "There is no age limit to when one can start learning if you have the art in yourself. It is not a profession dominated by either men or women, dance is about honing your art and surrendering yourself to your guru," he said, adding that new ideas were always welcome.

"There is no age limit to when one can start learning if you have the art in yourself. It is not a profession dominated by either men or women, dance is about honing your art and surrendering yourself to your guru"

Sen said Birju Maharaj was a perfectionist and expected perfection from his students. "He always gives his students creative liberty and encourages their strengths. He lets them hone their talent. Maharaj*ji* never discourages anyone from doing anything out of the box. There are so many things that he has introduced to Kathak."

"My grandfather makes everyone feel so comfortable that it is almost impossible to have a formal conversation with him. He has been representing Indian classical dance in different countries from the time when not many Indian artistes performed abroad. I would like to thank **Prabha Khaitan Foundation** for allowing me to have such a splendid conversation with my grandfather," Kulkarni said.

The Foundation is devoted to the promotion of performing arts, culture and literature, and collaborates with caregivers, committed individuals and like-minded institutions to implement cultural, educational, literary and social welfare projects in India. **Ek Mulakat** provides a platform for eminent personalities from the various segments of society to share their stories.

Seema Singh

Veena Singh

This session was presented by Shree Cement Ltd, in association with SWAR

नवजागरण को नई दृष्टि से समझना होगाः किताब में अनंत विजय की पुस्तक *मार्क्सवाद का अर्धसत्य* का विमोचन

Anant Vijay

Bhupender Yadav

कला, संस्कृति और साहित्य के क्षेत्र में कई तरह की गतिविधियों से जुड़े **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की इस अनूठी पहल का नाम है **किताब**। छपे शब्दों को लेकर फाउंडेशन का जुड़ाव इसमें झलकता है, और इस कार्यक्रम में किसी खास लेखक की कृति का विमोचन और उस पर बात होती है। इसी **किताब** कार्यक्रम में इस बार बारी थी अनंत विजय की पुस्तक *मार्क्सवाद का अर्धसत्य* के लोकार्पण की। विजय *दैनिक जागरण* के सहयोगी संपादक हैं। कला, संस्कृति और साहित्य से जुड़े ज्वलंत विषयों पर स्तंभ लिखते हैं। अब तक उनकी दस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें *प्रसंगवश*, *कोलाहल कलह में*, *मेरे पात्र*, *विधाओं का विन्यास*, *लोकतंत्र की कसौटी* आदि शामिल हैं। **किताब** के इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद भूपेंद्र यादव उपस्थित रहे। यादव वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और कई संसदीय समितियों के सदस्य हैं। सियासी और सामाजिक विषयों पर उनकी गंभीर पकड़ है। **अहसास** वूमेन कोलकाता की मलिका वर्मा ने सभी का स्वागत करते हुए यादव से पुस्तक का विमोचन करने और अपने विचार व्यक्त

Malika Varma

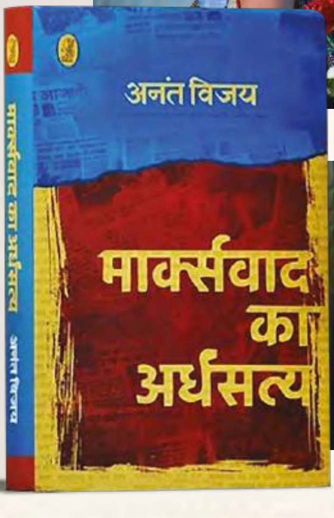

Bishambhar Newar

करने का अनुरोध किया।

मार्क्सवाद का अर्धसत्य का विमोचन करते हुए यादव ने कहा, "कुछ विषयों पर इसलिए भी लिखा जाता है कि उन्हें पढ़कर हम सत्य का साक्षात्कार कर सकें। *मार्क्सवाद का अर्धसत्य* यही काम करती है। यह विडंबना ही है कि जो लोग अभिव्यक्ति की आजादी की दुहाई देते हैं, वे आपातकाल को अनुशासन पर्व बताते रहे। अनंत विजय ने इसी दोहरेपन को उजागर किया है और इस पुस्तक से यह सवाल उठाया है कि जो लोग अभिव्यक्ति की आजादी की बात करते हैं, कहीं वे इसकी आड़ में अभिव्यक्ति के माध्यम से आजादी तो नहीं चाहते?" इस देश की राष्ट्रीय एकता, सार्वभौमिकता, संविधान के संकल्प, आस्था, विश्वास की चर्चा करते हुए यादव ने इस पुस्तक की पंक्तियों का उल्लेख करते हुए सवाल किया, "आखिर क्या वजह है कि जिस देश में मार्क्सवाद है वहां चुनाव नहीं होते? वहां बौद्धिक प्रतिभाओं का गला घोंटा जाता है। वहां पुस्तक मेलों की आजादी नहीं है। वहां खाने-पीने, चलने-फिरने, पहनने-ओढ़ने, बोलने पर पाबंदी है।" उन्होंने कहा, "लोकतंत्र की विचारधारा फ्रांस की क्रांति से उपजे स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व से बनी है और भारत आज लोकतंत्र का एकलौता वाहक है।"

यादव ने कहा, "हमने स्वतंत्रता की मूल विचारधारा को हमेशा माना। हमारा वसुधैव कुटुंबकम का दर्शन लोकतंत्र के तीनों मूल्यों को समेटे है। समग्रता के साथ स्वीकार करने की हमारी सोच के चलते हमने अपने नायकों की कमजोरियों को कभी अस्वीकार नहीं किया।" यादव ने कहा, "मार्क्सवाद इसीलिए समाप्त हुआ क्योंकि वामपंथियों का दावा था कि द्वंद्व को समाप्त करने के लिए केवल उन्हीं के विचार कारगर हैं। पर मार्क्सवादियों का द्वंद्व रजस द्वंद्व है। गरीबी उनका साधन है, इसे दूर करना उनका साध्य नहीं है।" पुस्तक में शामिल उदारवादियों की कमजोरियों, वाचिकता, अवसरवादिता, सत्ता का आकर्षण का जिक्र करते हुए यादव का कहना था, "किताबें केवल आपको प्रेरणा देती हैं, असली साहित्य वह है जो अंतर्मन से निकला हो। मार्क्सवादी अनिश्वरवादी हैं, उससे गुरेज नहीं। भारतीय विचारधारा ने तो चार्वाक तक के दर्शन को स्थान दिया। भौतिकता और त्याग दोनों में से कोई भी किसी का विचार हो सकता है। पर मार्क्सवादी पाखंडवादी हैं। *मार्क्सवाद का अर्धसत्य* इसी तथ्य का भंडाफोड़ करती है।"

यादव के बाद इस चर्चा को आगे बढ़ाया बिशंभर नेवर ने। उन्होंने संवाद की शुरुआत अपनी इस जिज्ञासा से की कि जब मार्क्सवाद अस्ताचल की ओर है, तब आप द्वारा इस विषय का चुनाव कहीं इसलिए तो नहीं कि आपको यह लगता है कि यह विचारधारा फिर से लौट सकती है? विजय का जवाब था, "मेरा मानना है कि कोई विचारधारा कभी समाप्त नहीं होती। फिदेल कास्त्रो और शी जिनपिंग में कोई अंतर नहीं है। फ़ीनिक्स पक्षी की तरह यह विचारधारा भी खत्म नहीं होगी। इस पुस्तक को लिखने में मुझे बारह साल का समय लगा।" मार्क्सवादियों की सबसे बड़ी कमजोरी *'जो वे कहते हैं, उसे बिल्कुल नहीं करते'* का जिक्र करते हुए विजय ने गांधी जी और उनके बेटे हरिलाल का उदाहरण दिया और कहा, "मार्क्सवादी जिस सिद्धांत को प्रतिपादित करते हैं, स्वयं उसके विपरीत चलते हैं। वामपंथियों के लिए हर अवसर उनके परिवार का अवसर है। स्वार्थ ही उनकी विचारधारा है। मार्क्स की समानता की विचारधारा रोमांटिसिज्म था। मार्क्सवाद में प्रकृति का न होना उनकी अज्ञानता को दर्शाता है, और वे प्राकृतिक न्याय की बात करते हैं।" जयप्रकाश नारायण और संपूर्ण क्रांति से जुड़े एक सवाल के जवाब में विजय का कहना था, "अगर अवसर और स्वार्थ के चलते लोग इकट्ठा होंगे तो वे एकजुट नहीं रह सकते। मुझे आश्चर्य है कि जनता पार्टी की सरकार उतने दिन भी कैसे चल पाई।" विजय ने इस अवसर पर इंदिरा गांधी की दूरदर्शिता की सराहना भी की।

Vasundhara Mishra

गांधीवाद, मार्क्सवाद के कितना विपरीत है? इस सवाल पर विजय का जवाब था, "कायदे से तो गांधी किसी भी तरह के वाद के खिलाफ थे। उनके अनुयायियों ने उनकी बात नहीं मानी। पर उनकी स्वदेशी की विचारधारा, ग्राम पंचायत की बात कौन करता है? यह भाजपा करती है। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस से राष्ट्रवाद की अवधारणा को छीन लिया। जनता के दबाव में लोक कल्याणकारी फैसलों को स्वीकार करना हर सरकार की जिम्मेदारी है।" माओ और कास्त्रो से जुड़े एक सवाल पर विजय ने अपने लेख *फिडेल का फरेब* की चर्चा करते हुए कहा, "निजी स्वार्थ और क्रूरता के अलावा इस विचारधारा से जुड़े लोगों का कोई मकसद नहीं रहा। सत्ता के दम पर जनाकांक्षा को दबाना मार्क्सवाद का असली गुण है।" मार्क्सवादी शासन में राजनीतिक हत्याओं की चर्चा करते हुए विजय ने इन शासकों की क्रूरता पर विस्तार से बात की। उनका कहना था कि किस तरह प्रगतिशील लेखकों ने हिंदू नवजागरण आंदोलन को भाषा की लड़ाई बनाकर एक भाषा को दूसरी भाषा के विरोध में खड़ा कर दिया। वास्तव में बंगाल का नवजागरण आंदोलन हिंदू नवजागरण का भी अभियान था। पर यह कैसी प्रगतिशीलता है, जो अपने देश के खिलाफ है। विजय ने इस चर्चा के दौरान साहित्य की दुनिया में वाद के नाम पर चल रही अवसरवादिता के कई उदाहरण दिए। उनका कहना था कि निराला की बात करते हुए हम हिंदू धर्म पर लिखी बातों को हटा कैसे सकते हैं। पूंजीवाद के दौर में आदर्शवाद किसे मानें? इस सवाल के जवाब में विजय का कहना था, "आदर्श अब सुविधा के हिसाब से तय होते हैं।" उन्होंने भारतीय दृष्टि से भारतीय संस्कृति और साहित्य को समझने पर बल दिया।

इस कार्यक्रम में शामिल श्रोताओं में डॉ वसुंधरा मिश्रा, डॉ वीणा अग्रवाल, वेदुला रामलक्ष्मी, रावल पुष्प और डॉ विद्या जैन ने सवाल किया। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **किताब** कार्यक्रम के प्रायोजक श्री सीमेंट थे।

वामपंथ वहीं है, जहां दूसरे विचारों के लिए जगह नहीं है

कुछ विषय, कुछ लेख, कुछ कथाएं तथा कुछ किताबें सिर्फ इसलिए नहीं लिखी जातीं क्योंकि उनका उद्देश्य किसी को बेनकाब करना होता है। वे इसलिए भी लिखी जाती हैं कि उन्हें पढ़कर सत्य का करीब से परीक्षण किया जा सके अथवा सत्य-असत्य के भेद को समझा जा सके। पिछले दिनों मुझे पत्रकार अनंत विजय की लिखी एक किताब *मार्क्सवाद का अर्धसत्य* पढ़ने का अवसर मिला। कहा जाता है कि किताब के आवरण से उसके कथानक का अंदाजा नहीं लगाना चाहिए। *मार्क्सवाद का अर्धसत्य* शीर्षक पढ़कर किसी को लग सकता है कि यह किताब मार्क्सवाद की आलोचना में लिखी गयी है। किंतु मुझे ऐसा लगा कि यह किताब किसी की आलोचना से ज्यादा उसके वास्तविक चेहरे से साक्षात्कार कराती है। निस्संदेह मार्क्सवाद की विचारधारा अपने आप में अनेक विडंबनाओं से घिरी हुई है। इस विचारधारा के कथ्य और तथ्य के बीच सत्य की कसौटी पर भारी अंतर है।

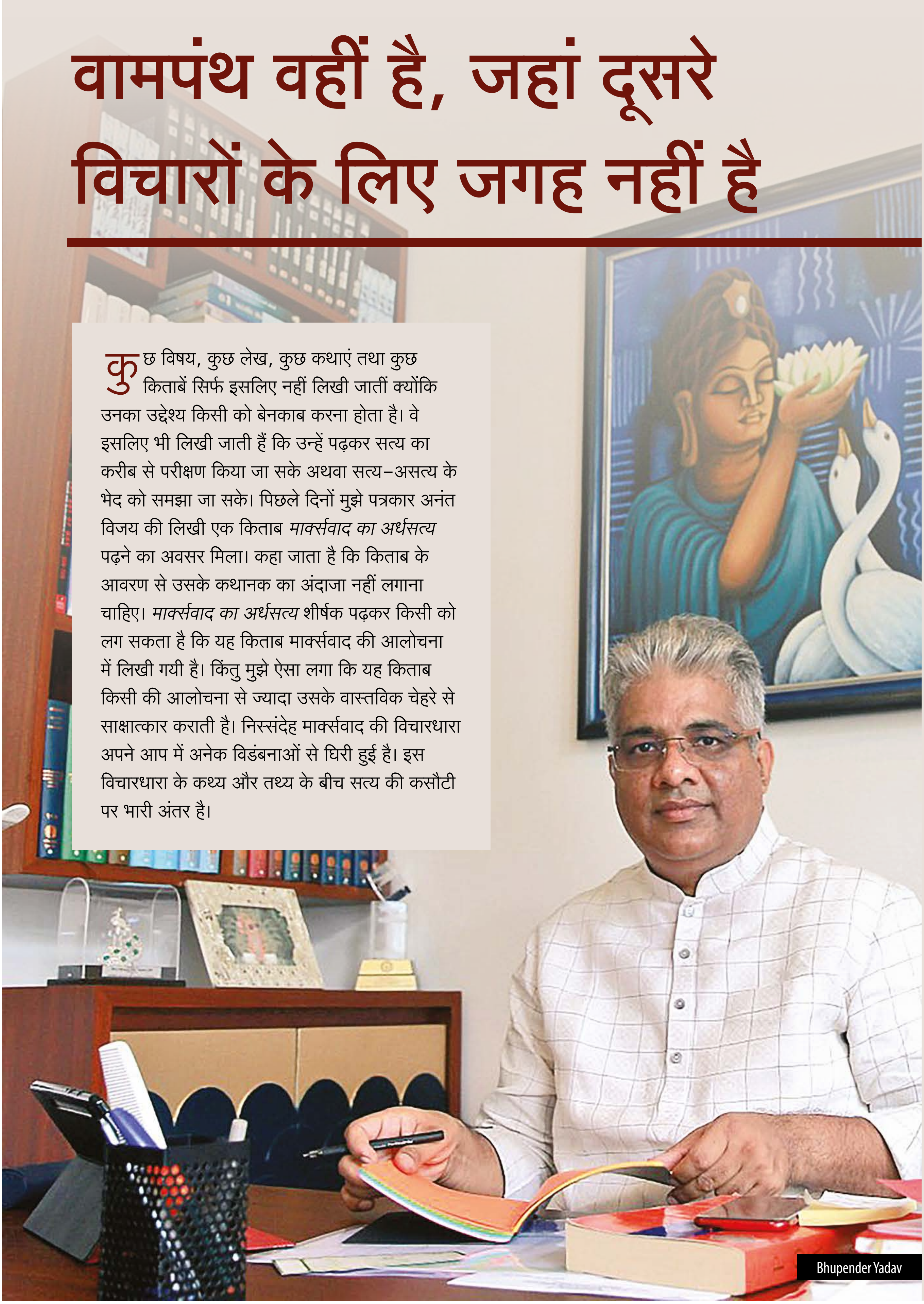

Bhupender Yadav

मार्क्सवाद का वैचारिक समर्थन करने वाले लोग हर छोटी-बड़ी बहस में 'अभिव्यक्ति की आजादी' का झंडा बुलंद करने के अभ्यस्त रहे हैं। किंतु यह विडंबना नहीं तो क्या है कि वे कई ऐसे मौकों पर मौन साध लेते हैं जब सच में 'अभिव्यक्ति की आजादी' के प्रश्न समाज के लिए जरुरी होते हैं। मार्क्सवाद के अर्धसत्य में यह प्रश्न खड़ा होता है 'अभिव्यक्ति की आजादी' की बात करने वाले मार्क्सवादियों को कहीं 'अभिव्यक्ति के माध्यम से आजादी' तो नहीं चाहिए?

यह प्रश्न इसलिए भी है, क्योंकि भारत के मूल दर्शन में सहमत-असहमत सबको स्वीकारने की परंपरा है। यहाँ ईश्वरवादी भी उतने ही स्वीकार्य रहे हैं, जितने अनीश्वरवादी। चार्वाक इसके बड़े उदाहरण हैं। लेकिन उन देशों का सत्य क्या है जहां मार्क्सवादी विचारधारा का सत्ता में एकमेव वर्चस्व है? जहां मार्क्सवाद सत्ता में है, वहां लोकतंत्र और चुनाव नहीं है। जहां मार्क्सवाद का राजनीतिक वर्चस्व है, वहां सत्ता को जनमत के दबाव की चुनौती नहीं है। कहना गलत नहीं होगा कि मार्क्सवाद वहीं है, जहां दूसरे के लिए जगह नहीं है। *'एको अहं द्वितीयो नास्ति'*- अर्थात जहां हम हैं वहां दूसरा कोई नहीं हो।

पुस्तक को पढ़ते हुए मुझे एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ मिला जिसमें लेखक कहते हैं, 'समानता के अधिकार को हासिल करने के लिए व्यक्तिगत आजादी को सूली पर टांग दिया जाता है।' यह संदर्भ इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे मार्क्सवाद के सिद्धांतों के आदर्शलोक और समाज जीवन की व्यावहारिकता के बीच की खाई को समझने में मार्क्सवाद की दृष्टि असफल नजर आती है। दुनिया के तमाम देश जहां मार्क्सवाद सत्ता के वर्चस्व में रहा है, वहां वैयक्तिक आजादी के हनन का एक विद्रूप इतिहास हम सबने देखा और पढ़ा है। यह मार्क्सवाद की आलोचना नहीं बल्कि उसकी वैचारिक दृष्टि का कटु सत्य है। असहमति के स्वरों पर प्रतिबन्ध से आगे बढ़कर उनका क्रूरता से दमन तक का इतिहास उन देशों में मिलता है। चयन के विकल्प, असहमति पर चर्चा, पुस्तकों का निर्बाध प्रकाशन, मीडिया की स्वतंत्रता तथा संस्थानों की स्वायत्ता के विषय उन देशों में न के बराबर होते हैं। यह मार्क्सवाद का वह सत्य है, जिस पर मार्क्सवादी चर्चा करने से कतराते हैं।

सवाल है कि आखिर यह सब क्यों? इसका सीधा उत्तर है – 'राजसत्ता की प्राप्ति की अभिलाषा।' मार्क्सवादी विचारों में गरीब व मार्क्सवाद सत्ता प्राप्ति का साधन है। उनकी दृष्टि 'रजस' उन्मुख है, न कि कल्याणकारी। यही वजह है कि चालीस साल सत्ता में रहने के बावजूद वे बंगाल में गरीबी को समाप्त नहीं कर पाए। मार्क्सवादियों ने समानता पर जोर देते समय स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना को दरकिनार किया। जबकि इन तीनों के बीच संतुलन के साथ चलना मानव समाज के लिए जरूरी भी है और व्यावहारिक भी।

भारत में मार्क्सवाद की जनता के बीच स्वीकार्यता बरकरार न हो पाने की बड़ी वजह यही है कि उन्होंने 'समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और समतामूलक दृष्टि' के बीच संतुलन की अनदेखी की। भारत न तो इसे राजनीतिक रूप से स्वीकार कर सका और न ही समाज में ही इसकी स्वीकार्यता बन पाई। भारत की दृष्टि संतुलन और समन्वय की दृष्टि है।

भारत में मार्क्सवाद की जनता के बीच स्वीकार्यता बरकरार न हो पाने की बड़ी वजह यही है कि उन्होंने 'समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और समतामूलक दृष्टि' के बीच संतुलन की अनदेखी की

मार्क्सवाद की एक बुराई यह भी है कि उसने अपने नायकों की कमजोरियों को स्वीकार नहीं किया। इससे यह पता चलता है कि मार्क्सवादी अपने नायकों की कमजोरियों को बताने में असहज और असुविधा महसूस करते हैं। भारत की दृष्टि इससे इतर रही है। भारत के विद्वानों ने अपने नायकों की अच्छाइयों को भी स्वीकार किया है तथा बुराइयों को भी माना है। अर्थात सत्य से साक्षात्कार करने की शक्ति भारतीय विचारों को आयातित मार्क्सवाद से अलग तथा अधिक मजबूत बनाती है।

यही कारण है कि जब हमारे आसपास समाज में कुछ घटनाएँ घटित होती हैं, तो कई बार मार्क्सवादी विचारकों द्वारा उसमें से अर्धसत्य को निकालकर एक ख़ास वैचारिक आवरण ओढ़ाने का प्रयास किया जाता है। बेशक उसका सत्य से कोई लेना-देना न हो, किंतु ऐसा करना, कुछ ख़ास विचारधारा वाले बुद्धिजीवियों के अभ्यास में शामिल हो चुका है। इससे वे सत्य को छिपाने का प्रयास करते हैं। भारत के मार्क्सवादियों में यह बुराई अधिक है। इसका नुकसान उन्हें यह होता है कि क्षणिक वातावरण में तो वे स्वयं को विजयी महसूस कर लेते हैं, किंतु सत्य सामने आते ही उनका खोखलापन उजागर हो जाता है। यही कारण है कि देश में लंबे समय तक कोई मार्क्सवादी आन्दोलन न तो टिका है और न ही जनता के बीच स्वीकार किया गया है।

कई बार लगता है कि भारत में मार्क्सवाद का ठहराव इसलिए भी हुआ है क्योंकि वे द्वंद्व की भावना से निकल ही नहीं पाए। इस द्वंद्व ने उन्हें उनके सीमित दायरे में बांधे रखा है, जिसकी जकड़न को तोड़ने का प्रयास मार्क्सवादियों ने कभी किया नहीं है।

— भूपेंद्र यादव

लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और राज्यसभा सांसद हैं जो हमारे किताब कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भी रह चुके हैं

Magical World in Colours

GROUP A: 7 to 9 years

Vinnie Kakkar

1st Prize: Saanvi Agarwal

2nd Prize: Kaavyata Garbiyal

Accio paper!
Accio colours!

The magic of the Boy Who Lived was brought to life on paper by hundreds of Harry Potter fans to celebrate the boy wizard's 40th birthday. Education For All, in association with Oxford Bookstore and Spagia — an initiative of Shyam Group, hosted "Picture of Potterverse" — a drawing competition for children between 7 to 12 years, as a part of The Wands and Charms Festival in July.

The theme of the competition was 'Imagining Potterverse 40 years later' and invited applicants to paint with pencil, crayons, watercolour or oil paint their vision of the world of Harry Potter.

The competition was judged in two groups — Group A (7-9 years) and Group B (10-12 years). Vinnie Kakkar, National Advisor of **Prabha Khaitan Foundation**, was the judge. The winners of the first, second and third positions in each group were announced on August 3. All the applicants were given e-certificates for participation.

3rd Prize: Harnidh Kaur

GROUP B : 10 to 12 years

1st Prize: Jeet Dave Sahoo

2nd Prize: Poulami Guha

3rd Prize: Arhant Jain

Poonam Anand

राँची निवासी पूनम आनंद, एक सफल बिज़नेस वूमन और सोशल इंटरप्रेन्योर हैं। वह इन दोनों चुनौतियों को बेहद शानदार ढंग से निभाती हैं। झारखंड के किसी सुदूर नक्सल प्रभावित गाँव में महिलाओं के लिए स्वावलंबन का काम हो या फिर शहरी महिलाओं के लिए किसी स्पेशल बिज़नेस प्लान पर सरकार को कोई नीतिगत सुझाव देना, पूनम आनंद हमेशा फ्रंटलाइन पर नज़र आती हैं। 'लक्ष्यम' की चेयरपर्सन के तौर पर आनंद 100 से अधिक स्कूलों में अंडर प्रिविलेज्ड बच्चों के मानसिक विकास का कार्यक्रम चला रही हैं। इसी तरह दिल्ली–एनसीआर में स्लम में रहने वाली महिलाओं की आजीविका के इंतज़ाम को भी वह अपना दायित्व मानती हैं। पिछले 25 वर्षों से सामाजिक काम करते हुए हज़ारों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का इनका प्रयोग समाज के सामने एक रोल मॉडल है। अपनी सामाजिक सेवा और संकल्प के लिए वह गांधी सम्मान, झारखंड प्रोत्साहन अवॉर्ड, बेस्ट ह्यूमेनेटेरियन अवॉर्ड, अपराजिता सम्मान जैसे कई प्रतिष्ठित सम्मान से नवाजी जा चुकी हैं। सरोकार के साथ समाज सेवा को लक्ष्य मानने वाली पूनम आनंद कहती हैं, "अपने घर में रोशनी रखना तो हर कोई चाहता है, लेकिन जब हमारी कोशिश से दूसरे के घर रोशन हों तो असली ख़ुशी मिलती है।"

Seema Singh

रांची विश्वविद्यालय के बीएड विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सीमा सिंह ने ह्यूमन रिसोर्स में एमबीए किया है। झारखंड राज्य क्रिकेट एसोसिएशन की आजीवन सदस्य, एमएआई नामक एनजीओ की संस्थापक और **सेवा भारती** से जुड़ी '**वैभव श्री**' की समन्वयक सिंह ने ग्रामीण क्षेत्रों में वंचित बच्चों और माँ के बीच तब से काम करना शुरू कर दिया था, जब उन्हें पता भी नहीं था कि यह सामाजिक कार्य है। बस इस काम से उन्हें खुशी और संतुष्टि मिलती थी, और यही उनके लिए आज भी मायने रखता है।

वंचित बच्चों और माँ के सहयोग के लिए सिंह ने 'मदर' स असिस्टिंग इनोवेशन', एमएआई नामक एनजीओ शुरू किया। इसके माध्यम से कंप्यूटर प्रशिक्षण कक्षाएं, स्पोकन इंग्लिश, मसाला बनाने, सिलाई और दसवीं पास छात्रों के लिए व्यक्तित्व सुधार जैसे कई कोर्स संचालित होते हैं। यहां प्रशिक्षण पाने वालों कि छोटी दुकानों और छोटे होटलों में हाउसकीपिंग की भी नौकरी मिल जाती है। सिंह की रुचि बेघर बच्चों और अनाथालयों के लिए काम करना भी है।

अहसास वूमेन रांची से जुड़ने के बाद उनका वक्तव्य था, "**प्रभा खेतान फाउंडेशन** एक अद्विितीय और सुंदर मंच है। लॉकडाउन के दौर में हम **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के माध्यम से पूरे भारत से जुड़े हुए हैं। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** फिल्म, साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति के क्षेत्र में काम कर रहा है और इसकी एक विस्तृत श्रृंखला लोगों को एक प्रतिष्ठित मंच प्रदान कर रही है। इससे जुड़ना मेरे लिए गौरव की बात है।"

Power to the Power of the Youth

"Responsibility will mellow and sober the youth and prepare them, for the burden they must discharge."

— Mahatma Gandhi

Mahatma Gandhi's call for boycott of educational institutions prompted thousands of students to leave schools and colleges set up by the British. In 1905, when Lord Curzon, the then Viceroy of India, partitioned Bengal, protesting students came out in large numbers for the first time.

About one-third of the persons convicted for revolutionary activities between 1906 and 1918 were students. The Quit India Movement of 1942 involved students acting as links with underground leaders. Mass student rallies were held all over the country and every attempt was made to cripple the colonial government.

Young people have time and again been catalysts for social, political and cultural development. Spontaneous, vivacious and dynamic, young minds have the potential to usher in a better tomorrow and pave the way for a better future.

To celebrate "the role of young women and men as essential partners in change", the United Nations (UN) General Assembly designated August 12 as International Youth Day, approving the recommendation of the World Conference of Ministers Responsible for Youth, on December 17, 1999.

International Youth Day "gives an opportunity to celebrate and mainstream young people's voices, actions and initiatives, as well as their meaningful, universal and equitable engagement". It is also an attempt to raise awareness about the "challenges and problems facing the world's youth". The first International Youth Day was observed on August 12, 2000.

The UN defines "youth" as those persons between the age of 15 and 24 years. According to UN estimates, in 2019, there were about 1.2 billion people aged 15 to 24 globally. This number was projected to grow by 7 per cent

ARTWORK BY
SUDIPTA KUNDU

to 1.3 billion by 2030.

"We know that healthy, educated, productive and fully engaged young people can help break the cycle of intergenerational poverty and are more resilient in the face of individual and societal challenges," Babatunde Osotimehin, the former executive director of the UN Population Fund (UNFPA), had said.

Developing countries can see remarkable growth in the coming years, if young people's needs are taken care of.

Reality, however, paints a different picture. Economic restrictions, lack of resources and skill gaps still prevent hundreds of thousands of our best minds from reaching their full potential. Employment opportunities for young men and women are limited — especially for those living in backward areas of developing countries. Only when the youth of a country is properly empowered, can we look forward to the overall uplift of the nation. Youth policies and programmes can go a long way in identifying problem areas and adding value.

International Youth Day 2020 was observed in a podcast-style discussion, hosted by the youth for the youth, along with independently organised celebrations around the world.

The theme for the day was Youth Engagement for Global Action, which sought to "highlight the ways in which the engagement of young people at the local, national and global levels is enriching national and multilateral institutions and processes, as well as draw lessons on how their representation and engagement in formal institutional politics can be significantly enhanced".

The UN also launched a social media campaign, *#31DaysOfYouth*, to commemorate young people throughout the month of August, leading up to and following International Youth Day.

Swami Vivekananda had said, "A few heart-whole, sincere, and energetic men and women can do more in a year than a mob in a century." Today, as we recover from a global pandemic, **Prabha Khaitan Foundation** believes that the unrelenting power and spirit of youth can be the master of the world to create joy with innovation and change.

Rahat for People in COVID Times

"… If you go out and make some good things happen, you will fill the world with hope, you will fill yourself with hope."

— Barack Obama

Prabha Khaitan Foundation has collaborated with the World Wildlife Fund (WWF) and sworn to strive for the betterment of humanity, especially underprivileged communities, during the COVID-19 pandemic.

Rahat, the social welfare initiative of the Foundation, has reached out to more than 15,000 households and 2,000 individuals across five divisions.

Families reeling under the impact of the lockdown, including loss of livelihood and lack of access to essential resources and supplies, have benefitted from **Rahat**'s deeds.

> **Rahat**, the social welfare initiative spearheaded by **Prabha Khaitan Foundation**, in collaboration with the WWF, has reached out to people with food and hygiene supplies ranging from rice, soap, dal and biscuits to sanitisers, masks and sanitary pads

Rahat has reached out to people with food and hygiene supplies ranging from rice, soap, dal and biscuits to sanitisers, masks and sanitary pads. The reach of the project has been widespread — the Brahmaputra landscape, the Sunderbans landscape, the Central India landscape and the Nilgiri stretches of the Western Ghats.

The coverage has been meticulously inclusive, touching particularly sensitive demographic segments, spanning wildlife sanctuaries, forest divisions and anguished fishing communities. From the remotest reaches of the Sunderbans, to communities such as the Pardhis of Khupna Ghat in central India, **Rahat** has impacted everyone.

Hundred Days of Generosity

Pyaar ka jashn nayi tarah manana hoga, gham kisi dil mein sahi, gham ko mitana hoga.

— Kaifi Azmi, poet and founder of Mijwan Welfare Society

Actress Shabana Azmi remembered her father's words as she thanked all those who had worked tirelessly for COVID-19 relief and rehabilitation work. **Rahat**, the social welfare initiative spearheaded by **Prabha Khaitan Foundation**, collaborated with Mijwan Welfare Society (MWS) to aid underprivileged communities across Uttar Pradesh, Bihar, Delhi and Rajasthan and migrant labourers stranded during the pandemic.

Distributed masks to police officials

The 100 days from April 2 to July 12, 2020, have been a tireless battle for MWS and its supporters, as they strove to bring relief. The efforts bore fruit as the campaign managed to reach out to 1,25,000 people in 202 villages across 62 panchayats of 26 districts, distributing among the people 1,35,000kg of ration, over 45,000 three-layered masks manufactured by the MWS Sewing Centre and distributed 1,200-plus sanitary napkins and more than 7,500 hand washes, soaps and sanitisers.

The campaign managed to reach out to 1,25,000 people in 202 villages across 62 panchayats of 26 districts, distributing among the people 1,35,000kg of ration, over 45,000 three-layered masks manufactured by the MWS Sewing Centre and distributed 1,200-plus sanitary napkins and more than 7,500 hand washes, soaps and sanitisers

Supported 7,000 daily wager earners (women)

Team MWS, led by CEO Vinod Pandey, worked in collaboration with the National Disaster Relief Force, **Rahat** and other organisations.

9,000+ designer masks

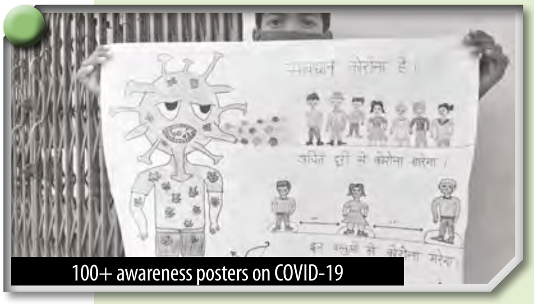

100+ awareness posters on COVID-19

45,000+ three-layered cloth masks distributed

1,35,000kg of dry ration distributed

Adishree Singh

Domestic Violence in the COVID-19 Epoch: The Silent Crisis

What is Domestic Violence?

For most individuals 'domestic violence' means "a violent act by one individual in a relationship to try and dominate or show power over the partner." To fine-tune this further, domestic violence is a violent act that may be mental or physical, carried out by one individual in an intimate relationship, to try and dominate the other, who may be a man or woman, for the purpose of gaining total control over the other. The two parties involved are the 'abused' and the 'abuser.'

Domestic violence can occur in any form of a relationship whether married, live-in, heterosexual, homosexual, etc. It can also occur in any demographic. A common misconception is that only females are victims of domestic abuse. Men are also subject to domestic abuse, but it is undeniable that the scales are tipped against the prior.

Some signs of Domestic Violence

- You feel helpless and afraid. The thought of accidentally angering your partner frightens you.
- Your self-esteem slowly begins to vanish, and you feel like you're incapable of doing anything right.
- You are criticised, abused and humiliated to such a degree that you isolate yourself because you feel like you're capable only of embarrassing yourself and consider yourself to be a flaw, the reason for your abuse.
- Your partner is violent and aggressive physically, verbally, or both. You often receive threats, abuse, and are physically harmed. 'Guilt trips' such as suicide or running away with your children while abandoning you are also given. Sexual relations against your will are also a sign of the same.
- Your partner is excessively controlling and controls every aspect of your life. You don't have much say in decisions that ideally should solely be yours. Unjustified restrictions are also put on your actions.

Common Misconceptions

If the incident is too small, it cannot possibly be domestic violence

In today's world, lots of our information and knowledge comes from pop culture depictions, where domestic violence cases are very intense and grand. This is untrue. Even a push or nudge that causes you to fall and hurt yourself or being aggressively grasped and having something thrown at you is a domestic violence offence. Nothing is trivial.

Since it's not physical anymore, just verbal, the worst is over

Verbal assault can be just as frightening or abusive as physical violence. Both need to be addressed to prevent damage. Economic abuse is another subtle form of abuse that is often overlooked. Using money to control the partner is often the modus operandi of an abuser.

Limited amount of abuse is acceptable

There is no 'better' or 'worse' form of abuse. All abuse is abuse, even if the incidents may have occurred once or twice or may be viewed as 'minor'. Studies indicate that if your spouse/partner has injured you once, it is likely that the person will continue to physically assault you.

Domestic Violence and Indian Law

Protection of Women against Domestic Violence Act 2005 prohibits a wide range of abuse against women —

physical, emotional, sexual and economical — and all these are extensively defined under the Act. The scope of the Act covers women who are in a live-in relationship and are not married.

Under Section 498A of the Indian Penal Code, harassment for dowry by the husband or his family is considered a crime. Under this section, forced sex with one's wife can be considered cruelty. It also covers any and all wilful conducts against a woman which drive the woman to commit suicide or grave injury or risk to life, limb or overall health, which includes both mental and physical health.

Domestic Violence and COVID-19

Soon after the COVID-19 lockdown began in India on March 25, news about an increase in domestic violence started trickling in. Domestic violence complaints were at a 10-year high during the first four phases of the COVID-19 lockdown. But even this unusual spurt is only the tip of the iceberg as 86 per cent women who experience domestic violence do not seek help in India. Additionally, 77 per cent of the victims do not even mention the incident(s) to anyone. In 2020, between March 25 and May 31, 1,477 complaints of domestic violence were made by women.

The West Bengal Commission for Women has also reported an alarming number of cases. The panel has received 162 cases of crimes against women, including 38 complaints of domestic violence, in this period. "We are afraid that domestic violence might have increased due to the fact that the victim and the abuser are sharing the same space and periphery. The victim also has no chance to escape in case she faces violent, abusive or toxic behaviour from the partner. We also speculate that during the lockdown there are situations where the victim could not use the phone to call the Commission with the presence of the abusive partner in close proximity," said the commission's chairperson, Leena Gangopadhyay.

A 28-year-old homemaker said, "My husband could not go to his office during the lockdown and was required to do a few household chores. Following this, he vented out all his frustration on me. The longer he stayed at home, the more he started beating me up."

This is not just happening in India. Across the world, countries including China, United States, United Kingdom, Brazil, Tunisia, France and Australia have reported cases of increased domestic violence and intimate partner violence. Women tend to face greater risks during emergencies. During times of economic hardship, there is an increase in violent, abusive, impulsive, compulsive, and controlling behaviour and aggression directed towards cohabiting partners and romantic partners. This has been widely studied since the time of the Great Depression, and seminal studies have evidence of the destructive effects of unemployment, lost income, and economic hardship on marital conflict, parenting quality, and child well-being.

The number of cases reported sadly, are most likely not proportional to the actual rise in domestic violence. People locked in with their abusers may not be able to access a mobile phone, nor have the space and time to call for help. The ability to isolate a person from family and friends, monitor their movements, and restrict access to financial resources, or medical care is heightened by a lockdown.

What can be done?

When governments start putting together plans to respond to crises such as COVID-19, addressing domestic violence must be prioritised. In India, the government seems to have overlooked the need to formally integrate domestic violence and mental health repercussions into the public health preparedness and emergency response plans against the pandemic.

We need an aggressive nationwide campaign to promote awareness about domestic violence, and highlight the various modes through which complaints can be filed. National news channels, radio channels, and social media platforms must be strategically used, similar to the campaigns advocating for physical distancing and hand washing to combat COVID-19.

Reaching out to individuals is of utmost importance. Citizens must be sensitised towards the increased risks of domestic violence, and bystanders and neighbours should be urged to intervene if they suspect abuse, using tactics such as the banging on the door or ringing the bell.

When people are unable to file complaints through messages, post, or calls, essential services such as hospitals, grocery stores, and medical stores must be urged to help people get necessary support and send their messages to the authorities if needed. In France and Spain, pharmacies are being trained to identify people facing abuse through codewords, like 'mask 19', which is used for people who cannot speak openly, to indicate that they are being abused and are seeking help.

It is a well-established fact that domestic violence hurts the victim's mental and physical health, their career and ambitions, and relationships with others. The cost of this is transferred to the children and the public as well. Domestic violence is a crisis that needs to be addressed immediately and the sooner, the better.

Adishree Singh

The author is a student at Symbiosis Law School Pune and an intern with PKF's associate organisation, The Bengal, under the Pronam Project

Consumption and Greed: The Fault In Our Design

Shazia Ilmi

The COVID-19 pandemic looms large. But how close are we to making the magic vaccine? Does this virus justify the paranoia? Nature is a great experimenter, known to discard species that cannot adapt to its environs and contribute to the "Whole". I believe that as humans, we have not evolved enough to realise that we can only survive if we harmonise our species' way of living with life in totality.

Amid the ceaseless pillaging of our planet, is this nature's way of saying "enough is enough!"?

Anthropocentrism, that pervades human thought and obsession, is the philosophy that homo sapiens are the supreme owners of the planet — the sole commanders of its fate. This human supremacist perspective condones the barbarity of the human race towards every other sentient or non-sentient species, and justifies all wrongs against the planet in the name of 'development'.

In 1973, the famous scientist Carl Sagan viewed it as a form of "human chauvinism", excluding the possibility of extraterrestrial life. Sagan's contention was that humans are so restricted by their own narcissism, they find it difficult to

even conceive of other life forms with radically different biochemistries. Victor Stenger, a prominent astrophysicist, denounced "carbon chauvinism" — the premise that life necessarily requires carbon. According to him, it was "molecular chauvinism" to assume that molecules are required at all. In an ever-expanding universe, it would be terrible to claim knowledge of everything: it is this "higher intelligence" of the so-called "evolved human species" that seems to now threaten the ecological grid of human society.

The vices of greed and human consumption cannot, evidently, be reined in. And it is perhaps the predestined predicament of human design that works towards its own extinction. As self-indulgent consumers, many of us use, on a daily basis, products that we don't necessarily need, feeding into a global culture of competitive consumption that makes for unsustainable living habits.

From forest fires to global warming, rising sea levels to deforestation, loss of plant species to animal extinction — one ecological crisis after another that we battle are all linked with our desire to want more, own more, spend, consume and dispose more. All this is much more than the Earth can endure. This also renders impossible any positive shift in climate change, any fulfilment of the sustainable development goals and any move towards clean energy economies.

Our commercial greed ravages the biodiversity of the plant world, forcing hybrids and other seed varieties that deplete our soil, reduce water tables and crop cycles — besides creating dependence on chemicals, leading to monocultures in agriculture.

Our livestock is kept in pathetic conditions despite the knowledge that more than 60 per cent of infectious diseases are zoonotic by nature. Whether it is the Nipah virus in South Asia or the closely-related Hendra virus in Australia or the Lyme disease in the US, there are many examples of how plundering an ecosystem can cause disease and epidemics.

Our conversations at large have to change from "what to buy" to "wow to live without buying more". A big challenge of unbridled consumerism is its consequent waste creation and disposal. Urban India is the world's third-largest garbage generator and 10 million tonnes of garbage is spewed out in metropolitan cities like Delhi, Kolkata, Mumbai, Hyderabad, Chennai and Bengaluru.

> Anthropocentrism, that pervades human thought and obsession, is the philosophy that homo sapiens are the supreme owners of the planet — the sole commanders of its fate. This human supremacist perspective condones the barbarity of the human race towards every other sentient or non-sentient species, and justifies all wrongs against the planet in the name of 'development'

The world's consumption of materials has crossed 100 billion tonnes every year, but the proportion that is being recycled is gradually falling. The use of materials by the global economy has quadrupled, far faster than the population, which has doubled since 1970.

Our insane levels of greed have become the fault in our design, ominously inviting upon ourselves viral onslaughts and epidemics. Humanity's greatest obsessions — religion and science — have offered us a lot, but not enough to go beyond our mortal misgivings.

While religion has contributed to notions of "otherness" within the human race, science has created technology that can obliterate the human species itself. Perhaps it is time to invoke William Blake once more: 'To see a World in a Grain of Sand/ And a Heaven in a Wild Flower/ Hold Infinity in the palm of your hand/ And Eternity in an hour'.

Shazia Ilmi

Spokesperson of the BJP and **Ehsaas** Woman of Delhi

This article first appeared in the print edition of The Indian Express

A Voice for the Voiceless

Art soothes the troubled soul and so in times of distress and despair the world turns to artists for solace and hope. The COVID-19 pandemic, however, has brought about an unprecedented situation. The lockdowns and the rules of social distancing have affected everyone, from big business to small tea stalls, and the artistes — folk musicians, artisans and craftsmen — have been among the hardest hit. And it is the plight of these indigenous artistes that **Prabha Khaitan Foundation** has been trying to bring to highlight and heal.

Prabha Khaitan Foundation has always been dedicated to the overall development of the social, cultural, welfare and humanitarian aspects of Indian society. While everyone was battling the worldwide crisis posed by the COVID-19 pandemic in their own way, the Foundation's Managing Trustee, Sundeep Bhutoria, wrote a letter to Prime Minister Narendra Modi, with a copy to Prahlad Singh Patel, Minister of State for Culture and Tourism (IC), seeking urgent intervention to address the plight of the

Kolkata
April 13, 2020

The Honourable Prime Minister
Republic of India
Government of India
New Delhi

Respected Modi ji,

Sadar Pranam

I am writing to you at a time when all of us are battling an unprecedented crisis the world is facing. We all support you and have full faith in your leadership and wisdom. I thank you for the prompt action taken so far to fight the coronavirus pandemic.

I am sure your office has received numerous letters from different groups, organizations, industrial bodies, chambers, and lobbies with various requests to address their concerns, mostly from the business, industry, and tourism sectors.

As a Kolkata and Rajasthan-based individual associated with many national and international NGOs, I write on behalf of thousands of poor artisans, folk artistes and others who are engaged in various artistic and cultural activities, the people who eke out a living promoting Indian heritage. We work with several such performing artistes and writers while organising events in 30 cities in India and overseas on a non-commercial basis to provide them with a platform and humbly contribute to the sustenance and spread of Indian art, culture and heritage.

Even during normal times these poor unsung torch-bearers of India's rich culture legacy barely manage to make ends meet. In the face of this pandemic, thousands of such artisans, cultural workers, and craftsmen are enduring immense hardship. They do not even have a proper platform to articulate their grievances.

Several such artisans across the country were touched and inspired by your recent visit to the Hunar Haat at Rajpath, India Gate. These very artisans and their families are now in desperate need of Governmental support to sustain themselves and keep their traditional crafts and skills alive.

The crisis caused by the coronavirus outbreak threatens to wipe out vast swathes of India's cultural legacy and heritage built over thousands of years. The future -- indeed the present -- looks grim and cries out for urgent Governmental intervention.

In the past five years, many excellent Yojnas have been started by the Government of India for the poor. It is my humble request to kindly work out a survival package at the earliest for the impoverished artisans, craftsmen and cultural workers of India.

I assure you that we have already started in our own small way to raise resources to help some such artistes and artisans tide over this crisis. But even the slightest hand-holding from the Government at this critical time will give these anonymous heroes renewed hope to hold the flag of India's artistic and cultural heritage aloft.

I wish you the very best.

Regards,

Sundeep Bhutoria

1A Camac Court
25B Camac Street
Kolkata – 700 016

Phone : 91 33 2281 3939
Fax : 91 33 2280 2930
Email : bhutoria@hotmail.com, bhutoria@essbeeindia.com
Blog : sundeepbhutoria.blogspot.com
Twitter : @sundeepbhutoria

ess bee

Sundeep Bhutoria

Maneesh Tripathi

Prahlad Singh Patel

Shazia Ilmi

thousands of poor craftsmen and artistes earning their livelihood through the promotion of Indian art, culture and heritage.

Creating a voice for the voiceless, Bhutoria, a social activist working in the field of welfare, international cultural cooperation and the promotion of Indian arts, wrote on behalf of the several local artisans, folk artistes and others throughout the country, who are engaged in their traditional craft. These poor, unsung torch-bearers of India's rich cultural legacy barely manage to make ends meet, even in normal times. In the face of this pandemic, these innumerable struggling artisans, cultural workers, and craftsmen have been enduring immense hardship.

"As a Kolkata and Rajasthan-based individual associated with many national and international NGOs, I write on behalf of thousands of poor artisans, folk artistes and others who are engaged in various artistic and cultural activities, the people who eke out a living promoting Indian heritage. We work with several such performing artistes and writers while organising events in 30 cities in India and overseas on a non-commercial basis to provide them with a platform and humbly contribute to the sustenance and spread of Indian art, culture and heritage," Bhutoria wrote in the letter.

These artisans and their families are now in desperate need of governmental support to sustain them and keep their traditional crafts and skills alive. The crisis caused by the coronavirus outbreak threatens to wipe out vast swathes of India's cultural legacy and the heritage built by these tireless cultural ambassadors over thousands of years.

It was with great excitement and relief that Bhutoria received a response to his letter. Prahlad Singh Patel delivered a message of hope and an assurance that the government would take suitable measures to support these folk artistes and artisans facing incredible strife in the wake of the pandemic. The Government of India has already instructed the Regional Cultural Centres across the country to prepare a list of such artists so that they can provide them with all necessary assistance. The Ministry of Culture, Government of India, has also advised all its zonal offices to extend aid to artists who may not be registered with the Ministry but who are impoverished due to the pandemic.

"I wrote to the Honourable Prime Minister and Cultural Minister because I felt that the thousands of poor artisans, folk artistes and others, who are engaged in various artistic and cultural activities did not have a proper forum or lobby to articulate their grievances and problems. I am glad that the government has taken note and initiated steps to alleviate their hardship," explained Bhutoria.

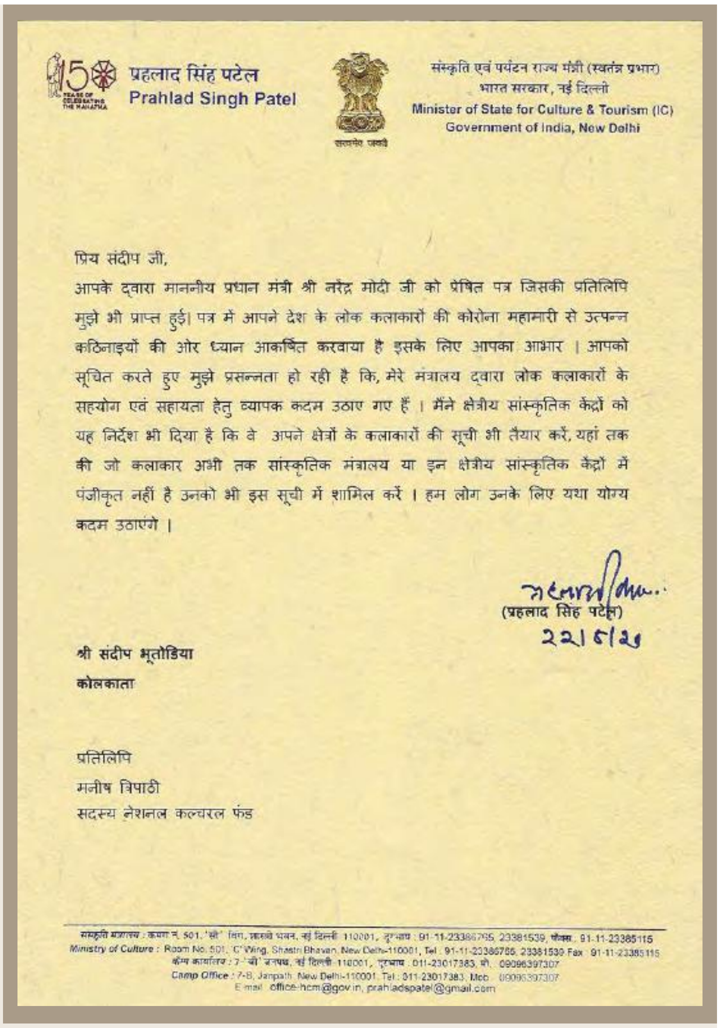

प्रहलाद सिंह पटेल
Prahlad Singh Patel

संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of State for Culture & Tourism (IC)
Government of India, New Delhi

प्रिय संदीप जी,

आपके द्वारा माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को प्रेषित पत्र जिसकी प्रतिलिपि मुझे भी प्राप्त हुई। पत्र में आपने देश के लोक कलाकारों की कोरोना महामारी से उत्पन्न कठिनाइयों की ओर ध्यान आकर्षित करवाया है इसके लिए आपका आभार । आपको सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि, मेरे मंत्रालय द्वारा लोक कलाकारों के सहयोग एवं सहायता हेतु व्यापक कदम उठाए गए हैं । मैंने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों को यह निर्देश भी दिया है कि वे अपने क्षेत्रों के कलाकारों की सूची भी तैयार करें, यहां तक की जो कलाकार अभी तक सांस्कृतिक मंत्रालय या इन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों में पंजीकृत नहीं है उनको भी इस सूची में शामिल करें । हम लोग उनके लिए यथा योग्य कदम उठाएंगे ।

(प्रहलाद सिंह पटेल)
२२।५।२१

श्री संदीप भूतोडिया
कोलकाता

प्रतिलिपि
मनीष त्रिपाठी
सदस्य नेशनल कल्चरल फंड

Ministry of Culture : Room No. 501, 'C' Wing, Shastri Bhavan, New Delhi-110001, Tel : 91-11-23386765, 23381539 Fax : 91-11-23385115
Camp Office : 7-B, Janpath, New Delhi-110001, Tel : 011-23017383, Mob : 09096397307
E-mail : office-hcm@gov.in, prahladspatel@gmail.com

He also wrote to the directors and the chairpersons of the Cultural Centres individually, promising assistance from **Prabha Khaitan Foundation** and its associates in any endeavour to alleviate the plight of the country's creative foot soldiers.

The Foundation extends its gratitude to Maneesh Tripathi, Member of the National Cultural Fund, and Shazia Ilmi, spokesperson for the Bharatiya Janata Party, for their enthusiastic support and dedication to the cause.

The Foundation has been doing its bit as well. It is in contact with numerous artists and craftsmen who are not listed with the zonal centres, and has undertaken many collaborations for the benefit of several needy artists.

In a humble attempt to provide a few of these artists with direct financial benefit during this critical time, the Foundation has started **Lockdown Live** — a series of online events in the states of West Bengal, Punjab, Bihar, Gujarat, Rajasthan, Uttar Pradesh and Chhatisgarh, where an artist performs "live" and the Foundation provides an honorarium in appreciation of their talent. There have been about 250 such sessions already. This initiative and these sessions will be covered in a special edition of the Newsletter.

IN OUR NEXT ISSUE

Guests	Events
Dipti Misra	Kalam New York
Hector Garcia	Tete-a-Tea
Anu Singh Choudhary	Kalam Bengaluru
Shakeel Jamali	Lafz Jodhpur
Mridula Ramesh	The Write Circle Jaipur
Nilanjana S Roy	An Author's Afternoon
Pavan K. Varma	The Write Circle Birmingham & Oxford
Arushi Nishank	Ek Mulakat Kolkata
Anand Neelakantan	Kitaab Book Launch
Asghar Wajahat	Kalam Lucknow
Neeraj Kumar	Kalam Chandigarh
Lord Bhikhu Parekh & Lady Mohini Kent Noon	Ek Mulakat
Chitra Mudgal	Kalam Amritsar & Jalandhar
Ashwini Kumar Pankaj	Aakhar Bihar
Kelly Dorji	The Universe Writes
Shovana Narayan	Ek Mulakat
Himanshu Bajpai	Kalam Bilaspur & Raipur
Hardeep Singh Puri	The Write Circle Special
Lakshmi Iyer	Education for All Kids Festival

Anand Neelakantan

Anu Singh Choudhary

Arushi Nishank

Asghar Wajahat

Ashwini Kumar Pankaj

Chitra Mudgal

Dipti Misra

Hardeep Singh Puri

Hector Garcia

Himanshu Bajpai

Kelly Dorji

Lady Mohini Kent Noon

Lakshmi Iyer

Lord Bhikhu Parekh

Mridula Ramesh

Neeraj Kumar

Nilanjana Roy

Pavan K. Varma

Shakeel Jamali

Shovana Narayan

REACH US AT

Address: 1A Camac Court, 25B Camac Street, Kolkata - 700 016, West Bengal, India

The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/newsletter

newsletter@pkfoundation.org *@FoundationPK* *@PrabhaKhaitanFoundation* *@prabhakhaitanfoundation*

For private circulation only